No. 1 2023 Stiftet 1988

SPEIL दर्पण

Pris 25 kr
अंक १ २०२३ स्थापित १६८८
Et flerkulturelt magasin på hindi og norsk
हिन्दी और नार्वेजीय भाषा का बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक

शुभकामनायें। Gratulerer.

रानी सोनिया और राजा हराल्ड पंचम।
Dronning Sonja og Kong Harald 5.

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू।
Draupdi Murmo, President of India.

नोबेल शान्ति पुरस्कार २०२२ के विजेता।
Representanter for fredsprisvinnerne for 2022.

२०२२ के लिए नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं के प्रतिनिधि अपने पदक और डिप्लोमा के साथ। एलेस बियालियाट्स्की, नतालिया पिंचुक, मेमोरियल, जिसका प्रतिनिधित्व जान राचिंस्की, सेंटर फॉर सिविल लिबर्टीज एवं ओलेक्सांद्रा मैटविचुक द्वारा किया गया था।
Representanter for fredsprisvinnerne for 2022 med sine medaljer og diplomer. Ales Bialiatski, representert av Natallia Pinchuk, Memorial, representert av Jan Rachinsky og Center for Civil Liberties, representert av Oleksandra Matviichuk.
Foto: Jo Straube

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

इण्डिया हाउस ओस्लो में भारतीय राजदूत महामहिम डॉ. बी. बाला भास्कर को स्पाइल भेंट करते सम्पादक सुरेश चन्द्र शुक्ल।
Den indiske ambassadør Dr. B. Bala Bhasker mottar Speil av redaktør Suresh Chandra Shukla på India House i Oslo.

नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के जन्मदिन ११ जनवरी २०२३ पर सुरेशचन्द्र शुक्ल ने पुष्प गुच्छ भेंट किया श्रीराम सेण्टर दिल्ली में।
Redaktør av Speil Suresh Chandra Shukla gratulerer Nobe fredsprisvinner Kailash Satyarthi på hans 69. bursdag i New Delhi.

नार्विजन ट्रांसलेटर एवं लेखक यूनियन की क्रिसमस मीटिंग में।
På Julemøte arrangert av Norsk Forfattersentrum.

साहित्य अकादमी, दिल्ली में। तस्वीर में बायें से कुमार अनुपम, जया वर्मा, अनीता कपूर, श्रीमती भार्गव, सुरेशचन्द्र शुक्ल। और अनूप भार्गव। På møte er de indiske forfattere som bor utenfor India arrangert av Sahitya Akademi i India.

Foto : Speil

Speil दर्पण

Speil er et flerkulturelt magasin på norsk og hindi. Vi presenterer viktige nyheter både fra India og Norge for våre lesere.

Formålet vårt er å øke forståelse og kontakt mellom mennesker og kulturer.

Speil er et talerør for kulturarbeidere i Norge, uansett etnisk bakgrunn. Vi ønsker alle velkommen til å skrive i Speil-दर्पण. Har du noe å bidra med, spørsmål, ideer eller lignende? Ta kontakt med oss på speil.nett@gmail.com

Støtteabonnement for Speil er 100,- pr år.
Løssalgspris 25 kr
Bankgiro : 6072 05 14969

Ansvarlig Redkatør
(Editor) सम्पादक:
Suresh Chandra Shukla
Redaksjon (Editorial board)
सम्पादक मण्डल:
Harald Burvald, Torstein Winger
Sangita Shukla,
Sigrid Marie Refsum,
Maya Bharti,
Rupinder Singh Dhillon,
Guru Sharma

India
Om Sapra (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow)

Canada
Dr. S. K. Sethi

Nederland
Dr. Mohan Kant Gautam

E-mail: speil.nett@gmail.com
Phone: +47 90070318
Address:
Post Box 31, Veitvet
0595 Oslo, Norway

I dette nr. इस अंक में
हिन्दी Hindi

- **स्तम्भ**
  सम्पादकीय ५
  सम्पादक के नाम पत्र ६, ७
- **लेख, समाचार और व्यंग्य**
  भामति कथा - रघुवीर शर्मा ८
  लॉकडाउन का विमोचन ९
  शहीद न होने का दु:ख
  - प्रो. वेद प्रकाश 'वटुक' १४
  मैं सत्याग्रही क्यों? - आशीष सिंह १५
  पांडेय जी और जन्मदिन का आयोजन
  - लालित्य ललित २५
  दूसरों को सम्मानित करना अपने को
  सम्मानित करना है -राजेन्द्र कुमार तिवारी ३७
  मातृभाषाओं में शिक्षा दें -प्रो. सूर्यकान्त ३८
- **कहानी**
  पुनर्जन्म - प्रो. वेद प्रकाश बटुक १०
  ब्यूटी पार्लर - रेखा राजवंशी ११
  चेहरे - अनीता वर्मा १३
  गूँज - जय वर्मा १६
  सिसकियां - प्रियमबरा १९
  बंकर में सात दिन - शरद आलोक २७
- **कवितायें**
  सत्यम शिवम सुन्दम् - एस.एस. पाराशर ७
  ग़ज़ल - डॉ. राहुल अवस्थी ९
  प्रतीक्षा - अनिल वर्मा ९
  क्या फर्क पड़ता है - मंजू मिश्रा १३
  मेरे गीतों की धुन - डॉ. शोभा बाजपेई १३
  हिन्दी में राम - मानस मुकुल त्रिपाठी १४
  नमक - डा० कुंअर वीर सिंह मार्तण्ड १५
  प्रेम शंकर शुक्ल की तीन कवितायें १८
  औलाद - डा० कृष्ण कन्हैया २४
  परिणोत्सव - राधा शर्मा २६
  डॉ. राम गोपाल भारतीय की दो गजलें ३१
  उपहार का सुमन - मीना गौतम ३१
  श्रम - डॉ० उमेश 'आदित्य' ३१
  तिरंगा है - राम राज भारती ३१
  चंद सपने कुछ ख्वाहिशे है मेरी
  - डॉ. सीमा गुप्ता ३१
  सागर की लहरों पर ये - रेनू वर्मा 'रेणु' ३२
  गजल - श्रवण कुमार ३२
  कदम मिलाकर चलना होगा - अशोक सिंह ३२
  बिटिया - डॉ. निर्मला एस. मौर्य ३२
  साहित्यिक बाजारवाद - विजय त्रिपाठी ३३
  गाँव में कोई हाईवे नहीं होता
  - विशाल चन्द्र पाण्डेय 'नीरज' ३३
  सुबह का सुकून - एस.एस. पराशर ३३
  यादों जड़ी किताब -
  पूर्णिमा वेदार श्रीवास्तव ३४
  ग़ज़ल - अनिता वर्मा ३४
  मैं बिकाऊ माल हूँ - डॉ० दिनेश चन्द्र अवस्थी ३४
  कागज़ - नील अमित ३४
  बन गया मैं भी इमारत - महेन्द्र के. वर्मा ३४
  तेज हवाएँ - अनीता कपूर ३५
  जीवन - नीरजा शुक्ला 'नीरू' ३५
  हाइकु - डॉ. मिथिलेश दीक्षित ३५
  मुखर्जी नगर से पलायन कर ही है
  तितलियां - शरद आलोक ३५
  गजल - रामअवतार बैरवा ३६
  छंदमुक्त प्रेमयुक्त - आनन्दा पाटनी ३६
  दर्द - प्रो. महेन्द्र के. वर्मा ३६
  माँ - प्रवीण गुप्ता, ओस्लो, नार्वे ३७
  ग़ज़ल - राय भट्टी ३७
  कसम खायी है मुस्कराने की
  - नीरजा शुक्ला 'नीरू' ३७
  भावों में तपन क्यों है - विनीता रानी विन्नी ३८
  हवा-पानी और धूप - प्रो. निर्मला एस. मौर्य ३८
  जग से ऐसा प्यार किया है
  - डॉ० गंगा प्रसाद शर्मा ३८
  बैसाखी का शुभ दिन -ओम सपरा ३९
  जीवन एक तंदूर -डा. कुंवर वीर सिंह मार्तंड ३९
  हमसफर - प्रमिला कौशिक ३९
- **फिल्मी**
  नयी फिल्म 'वध' - प्रो. पुनीत बिसारिया ३०
  कश्मीर फाइल मेरी नज़रों में
  - सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ३०

Norsk (Norwegian) नार्वेजीय

- **Faste spalter**
  Leder 5
  Leserbrev 6, 7
- **Artikler og informasjon**
  Statsministerens nyttårstale 2023 40
  Endringer i lover og forskrifter fra
  1. januar 2023 44

Speil दर्पण

सम्पादक Redaktør

सुरेशचन्द्र शुक्ल

Suresh Chandra Shukla

सम्पादक मण्डल: Redaksjon

Harald Burvald
Torstein Winger
Sangita Shukla
Sigrid Marie Refsum
Maya Bharti
Rupinder Singh Dhillon
Guru Sharma

सलाहकार: Adviser / Rådgiver

Trygve Tveter, Advokat

Redaksjon i India
भारत में

Prof. (Dr.) Santosh Kumar Tewari
Hari Singh Pal (New Delhi)
Kripa Shankar (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow).
Shivram Pandey (Lucknow)
Dr. Vinay Kumar Sharma (Lucknow)
Om Sapra (New Delhi)
Dr. Vikram Singh
Dr. Shobha Bajpai
Ila Shri Jaiswal
Dr. S.K. Sethi (Canada)

Nedarland
Dr. Mohan Kant Gautam

Distributor in India भारत में
Sanju Mishra

Våre kilder हमारे श्रोत

India भारत
Anup Bose, Delhi
Rameshvar Mishra, Shanti Niketan
Ubbaidur Rahman Hashmi, New Delhi
Harmahinder Singh Bedi, Amritsar
Nirmala S Mourya, Chennai
Anand Sharma, Lucknow
Birendra Kumar Shukla,
Lalganj, Raebareli

Sverige स्वीडेन :
Ashutosh Tiwari

Danmark डेनमार्क :
Deshbandhu Charanjiv Kumar

Tyskland जर्मनी :
Dr Ram Prasad Bhatt
Samta Malhotra

Storbritannia ब्रिटेन :
Virendra Sharma (MP)

Canada कनाडा:
Neerja Shukla
Manish Kumar Mishra

Sør Afrika दक्षिणी अफ्रीका :
Rambhajan Sitaram

USA यूएसए :
Sher Bahadur Singh
Dr. Raj Gupta

Leder

Likestilling er viktig

Innvandrerorganisasjoner i Oslo gjør mye viktig arbeid. Det er en variert gruppe med forskjellige målsetninger og aktiviteter.

Mange sliter med å rekrutere nye medlemmer og særlig med å få medlemmene til å delta aktivit og ta ansvar i organisasjonen. Ofte er de voksene menn som dominerer og som sitter i styret mens kvinne og unge ikke får eller tar ansvar.

Innvandrerorganisasjoner og tros -og livsynssamfunn må ha 40 prosent kvinne andel i styrene. Ungdommer må også inkluderes i styre. Det er veldig viktig for likestillingen.

Speil fyller 35 år.

Jeg har vært på Julemøte til Oversetterforeningen. Det var stor bekymringer ble vist av flere tilstedvarende medlemmer angående forandringen og mindre arbeidsstipend for kunstnere i fremtiden på grunn av mindre budsjettet for dette formålet.

Speil har erfaring i 35 år med flerkulturelt arbeid i Norge. Vi får stor respons og tilbakemeldinger som gir oss oppmuntring og den er videre med i utviklingen i tiden som kommer.

Vi ber om både moralsk og økonomisk støtte av kulturelle organisasjoner, politikere og forfattete som vil hjelpe oss å videreføre kulturelle samarbeid og dialog mellom kulturer i Norge i mange år fremover. Vi håper på en felles markering for alle som ønsker å delta og eller biddra med en eller annen måte. Speil takker alle bidragsgivere, støttespillere og lesere for deres støtte.

Suresh Chandra Shukla, Redaktør

सम्पादकीय

महिला और पुरुष के मध्य समानता जरूरी

प्रवासी संस्थायें बहुत जरूरी कार्य कर रही हैं। यह विभिन्न लक्ष्यों और गतिविधियों के साथ एक विविध समूह हैं।

बहुत से लोग नए सदस्यों को बनाने के लिए संघर्ष करते हैं, खासकर सदस्यों को सक्रिय रूप से भाग लेने और संगठन में जिम्मेदारी लेने के लिए। अकसर वे अधिक आयु के पुरुष होते हैं जो हावी हैं और कार्यकारिणी में रहते हैं। जबकि महिलायें और युवा लोगों को जिम्मेदारी नहीं मिलती है या जिम्मेदारी नहीं लेते हैं। प्रवासी और धार्मिक संस्थाओं को चाहिए कि वह अपनी संस्थाओं की कार्यकारिणी में महिलाओं को कम से कम ४० प्रतिशत प्रतिनिधित्व दें। युवाओं को भी कार्यकारिणी में सम्मिलित करना चाहिये। यह महिला और पुरुष के मध्य समानता के लिए बहुत जरूरी है।

स्पाइल-दर्पण, ३५ वर्ष की

मैं लेखकों और अनुवादकों की क्रिसमस मीटिंग और भोज पर गया था। बहुत से सदस्यों ने कलाकारों- लेखकों को दिए जाने वाले सांस्कृतिक बजट में वजीफे और सहायता में कमी करने की सूचना पर चिंता व्यक्त की थी। स्पाइल-दर्पण को ३५ वर्षों का बहुसांस्कृतिक कार्यों का अनुभव है। हमको बड़ी मात्रा में प्रतिक्रियायें मिलती हैं और हमें फीडबैक मिलता है जिससे हमें समय के साथ-साथ विकास में प्रोत्साहन मिलता है।

हम सांस्कृतिक संगठनों, नेताओं और लेखकों से नैतिक और वित्तीय सहायता दोनों के लिए कहेंगे। हम आने वाले अनेक वर्षों तक भी नार्वे में संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक सहयोग और संवाद जारी रख सकेंगे और प्रबंधन करेंगे। हम स्पाइल-दर्पण की ३५वीं वर्षगांठ पर समारोह के आयोजन के लिए आशा करते हैं, जहाँ सभी को समारोह में सहयोग और भाग लेने का अवसर मिले। हम स्पाइल-दर्पण की ओर से सभी सहयोगियों, समर्थकों और पाठकों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं।

- सुरेशचन्द्र शुक्ल, सम्पादक

Leserbrev
सम्पादक के नाम पत्र

हिंदी का भविष्य सुखद और संतोषजनक है। साहित्य की हर प्रत्येक विधा में हिंदी लेखन हो रहा है। सामाजिक विज्ञान और विज्ञान लेखन के क्षेत्र में भी सजग प्रयास हो रहे हैं। जितना हिंदी स्थानीय परिवेश को लेकर अपना सरोकार रखती है उतना ही वैश्विक स्तर पर भी। हिन्दी सर्वाधिक समावेशी भाषा है यह हर वर्ग हर वय (आयु) हर समाज की बात करती है। भारतवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में २०२३ में नए कदम नयी उपलब्धियाँ अर्जित करने में जिस प्रकार प्रयत्नशील रहेगा हिन्दी भी अपनी पहचान बनाने में गतिशील रहेगी।

हम आशान्वित हैं कि अब्दुल कलाम का सपना साकार होगा। दूसरे अर्थों में २०२३ में शाइनिंग इंडिया होगा।

भारत और नार्वे की मैत्री को निरन्तर सुदृढ़ करने में स्पाइल-दर्पण पत्रिका और उसके विश्व स्तरीय ख्यातिलब्ध प्रवासी साहित्यकार और सम्पादक श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को कोटिशः शुभकामनायें निवेदित करता हूँ।

प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय

ओस्लो से प्रकाशित स्पाइल दर्पण पत्रिका के ३५ वर्ष पूरे होने पर उसके यशस्वी संपादक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक को हम साधुवाद ज्ञापित करते हैं कि उन्होंने इतने लंबे समय तक हिंदी की सेवा की है। विदेश में हिंदी की पताका लहराई है। प्रवासी साहित्यकारों में अग्रणी शुक्ल जी की ऊर्जा अपने समग्र प्रातिभा के साथ अर्धरात्रि वाले सूरज के देश के आसमान में बाल रवि सम उदित होकर जग के गहन अंधकार को दूर कर रही है।

उनका यह पुण्य कर्म अनवरत जारी रहे और साहित्य के आकाश में कभी न लुप्त होने वाली यश- चंद्रिका अपने मादक, उन्मादक, मधुर, मदिर और सरस, सुहावन शरद आलोक से समूची हिंदी जाति को आनंदित और आलोकित करती रहे। अपने अनन्य मित्र श्री शुक्ल के परिश्रम और लगन को नमन करते हुए इस सारस्वत यात्रा के अनवरत जारी रहने के लिए अनंत, अशेष मंगलकामनाएं प्रेषित करते हैं।

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'
अहमदाबाद, भारत

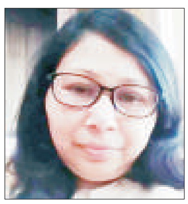

नमस्ते सर, स्पाइल-दर्पण का नया अंक मिला।
सभी रचनायें अच्छी हैं। आप को ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

प्रो. कल्पना गवली
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, बड़ौदा
विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात।

आप ३५ सालों से ओस्लो, नार्वे से हिंदी और नार्वीजन भाषा में स्पाइल-दर्पण पत्रिका निकाल रहे हैं जो हम सभी स्कैंडिनेवियाई भारतीयों और यहाँ के मूल लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। ईश्वर ने हमको यह जीवन दिया है। मैं जियो और जीने दो के सिद्धांत को मानता हूँ। जो बुरा करे उसका भी भला करो। अंदर की आत्मा युवा है। हमारी आत्मा खुश तो हम खुश हैं। मैं स्टॉकहोम में मंदिर में सभी से एक भाव से मिलता हूँ। भगवान ने हम सभी को अलग-अलग बनाया है। हमारे सभी के अंदर भगवान है। आपको पत्रिका के सम्पादन के लिए बहुत बधाई।

रवि मेहरा, स्टॉकहोम,
स्वीडेन

मान्यवर,
महात्मा गाँधी जी की १५३वीं जयन्ती पूरा विश्व मना रहा है। इस सुअवसर पर उनके कृतित्व को समर्पित स्पाइल-दर्पण का यह अंक सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक है।
पत्रिका गांधी जी के जीवन दर्शन को उजागर करके अनेक विषमताओं से जूझते विश्व में बच्चों को हिंसा मुक्त, भय रहित व मानवीय मूल्यों से ओत-प्रेत वातावरण निर्माण की ओर प्रेरित करेगी। यह अंक गाँधी जी के आदर्शों को देश काल से ऊपर उठाकर पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक बना देता है। एक कुशल संपादक के रूप में आपने महात्मा गांधी को याद कर भारत की वर्तमान पीढ़ी को भी अपनी समस्याओं का समाधान सत्य और अहिंसा में ढूढ़ने को प्रेरित किया, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और अपार सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

बीरेन्द्र शुक्ल
अवधी फिल्म एवं साहित्य शोध संस्थान,
लालगंज, रायबरेली

स्पाइल-दर्पण सम्पूर्ण यूरोप में निरंतर छपने वाली हिंदी की एक मात्र स्वतन्त्र साहित्यिक - सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में स्थापित हो गयी है। नव वर्ष पर मेरी ओर से आत्मीय स्वस्तिकामनाएँ प्रेषित हैं।

प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
अध्यक्ष, कला संकाय और कुलानुशासक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म. प्र.

Leserbrev
सम्पादक के नाम पत्र

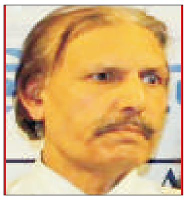

स्पाइल-दर्पण मैगजीन को २५ साल से नियमित पढता हूँ। २७ फरवरी २०२३ को मुझे नार्वे आये ५० साल हो जायेंगे।

इन सालों में मैंने देखा है कि कोई भी मैगजीन हिंदी, उर्दू और पंजाबी में यहाँ नार्वे से निकली पर बाद में बंद हो गयी। मुझे लगता है बड़ा मुश्किल काम है मैगजीन को छापना। स्पाइल मैगजीन ३५ सालों से लगातार निकल रही है यह बहुत खुशी की बात है। क्योंकि एक मैगजीन समाज की सूरत पेश करती है। लोगों की आवाज होती है। कलाकारों की भी आवाज होती है। मैं खुद गायक हूँ इसलिए मुझे पता है कि कलाकार के लिए स्टेज जरूरी है या ऐसी जगह जहाँ वह गाकर अपनी बात कह सके। मैगजीन बताती है जब उस कलाकार ने गाया था तो उसका परफॉर्मेंस (प्रस्तुतीकरण) कैसा था। मैगजीन एक तरह से हमारे सामाज का दस्तावेज होती है।

स्पाइल-दर्पण पत्रिका को और उसकी पूरी टीम को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसी के साथ मैं नए साल की मुबारकबाद भी देता हूँ।

राज कुमार भट्टी, ओस्लो, नार्वे।

आदरणीय सम्पादक जी,
मैं स्पाइल की नियमित पाठक हूँ और स्पाइल के पिछले नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता अंक बेहद ही रोचक हैं। जिसमें एलेस बियालियाट्स्की, नतालिया पिंचुक, मेमोरियल, जिसका प्रतिनिधित्व जान राचिंस्की, सेंटर फॉर सिविल लिबर्टीज एवं ओलेक्सांद्रा मैटविचुक द्वारा किया गया था। मेरी इनके लिये हार्दिक शुभकामनायें।
मेरी स्पाइल-दर्पण की पूरी टीम को शुभकामनायें, जिन्होंने प्रकाशन के ३५ वर्ष सफलतापूर्वक पूरे किये।

श्रीमती रंजना सेठी
नई दिल्ली, भारत

आदरणीय सुरेशचंद्र शुक्ल जी,
स्पाइल दर्पण पत्रिका देखने और पढ़ने का सौभाग्य मिला। यह अद्भुत संयोग है कि हिंदी-नॉर्वेजियन द्विभाषी पत्रिका विश्व में हिंदी की समृद्धि में विगत ३५ वर्षों से समर्पित है। विषय वैविध्य से पत्रिका की रोचकता कमाल की है। यह पत्रिका जहाँ हिंदी का विकास कर रही है वहीं भारतीयता संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण के दायित्व का निर्वहन कर रही है। समर्पित भाव से हिंदी की सेवा कर रहे वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को हार्दिक बधाई और कामना करता हूँ कि पत्रिका अनवरत प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित
डॉ. दीपक पांडेय
सहायक निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पश्चिमी खंड -७, आर के पुरम
नई दिल्ली ११००६६

यह मेरा परम सौभाग्य है कि विश्व पुस्तक मेला २०२० को नई दिल्ली में आयोजित हुआ। इस दौरान केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के स्टाल पर श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल जी से मुलाकात हुई और उनकी संपादित पत्रिका जो नार्वे से प्रकाशित होती है, स्पाइल-दर्पण को पढ़ने का मौका मिला। यह एक भारतीय लेखक, चिंतक एवं कवि का सफल प्रयास है कि विदेश में रहकर अपनी भारतीयता व उसके गौरव को पत्रिका के माध्यम से रेखांकित कर रहे हैं।

एवं कवि का सफल प्रयास है कि विदेश में रहकर अपनी भारतीयता व उसके गौरव को पत्रिका के माध्यम से रेखांकित कर रहे हैं।

इस पत्रिका में प्रकाशित उनकी कविता 'कुछ करके जायेंगे' में प्रेम ही जीवन से जुड़ने की कड़ी है। ये जीवन दर्शन की सबसे बड़ी सुन्दरता को व्यक्त करती है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्य के विभिन्न आयामों पर भी प्रकाश डाला है। मैं स्पाइल-दर्पण तथा श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल को शुभकामना देती हूँ कि वे इसी तरह पत्रिका का सफल संपादन व प्रकाशन कर लेखक व कवियों के विचारों से परिचित कराते रहें।
स्पाइल परिवार को पत्रिका के ३५ वर्ष पूरे होने पर मैं हार्दिक शुभकामनायें देती हूँ।

डा. अनिता डोगरे
सहायक निदेशक,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
नई दिल्ली

सत्यम शिवम सुन्दरम्
एस.एस. पाराशर

जो गरीब है वह सत्य है।
क्योंकि कुछ ढक नहीं सकता
उसके पास नही है कोई छद्म लिबास
अपनी गरीबी छुपाने का
वही शिव है
क्योंकि उठा रहा है सारे दुःख
पी रहा है हलाहल जमाने का
वो सुन्दर है
क्योंकि उसकी गरीबी ही निखारती है
सुन्दरता उस पर
बनी फिल्मों की, सेमिनारों की,
उस पर लिखे लेखों कीगरीबी ही
सजाती है टेबल पाँच सितारा सेठों की

भामति कथा

रघुवीर शर्मा

वाचस्पति मिश्र (९००- ९८० ईसवी) का जन्म मिथिला क्षेत्र (भारत और नेपाल के बीच की सीमा) में हुआ था, जो अब मधुबनी में है। वे एक महान भारतीय दार्शनिक और अद्वैत वेदांत के मुख्य स्कूलों में से एक, भामति स्कूल के संस्थापक थे। उनकी माँ वत्सला ने उनके पिता के अभाव में उन्हें अकेले पालने में बहुत कष्ट सहा था। जब वह काफी बूढ़ी हो गईं तो वह पड़ोस के गांव की एक लड़की का प्रस्ताव लेकर आईं और अपने बेटे से उस लड़की से शादी करने की जिद करने लगीं।

वाचस्पति ने दुल्हन के पिता को यह संदेश दिया- 'मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य' बादरायण व्यास' के 'वेदांत सूत्र' (ब्रह्म सूत्र) पर भाष्य (टीका) लिखना है। यही मेरी मानवता की सेवा होगी। ये शास्त्र मुझे प्राणों से भी प्रिय हैं। मैं एक गृहस्थ (पारिवारिक व्यक्ति) की जिम्मेदारी नहीं निभा पाऊँगा । मुझे सन्देह है कि मैं एक अच्छा पति बन पाऊँगा या नहीं। ब्रह्मसूत्र के भाष्य को लिखने के अलावा मेरे दिमाग में और कुछ नहीं है। मैंने इसे लिखने के बाद संन्यास लेने की शपथ भी ली है।

(उन लोगों के लिए जो 'ब्रह्म सूत्र' के बारे में नहीं जानते हैं - यदि दुनिया भर में मौजूद सभी आध्यात्मिक दर्शन एक नदी में समाहित हो सकते हैं, तो ब्रह्म सूत्र अपने आप में एक महासागर है।)

दुल्हन के पिता युवा प्रतिभाशाली विद्वान और उनकी स्पष्टवादिता, विनम्रता और ईमानदारी का सम्मान करते थे। लेकिन वह अपनी बेटी की शादी उससे कराने को लेकर आशंकित थे। लेकिन लड़की ने कहा- 'मैं सभी शर्तों का पालन करने को तैयार हूँ'

दुल्हन के पिता ने वत्सला को यह बताया और वाचस्पति से पूछा, 'क्या आप उससे मिलना चाहेंगे?' इस पर वाचस्पति मुस्कुराए और कहा- उसने मुझे पहले ही चुन लिया है इसलिए मुझे उसकी पसंद को नकारने का कोई अधिकार नहीं

रघुवीर शर्मा

है।'

उन्होंने आषाढ़ के महीने में व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) के दिन भामति से विवाह किया। लेकिन वाचस्पति के लिए वही दिन अपना महान कार्य शुरू करने के लिए सबसे शुभ दिन भी था। जैसे ही वह दुल्हन के साथ घर पहुँचे, वह घर के बरामदे में बैठ गये और लिखने लगे। वह दिन-रात लिखते रहे। महीने, मौसम और परिवेश - चारों ओर सब कुछ बदल रहा था, लेकिन वाचस्पति के लिए नहीं। ऐसा लगता था जैसे वह जीवन के सामान्य स्तर पर मौजूद ही नहीं थे। अपनी कुछ शारीरिक ज़रूरतों - नहाने, थोड़े भोजन और कुछ घंटों की नींद को छोड़कर वह काम में पूरी तरह डूबे रहते थे। जिस समय वाचस्पति मिश्र भाष्य लिख रहे थे, उनकी पत्नी भामति ने बिना किसी अपेक्षा के वर्षों तक उनकी सेवा की।

वे इतना व्यस्त रहते थे कि वे भूल ही गये थे कि उनकी एक पत्नी भी है। उन्होंने हमेशा पाया कि उनके पास लिखने के लिए ताड़पत्र हाथ में तैयार करके रखे जाते हैं, दीपक में अच्छी तरह से तेल भरा जाता है, उनके कपड़े धोए जाते हैं और साफ रहते हैं और ताजा भोजन उचित समय पर उनके पास रख दिया जाता है। उन्होंने कभी यह सोचने का कष्ट भी नहीं किया कि ये चीजें कैसे हो रही हैं। इन सभी वर्षों के दौरान, उन्होंने कुछ और नहीं सोचा, कुछ और नहीं देखा और कुछ भी नहीं सुना।

एक रात जब उनकी टीका पूरी हो चुकी थी, वाचस्पति अपने आसन से उठने ही वाले थे कि अचानक दीपक के प्रकाश में उन्होंने देखा कि एक महिला चुपचाप उन्हें भोजन की थाली परोस रही है। उन्होंने उससे पूछा, 'तुम कौन हो और इस समय यहाँ क्या कर रही हो?'

उसने उत्तर दिया, 'आप टीका लिखने में इतने डूबे हुए थे कि आप पूरी तरह भूल ही गए हैं कि कई वर्ष पहले आपने मुझसे विवाह किया था। मैं भामति हूँ, आपकी पत्नी!'

वाचस्पति यह जानकर हैरान रह गए कि उनकी पत्नी ७ साल से बिना उनकी जानकारी के कर्तव्यपरायणता से उनकी सेवा कर रही है। यह उनकी पत्नी थी जो उनकी हर जरूरत का ध्यान रख रही थी, और फिर भी उन्होंने कभी उसकी ओर देखा तक नहीं था। उनकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगी लेकिन भामति को कोई शिकायत नहीं थी। उसने कहा कि उसे उनके जैसा पति पाकर गर्व है और वह उनके इस महान कार्य को पूरा करने में उनके साथ जुड़कर बहुत धन्य महसूस कर रही है। वाचस्पति ने कहा, 'हाँ, अब मुझे याद आया। कृपया मुझे अपने हाथ दिखाइए और मैं उन्हें पहचान लूँगा।'

उन्होंने भामति के हाथों को देखा और कहा- 'ये हाथ मेरे बगल में दीपक रख रहे थे और हर दिन सूर्यास्त के बाद मुझे रात का भोजन परोस रहे थे। मैं इन हाथों को जानता हूँ। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि मैंने प्रतिज्ञा की है कि जिस दिन

मैं अपनी टीका समाप्त कर लूँगा, उस दिन संन्यास ले लूँगा और घर छोड़ दूँगा!

मैं इस टीका का नाम 'भामति' रखूँगा, ताकि जो कोई भी इस पुस्तक को पढ़े वह आपको याद करे।

अपनी पत्नी के उत्सर्ग के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में उन्होंने अपनी टीका का नाम भामति रखा । 'मेरे पास जो कुछ भी है - मेरा जीवन लक्ष्य, मेरा कर्म, जीवन का कृतित्व और जीवन का उद्देश्य - मैं आपके चरणों में समर्पित कर रहा हूँ। फिर भी, मुझे प्रतीत होता है कि आपके प्रेम का प्रतिदान करने में मैं अपने आपको असमर्थ पा रहा हूँ। उन्होंने कहा। (हालांकि संस्कृत में ब्रह्मसूत्र पर कई अन्य टीकाएँ हैं, लेकिन कहा जाता है कि सबसे अच्छी टीकाओं में से एक 'भामति' है, जो एक समर्पित पत्नी और उसके प्रेम का नाम है।)

'देवी, जब मैं चला जाऊँगा, तब तुम क्या करोगी? और तुम अपनी देखभाल कैसे करोगी?" वाचस्पिति मिश्र ने आगे कहा।

मुस्कान के साथ भामति ने उत्तर दिया-"पति देव, वह बल जो मुझे आपके पास लाया और मुझे आपकी सेवा करने का अवसर दिया, वही मेरी देखभाल करेगा। कार्य के प्रति आपकी सत्यनिष्ठा मुझे आजीवन प्रेरित करती रहेगी।"

उसके बाद वाचस्पति हिमालय के लिए रवाना हो गए, लेकिन वे भामति और उसके गुणों, उसकी कृपा और उसके दिव्य सौंदर्य को कभी नहीं भूल सके... जो मानवीय गुणों से परे था। वाचस्पति आज भी एक महान विद्वान के रूप में याद किए जाते हैं, लेकिन भामति का व्यक्तित्व कहीं अधिक दिव्य सिद्ध होता है।

डॉ. राहुल अवस्थी की ग़ज़ल

ये हकीकत है कि ख्वाबों से निकल आया हूँ
मैं तेरे झूठे गुलाबों से निकल आया हूँ

तू मेरे असली सवालों से निकल करके दिखा
मैं तेरे नकली जवाबों से निकल आया हूँ

जिनके पन्नों को तूने पढ़ना ही नहीं चाहा
मैं उन्हीं जिन्दा किताबों से निकल आया हूँ

सौ हिजाबों में अपने आपको रखने वाले
मैं सबाबों से अजाबों से निकल आया हूँ

शाम है, स्याहियाँ हैं, तीरगी की महफिल है
मैं तेरी आँखों की आबों से निकल आया हूँ

अब मेरी रूह की चिड़िया सँभालकर रख ले
मैं बदन ले के उकाबों से निकल आया हूँ

मैं अभी तक तेरी शिनाख़्त में ही खोया हूँ
तू ये बोला था - नकाबों से निकल आया हूँ

अब मुझे बेहिसाब लानतें भेजी जायें
जिन्दगी तेरे हिसाबों से निकल आया हूँ

और ही हैं वो जो पलते हैं आस्तीनों में
मैं अँगूठा हूँ, जुराबों से निकल आया हूँ

प्रतीक्षा

अनिल वर्मा, सिडनी, आस्ट्रेलिया

धूल भरे थे दिन सभी, शूल भरी थी रात
पुतली से बादल बिंधे, पलकों में बरसात।

जिससे भी झूला बंधा, टूट गई वह शाख
आँगन में जलता रहा बिना फागुन बैसाख।

अधरों में खोते रहे अनजाने-से छंद
सपने तैर आँख में पलकें हुई न बंद।

हुई दीप-सी ज़िन्दगी, दीपशिखा-सी साँस
जहाँ हुई थी प्रार्थना वहीं जला मधुमास।

छोटी-सी थी अंजुरी बहुत बड़ी थी चाह
जाने कैसे खो गई चौराहे पर राह।

अधरों में खोते रहे अनजाने-से छंद
सपने तैर आँख में पलकें हुई न बंद।

हुई दीप-सी ज़िन्दगी, दीपशिखा-सी साँस
जहाँ हुई थी प्रार्थना वहीं जला मधुमास।

छोटी-सी थी अंजुरी बहुत बड़ी थी चाह
जाने कैसे खो गई चौराहे पर राह।

जिससे भी झूला बंधा, टूट गई वह शाख
आँगन में जलता रहा बिना फागुन बैसाख।

अधरों में खोते रहे अनजाने-से छंद
सपने तैर आँख में पलकें हुई न बंद।

हुई दीप-सी ज़िन्दगी, दीपशिखा-सी साँस
जहाँ हुई थी प्रार्थना वहीं जला मधुमास।

छोटी-सी थी अंजुरी बहुत बड़ी थी चाह
जाने कैसे खो गई चौराहे पर राह।

नार्वे के शरद आलोक की लॉकडाउन का विमोचन

कोलकाता। सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' के काव्य संग्रह लॉकडाउन के बंगानुवाद का विमोचन हुआ। त्रिवेणी साहित्य -संस्कृति -कला अकादमी, कोलकाता के मंच पर नार्वे के और मूल लखनऊ के सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' के काव्य संग्रह लॉकडाउन का हिन्दी से बंगानुवाद विश्वनाथ माझी ने किया और पुस्तक का संपादन साहित्य त्रिवेणी के सम्पादक डॉ. कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड जी ने किया है। लोकार्पण में पुस्तक पर प्रकाश डाला ब्रिजेन्द्रनाथ धर, अवशेष दास, नूरूल इस्लाम, डॉ. कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड और मधु शर्मा ने। लॉकडाउन काव्य संग्रह सामाजिक सरोकारों और मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने वाली कोरोनाकाल की हिन्दी में प्रथम पुस्तक है। शुभकामनायें भेजने वालों में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के संयुक्त निदेशक डॉ. दीपक पाण्डेय, कोलकाता विश्वविद्यालय से प्रो राजश्री शुक्ल, एवं सदीनामा के सम्पादक जितेन्द्र जितांशु थे।

-डॉ. कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड, कोलकाता

पुनर्जन्म

प्रो० वेद प्रकाश बटुक, पूर्व प्रोफेसर, वर्कले यूनीवर्सिटी, यू.एस.ए.

लेखक परिचय : अमेरिका में पैतींस तक शिक्षण कार्य विदेशों में रहकर लेखन करने वाले सबसे बड़े कवि-साहित्यकार।

विदेशों में रहने वाले रचनाकारों की आत्मकथात्मक साहित्य में प्रमुख स्थान है। जो निम्न शीर्षक से छपे हैं: (१) भटकाव ही पथ बन गये (२) पंचवटी की खोज में (३) देश-परदेश सब बिराना है। (४) घर ही कारागार बन गया (५) ८४ दिन का पेरोल (मेरी अमेरिकन यात्रा)

दो बार विदेशी पत्नियों से आघात पाकर उसने तीसरी शादी एक भारतीय महिला से कर ली। परित्यक्ता, जिसके रंगीन फौजी पति किसी और सुन्दरी के साथ चले गये थे, उसकी गोद में एक लड़की छोड़कर। नाम भी करूणा। करूणा की मूर्ति थी वह या करूणा या पात्रा, यह वह निर्णय कर पाया था।

वापिस उसे लेकर विदेश लौटा, तो एक पुराने सहपाठी का पत्र मिला उसे। एक विदुषी शिष्या, जो बनारस में विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थी, उसके शोध से बहुत प्रभावित थी, चाहती थी उसके साथ काम करना और हो सके तो जीवन संगिनी होना। करूणा ने उसके विश्वविद्यालय के आने से पहले ही वह पत्र खोलकर पढ़ लिया था और वह कोपभवन में पहुँच गई थी। आँसुओं और क्रोध के बदलते संचारीभावों के बीच उसने घोषणा कर दी थी कि वह उस चुड़ैल की छाया से भी दूर रहे।

और कुछ दिन बाद जब मोहिनी का बधाई पत्र उसे मिला और यह निवेदन कि उसके लिए भी कोई पति ढूँढ दे, तो करूणा के क्रोध की कोई सीमा न रही। "उस चुड़ैल के किसी पत्र का उत्तर तुम नहीं दोगे।"

स्वभाव के अनुकूल न होते हुए भी गृहकलह से बचने के लिए वह शान्त रहा और न मोहिनी को उसके पत्र का उत्तर भेजा, न मित्र को। किन्तु मन में उसे महसूस हुआ कि उसके भीतर कुछ मर रहा है।

उधर मोहिनी से करूणा की कल्पित ईर्ष्या बढ़ती रही और एक दिन पागलपन की सीमा तक पहुँच गई। वह विभाग के हर सदस्य को पूछती कि वह किसी छात्रा से खिलवाड़ तो नहीं कर रहा, हर गोरी महिला से उसे जलन होती, सामान्य शिष्टाचार उसे प्रेम-याचना लगती। किसी छात्रा का फोन उसे 'इश्कबाजी' लगती और हर पार्टी वासना का एक खुला मंच। एक दिन उसे लगा कि उसका जीवन ही समाप्त हो गया है। उसका शोध, उसका काम, उसका मित्र-संसार-सब ओर उसे शून्य होता लगा। दिन, सप्ताह, माह, वर्ष लगा नरक की परत पर परत उसे दबोच रही है। करूणा को पाकर सचमुच ही हो गया है वह करूणा का पात्र। किन्तु डूबना अभी उसे स्वीकार न था।

अतः अन्तिम आशा के क्षण में उसने एक दिन करूणा को भारत लौट जाने को कहा। तलाक की प्रक्रिया में तीन मास लग गये।

लगा, जैसे तीन-चार वर्षों के वनवास की मृत्यु के बाद वह घर लौट आया है। पुनर्जन्म लेकर।

और उसने अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए मोहिनी को पत्र लिखकर उससे क्षमा माँगी।

मोहिनी का उत्तर लौटती डाक से आ गया। तीन वर्षों के मौन से उसके मन में एक साथ अपमान और बदले का भाव तथा उसे प्रति एक अजीब सा आकर्षण तीव्र हो गया था। उसने केवल आश्वासन दिया कि वह स्थिति समझती है और 'बनारस आयें, तो मिलें' का निवेदन।

अगली भारत-यात्रा में वह बनारस गया। मोहिनी के घर पहुँचा, तो वह विश्वविद्यालय जाने को तैयार खड़ी थी। उसका तार उसे न मिला था। थोड़े अटपटेपन के बाद परिचय हुआ। वह उसे विश्वविद्यालय ले गई। फिर रेस्टोरेण्ट।

अचानक उसने देखा, मोहिनी की माँग में हल्का सा सिन्दूर। "यह क्या?"

"ओह, तुम्हारा पत्र न पाकर, नरक से ढाई साल काटकर मैंने एक चाचा के कहने पर विवाह कर लिया।" मोहनी कह रही थी।

"तो मुझे लिखा क्यों नहीं?" उसने कहा।

"बताती, तो तुम आते थोड़े ही।"

"सुखी तो हो?"

"सुखी कैसे हो सकता है कोई? प्रेम तुमसे किया, कल्पना में, वेदना तुम्हारी झेली। सामाजिकता उनकी झेल रही हूँ। यूँ कुछ भी तो नहीं लगता, जो हमें एकात्मा कर सके।" मोहिनी की आँखों में आँसू की कुछ बूँदें थीं।

"तो मुझे क्यों बुला भेजा?" वह जानना चाहता था।

"इसलिए कि तुम जान सको कि जीवन में नहीं, तो वेदना में तो हम साथ हैं। जब तुम्हें चाहा, तो तुम बँधे थे, अब तुम स्वतंत्र हो, तो मैं मुक्त नहीं। और मेरा बंधन व्यक्ति का नहीं, कुलीन परिवार और भद्र समाज का भी है। रह सकोगे न तुम मेरे मूक मित्र और शुभाकांक्षी?"

मोहिनी एकाएक चुप हो गई। उसने हल्का सा पकड़ लिया था उसका हाथ।

और उसे लगा कि एक ही क्षण हो गई है उसकी मृत्यु और पुनर्जन्म। उसने एक समूची दुनिया खो दी थी और पा लिया था एक पूरा स्वर्ग।

ब्यूटी पार्लर

रेखा राजवंशी, आस्ट्रेलिया

सिडनी की ये सुबह कितनी सुहानी थी। न जलाने वाली गर्मी थी न ठिठुराने वाली सर्दी और न ही तेज हवा थी। मौसम बस परफैक्ट था। ट्रैक पैंट्स और स्नीकर पहनकर सुबह की सैर के लिए निकल पड़ी। घर में कोई था ही नहीं, आज का दिन मेरा पूरा अपना था। कभी-कभी प्रोजेक्ट के सिलसिले में अजय को न्यू कासल जाना होता था और उस दिन अकसर मैं अपने बचे-खुचे काम निबटाने की कोशिश करती थी। खासकर मेरे अपने पर्सनल काम। जैसे-दोस्तों से कॉफी पर मिलना और गपियाना या झाड़ू की तरह बढ़ती हुई आईब्रोज की थ्रेडिंग, वैक्सिंग या फिर दो घंटे का रिलैक्सिंग फेशियल करवाना। और जब से कुलजीत का मोबाइल ब्यूटी पार्लर खुला है, तब से जब खाली समय मिलता है तो मैं उसे बुला लेती हूँ।

मैंने हँसते हुए पूछा, "आखिर क्यों?"

कुलजीत बोली, "दीदी, याद कीजिए आज से एक महीने पहले आपने थ्रेडिंग करवाई थी, तो सोच ही रही थी कि आप बुलाने वाली होंगी। है न?"

बिना बात बढ़ाए मैंने कहा, "ग्यारह बजे आ सकती हो?"

"क्यों नहीं दीदी, आप कहें और मैं न आऊँ? मिलती हूँ आपसे ग्यारह बजे," कहकर उसने फोन रख दिया।

गोरी-चिट्टी पतली सी कुलजीत कैसे अपने ब्यूटी पार्लर का सामान लिए आती है और कैसे चटर-पटर बातें करते-करते जाने कैसे सबका मन मोह लेती है। उम्र शायद तीस साल के आसपास हो। मेरे घर तक वो बस से आती है। एक बार उसने बताया कि उसे ऑस्ट्रेलिया आए नौ महीने हुए हैं। उसकी डेढ़ साल की छोटी सी गोल-मटोल बेटी है जिसका नाम है करिश्मा। अभी शादी के तीन साल ही हुए हैं। उसका पति सतिंदर सात साल पहले ऑस्ट्रेलिया पढ़ने आया था, रेस्टोरेंट की नौकरी अच्छी नहीं लगी तो अब रात को टैक्सी चलाने लगा। छह-सात सौ डालर हर हफ्ते कमाने भी लगा। वीजा की औपचारिकता पूरी होते ही अपनी पत्नी कुलजीत को यहाँ बुला लिया। कुलजीत के आने से पहले तक अजय हैरिस पार्क की एक यूनिट में शेयरिंग में रह रहा था परंतु अब एक बेडरूम की पुरानी सी यूनिट पैरामैटा में किराए पर ले ली थी। कुछ अधिक नहीं पर गुजारा हो ही जाता था।

दिन में कुलजीत भी बच्ची को उसके पास छोड़ एक-दो क्लाइंट्स ढूँढ़ ही लेती है। कुछ नहीं तो उसका कुछ जेब खर्च ही निकल आता है।

दिन में कुलजीत भी बच्ची को उसके पास छोड एक-दो क्लाइंट्स ढूँढ ही लेती है। कुछ नहीं तो उसका कुछ जेब खर्च ही निकल आता है।

मैं सैर पूरी करके घर पहुँची। घर में बिखरी चीजों को समेटा, एक कप ब्लैक टी के साथ टोस्ट बनाया। कंप्यूटर पर रिलैक्सिंग मेडिटेशन म्यूजिक लगा मैं बाहर पड़ी कुर्सी पर आ बैठी। बालकनी के नीचे गार्डन में लगे बड़े-बड़े लाल गुलाब कितने खूबसूरत थे, ये बात अलग कि इनकी खुशबू भारत के गुलाबों के सामने फीकी थी। पापा के बँगले में लगे बेले और हरसिंगार याद आ गए, कितना अच्छा लगता था नारंगी डंडी वाले सफेद हरसिंगार चुनना, बेले के फूल तोड़कर माँ के लिए गजरा बना देना। यहाँ हर सिंगार तो कहीं नहीं दिखता पर बहुत से अलग तरह के देशी फूल जरूर दिखाई देते हैं। कई बार बहुत इंटरेस्टिंग होता है उनकी पंखुड़ियों और बनावट को देखना। मुझे सड़क के किनारे लगे बॉटल ब्रश या गोल्डन बाटल, क्यारियों में खिले बड़े-बड़े लाल गुलाबी वाराटाह, लिली या कंगारू पॉ (पंजे) बहुत लुभाते। सबसे अच्छा लगता झाड़ियों में खिला चिड़ियों की तरह दिखने वाला फूल जिसे लोग 'बर्ड ऑफ पैराडाइस' कहते हैं।

कुछ देर में बाहर से उठकर अंदर आ गई और टी.वी. चला दिया। चैनल सेवल पर मॉर्निंग शो चल रहा था, थोड़ी सी पॉलिटिक्स, थोड़ा सा मौसम का हाल और बहुत सारी बेकार की छोटी-मोटी बातें। लगा, ऑस्ट्रेलियंस का सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत अच्छा है। वे अपने मंत्रियों का मजाक बनाने से भी नहीं चूकते। देख ही रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी।

"ओह ग्यारह बज गए," दौड़कर दरवाजे तक पहुँची।

"हैलो दीदी," चहकती कुलजीत की आवाज सुनाई दी।

"कैसी हो?" मैंने फेशियल करवाते-करवाते पूछा।

"मुझे और क्लाइंट्स मिल गए हैं, जल्दी ही हम टू बेडरूम यूनिट में मूव हो जाएँगे और मैं अपने घर में पार्लर खोल लूँगी।"

उसकी आवाज में खुशी थी।

मुझे अच्छा लगा। कोई भी जब ऑस्ट्रेलिया आता है, उसे स्ट्रगल तो करना ही पड़ता है। माइग्रेशन की भी प्रक्रिया होती है। रिटेल यूनिट, ड्राइविंग लाइसेंस से लेकर नौकरी तक सब धीरे-धीरे ही संभव हो पाता है।

कुलजीत हर महीने मेरे पास आती और मुझे उसकी प्रोग्रेस रिपोर्ट मिलती रहती। मेरी जिंदगी नौकरी, घर, अजय और मित्रों के साथ काफी बिजी थी।

तीन महीने बाद ही उसका फोन आया कि अब उसने दो बेडरूम यूनिट किराए पर ले ली है और एक कमरा उसने पार्लर बना दिया है।

"प्लीज दीदी, आप यहाँ आइए और अपने फ्रेंड्स को भी बता दीजिए।" "बधाई, जरूर बताऊँगी," मैंने उसे आश्वस्त किया।

अगले महीने जब उसका फोन आया तो मैं अपॉइंटमेंट बुक करके उसके घर गई। पैरामैटा के

इस चर्च में सड़क के किनारे अनेक बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्स थीं, देखते-देखते पुराने घर यूनिटों में बदल गए थे। लोग बढ़ गए थे, बहुत से विद्यार्थी थे जो दो या तीन कमरे की यूनिट में एक साथ रह रहे थे। किसी-किसी अपार्टमेंट में तो दस-बारह विद्यार्थी एक साथ रहते थे। लड़कियाँ भारतीय रेस्त्राँ में काम कर रही थीं। तीसरे फ्लोर पर कुलजीत के घर पहुँचकर घंटी बजाई तो चहकती हुई कुलजीत ने दरवाजा खोला। उसके पार्लर वाले कमरे की तरफ बढ़ी तो उसकी अभिरूचि से प्रभावित हुई।

“घर बहुत अच्छा डेकोरेट किया है कुलजीत,” मैंने कहा।

“सब कुछ आप जैसे लोगों से ही सीखा है,” वो बोली।

अच्छा लगा कि एक युवा परिवार सेटल हो रहा है। ठीक ही है, यहाँ सब एक बराबर हैं। भारतीय वैसे भी मेहनती होते हैं, जल्दी ही घर भी खरीद लेते हैं। साल दो साल में सब कुछ अच्छा हो जाएगा सोचकर तसल्ली हुई।

सब कुछ वैसा ही चल रहा था कि एक दिन टी.वी. न्यूज ने मुझे चौंका दिया, “एक इंडियन ड्राइवर को कल रात सिटी में कुछ लड़कों ने छुरा मार दिया और वो क्रिटिकल हालत में अस्पताल में भरती है। उसके परिवार में दो साल की बच्ची और पत्नी है।” अचानक मुझे कुलजीत का ध्यान आया, ओह ये क्या हुआ? मेरा दिमाग भन्ना गया। दौड़कर गई और कुलजीत को फोन किया, “कुलजीत, आर यू ओके? मैंने टी.वी. में अभी देखा।”

“दीदी, ये क्या हो गया,” रोते हुए उसने कहा। उसके स्वर में घबराहट थी।

“घबराओ मत, मैं अभी आती हूँ, मुझे हॉस्पिटल के डिटेल्स बताओ,” कहते-कहते ही मैंने जूते पहने, पर्स उठाया और गाड़ी की चाबी ली। वेस्टमीड हॉस्पिटल मेरे घर के बीस मिनट दूर था। कैसे हो गया ये सब सोचते-सोचते मैं हॉस्पिटल पहुँची। बच्ची को गोद लिए कुलजीत आई.सी.यू. के बाहर बैठी रो रही थी। उसके पास उसकी सहेली और सतिंदर के कुछ मित्र थे, जो बराबर उसे सांत्वना दे रहे थे। सतिंदर की हालत क्रिटिकल थी। डॉक्टर उसे बचाने की कोशिश कर रहे थे। सीने पर चाकू से वार किए गए थे।

पता चला जब सतिंदर नशे में धुत चार लड़कों को अपनी टैक्सी में लेकर चला तो वे रेसिस्ट कमेंट्स करने लगे, सतिंदर ने थोड़ी देर तक सहन किया। उसने बस एक बार कहा, ‘प्लीज माइंड योर लैंग्वेज’ तो लड़के गालियाँ देने लगे और बोले, ‘यू ब्लडी इंडियन, गो बैक टू योर कंट्री। यू बेगर।’ सामने की सीट पर बैठे लड़के ने उसे धक्का दिया।

सतिंदर ने टैक्सी किनारे रोक दी और लड़कों से उतर जाने की रिक्वेस्ट की। बस इतनी सी बात थी कि उन्होंने उसे धकेलकर नीचे गिरा दिया, जाने कैसे एक लड़के ने छुरा निकाल लिया और उसके सीने, पेट पर अनगिनत वार कर दिए और भाग निकले। किसी अन्य ड्राइवर ने पुलिस को फोन किया और उसे हॉस्पिटल की इमरजेंसी में लाया गया।

अब वह जिंदगी और मौत के बीच झूल रहा था।

कुलजीत और उसकी दो साल की बच्ची का भविष्य सोचकर मैं पूरी तरह हिल गई, समझ नहीं आया कि कैसे एक रात में सारी चीजें बदल गई। उसे गले से लगाया तसल्ली दी और घर चली आई।

घर पहुँचकर भी मन अनमना रहा, दिमाग वहीं अटका रहा। हालांकि ऑस्ट्रेलिया मल्टीकल्चरल देश है और यहाँ साठ से भी ऊपर देशों के लोग रहते हैं पर यदा -कदा ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं। बड़े पदों पर प्रमोशन की बात हो तो काम क्वालिफिकेशन वाले ऑस्ट्रेलियन को ही नौकरी मिलती है। परंतु सामान्यतः ऑस्ट्रेलियन शांतिप्रिय हैं। मैं कुलजीत की मित्र का नंबर ले आई थी तो बराबर टच में थी, शाम होते न होते पूरे भारतीय समुदाय में खबर के साथ रोष भी फैल गया था। उसके मित्रों ने फेसबुक पेज बनाया था ‘सेव सतिंदर’ और लोग बराबर प्रार्थना कर रहे थे कि सतिंदर ठीक हो जाए। उसकी यंग फैमिली से सबको सहानुभूति थी। रात में मैं अजय के साथ कुलजीत से मिलने आई तो काफी लोग अस्पताल के बाहर थे। सतिंदर के मित्रों के अलावा कुलजीत के पार्लर की क्लाइंट्स भी उसे तसल्ली दे रही थीं। पता चला कि कुलजीत और सतिंदर के परिवार के सदस्य भी शीघ्र पहुँचने वाले हैं। मैंने कुलजीत को गले लगाया, तसल्ली दी और चली आई। बड़ी मुश्किल से नींद आई थी, करीब तीन बजे फोन की घंटी बजी। कुलजीत की दोस्त का फोन था, “दीदी, सतिंदर इज नो मोर। डॉक्टर्स उसे बचा नहीं पाए।”

इतना बताकर उसने फोन बंद कर दिया।

उसने एक लिंग फॉरवर्ड किया जिसमें सतिंदर की बॉडी को इंडिया और कुलजीत को इंडिया भेजने के लिए एक लाख डॉलर इकट्ठे करने थे। ऐसे समय में कौन साथ नहीं देता, हमने भी जितना संभव था डोनेट किया और जल्द ही पैसा इकट्ठा हो गया। मैं समझ नहीं पा रही थी कि इतनी जल्दी क्या से क्या हो गया। छह बजे ही कुलजीत के पास जा पहुँची। रोती-सिसकती कुलजीत को गले लगाया, उसकी सूजी लाल आँखें देख मन व्यथित हो उठा। उसे तो अपना होश ही नहीं था, उसके सारे सपने जैसे काल की भेंट चढ़ गए थे। बच्ची को कुलजीत की माँ सँभाल रही थी, ऐसे में माँ से बड़ा सहारा कौन हो सकता था।

इंडिया में अंतिम संस्कार हुआ, पुलिस ने चारों लड़कों को अरेस्ट किया और सजा सुनाई। जिस लड़के ने छुरा मारा था उसे बीस साल की जेल हुई अन्य लड़कों को भी कुछ साल और महीने की पेनाल्टी दी गई।

बाद में पता चला कि कुलजीत तीन महीने बाद अपने भाई के साथ सिडनी आई और दो हफ्तों में सब कुछ समेटकर पंजाब वापस चली गई। किसी को फोन नहीं किया, न ही किसी से मिली। कभी नहीं देखा था कि सपने ऐसे मर जाते हैं।

आज भी जब उसकी यूनिट के पास से गुजरती हूँ, तो उसकी चहकती हुई आवाज को याद करती हूँ, “दीदी, कभी आओ न मेरे पार्लर पर।”

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
८ मार्च की
हार्दिक शुभकामनायें।

Gratulerer med den
internasjonale kvinnedagen
den 8. Mars.

चेहरे

अनीता वर्मा, दिल्ली

सुबह उठकर रोज की तरह शर्मा जी बड़ी मुश्किल से दरवाजे की तरफ अखबार उठाने के लिए जा ही रहे थे कि तभी घंटी बजी। सोचने लगे, कौन हो सकता है? उनके घर तो कोई आता-जाता नहीं।

पत्नी का देहांत हुए दस साल हो गए हैं। बेटा विदेश में रहता है। बेटी बैंगलोर में। कोई रिश्तेदार कोई पड़ोसी कोई भी नहीं। तालाबंदी के समय पर तो कोई वैसे भी नहीं आता-जाता। कामवाली भी आजकल नहीं आती। धीरे-धीरे चल कर दरवाजे तक पहुँचे तो जाली के दरवाजे से झांका।

बाहर कोई लड़की मास्क लगाकर वह हाथों में दस्ताने पहनकर खड़ी थी। “अंकल, मैं आपके नीचे वाले फ्लैट में रहती हूँ। मुझे पता चला आप अकेले रहते हैं।”

शर्मा जी पहले तो चुप रहे। मन में शक होने लगा कि कहीं कोई चोरनी तो नहीं? अकेले समझकर कहीं घर में घुसकर चोरी करके या मारकर चली गई तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। बोले, “आपको क्या काम है?”

लड़की ने हँसते हुए कहा, “अकेली, मैं नर्स हूँ। आज कल कोरोना के चलते घर से बाहर निकलना मना है। सोचा, आपकी तबीयत भी पूछ आती हूँ। और अगर आपको किसी चीज की जरूरत है तो बाजार से ले आती हूँ।”

शर्मा जी को विश्वास नहीं हो रहा था। आज के समय में भी ऐसा हो सकता है। जरूर कोई चक्कर है। बोले, “ठीक है, आप बाहर से ही अपना फोन नम्बर बोलो। मैं नोट कर लेता हूँ। जरूरत हुई तो आपको फोन करूँगा।”

चाय पीते हुए सोचने लगे, मैं पिछले बीस दिनों से घर में ही बंद हूँ। पहले सुबह एक बार नीचे उतरना था, पर अब वो भी नहीं जाते।

तभी फोन की घंटी बजी। बेटी फोन पर हाल-चाल पूछते हुए बोली, “पापा, आप बाहर बिल्कुल नहीं जाना। मैंने आपको साइट्स के लिंक भेज दिए हैं। आप आर्डर कर के घर सब डिलीवरी करवा लेना।

रात को बेटे का फोन आया, ‘पापा, अपना ध्यान रखो। बाहर मत जाना।” शर्मा जी को लगा कि कहें कि वो तो कई सालों से एकांतवास में हैं। उनके लिए यह नया नहीं है। किचन में जाते हुए सोच रहे थे कि आजकल मैं कितना आत्मनिर्भर हो गया हूँ। घर की सफाई, खाना बनाना, अपने कपड़े धोना-सब कुछ तो स्वयं ही कर लेता हूँ। बस, थोड़ा थक जाता हूँ। हाँ पहले जब सुबह नीचे उतरता था तो लोगों से मिलता था या कामवाली आ जाती थी तो थोड़ी बातचीत हो जाती थी। बस, अब तो टी. वी. देखकर ही समय बीतता है।

आज सुबह से पत्नी और बच्चों की याद आ रही थी। जब पत्नी जिन्दा थी तो उसके जन्मदिन पर हलवा बनाती थी और फिर भोग लगाती थी। बच्चे केक लाते थे। अब तो कई साल से अकेले ही जन्मदिन मना लेते हैं।

तभी दरवाजे पर जोर-जोर से घंटी बजने लगी। सोचा, नर्स ही आई होगी। सुबह-सुबह वो ही तो आती है, पर दरवाजे पर पुलिस वालों को देख कर घबरा गए। “जबाब, में एक सीनियर सिटीजन हूँ। अकेला रहता हूँ। एक बार भी घर से बाहर नहीं निकला हूँ।”

तभी एक पुलिस वाला बोला, “सर, हम जानते हैं कि आप अकेले रहते हैं। आपके बेटे ने विदेश से फोन करके बताया।”

“मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे कुछ नहीं हुआ।”

“सर, हम आपसे यह कहने आये हैं कि अगर कोई जरूरत हो तो हमारी हेल्प लाइन पर फोन कर दें।” हम समय-समय पर आपका पता लेने आते रहेंगे। शर्मा जी को विश्वास नहीं हुआ। चुपचाप उनकी तरफ देखते रहे।

सोचने लगे, ये यही पुलिस वाले हैं, जिन्होंने कई दिन तक थाने के चक्कर लगाने के बाद भी बेटे की कार चोरी रिपोर्ट नहीं लिखी थी। कैसे बदल गए’ सोचने लगे, महामारी ने मानवीयता का चेहरा बदल दिया है।

क्या फर्क पड़ता है

मंजू मिश्रा, यू.एस.ए.

एक पत्ता
शाख पर रहे,
या शाख से अलग
क्या फर्क पड़ता है !
टूटा तो भी सूखा
न टूटता तो भी सूखता, उसे तो
अपनी जड़ से उखड़ना ही था!
हाँ, अगर किसी किताब के पन्ने मे,
दबा होता तो...
शायद - कभी इतिहास की तरह
उल्टा पुल्टा जाता !

मेरे गीतों की धुन

डॉ. शोभा बाजपेई

मेरे गीतों की धुन में
झलक रहा मेरा मन
तुम्हें उसे है सुनना।

मेरे विह्वल मन में
एक ठांव है मधुबन
तुम्हें वहीं है रमना।।

मोह है, माया है,
मुक्ति का साया है
निर्गुण, निराकार शिव
सारे जग में समाया है।

शहीद न होने का दुःख

वेद प्रकाश 'बटुक', पूर्व प्रोफेसर, यू.एस.ए.

मिश्रा जी से परिवार के किसी सदस्य को प्यार नहीं था, ऐसा तो नहीं कह सकते, किन्तु उस प्यार को जताने के लिए मधुर वाणी की अपेक्षा व्यंग-विष-भरे कटु शब्दों का ही अधिक प्रयोग होता। बच्चों को सतत यथार्थ अथवा कल्पित अभावों की पूर्ति न होने की शिकायत रहती। पत्नी को एक ओर तो दूसरों की तरह कुबेर न होने का शोक रहता, तो दूसरी ओर यह त्रासदी भी कि वे इतना ओवर-टाइम क्यों करते हैं कि उसके साथ बैठने का समय ही नहीं ढूँढ पाते, अथवा ढूँढना नहीं चाहते। मिश्राजी की समझ में ही नहीं आता था कि वे क्या करें। हाँ, इतना विशाल हो गया था कि वह कुछ भी करें, जीवन के इस चक्रव्यूह से निकल नहीं पाएंगे। एक दिन बिजली की तरह एक समाचार परिवार पर गिरा मिश्रा जी को कैन्सर का भयंकर रोग हो गया है। सारा घर शोक के इस अकस्मात भूचाल से हिल गया।

"रोग इतना बढ़ गया है कि दो महीने से अधिक नहीं जी पाएंगे।" डाक्टर भतीजे ने अपने ज्ञान का परिचय दिया। सबने हाँ में हाँ भरी। घर मिश्राजी के जीते जी शोक-समाधि में बदल गया। ऐसा लगने लगा कि धीरे-धीरे सब शेष जीवन गहन अंधकार में बिताने की कल्पना में डूब गए। सहानुभूति भरे अग्रिम मरसिए भेजने में मित्र-सम्बन्धी भी पीछे न रहे। आग की तरह सब जगह यह बात फैल गई कि मिश्राजी अब कुछ ही दिनों के मेहमान हैं।

एक बात और भी थी। 'आनंद' को जीवन का उद्देश्य मानते हुए भी व्यवहार में जो राहत भारतीय समाज में कष्टों, अनिष्ठाओं और संकट के समय दूसरों से मिलती है, वह सहज-सरल जीवन बिताने में नहीं। पश्चिम में बात-बात में प्रयुक्त "हैव फन" का कोई सही प्रचलित अनुवाद भारतीय भाषाओं में कदाचित है ही नहीं।

अवचेतन मानस में मिश्राजी के परिवार विशेषतः उनकी पत्नी ने शायद यह बात कहीं गहरे बैठा ली थी कि उन्हें अपना शेष जीवन इस करूण कथा का रामायण-पाठ करने मे ही बिताना है। क्या पता कोई भवभूति उन्हें मिल भी जाए, जो करूण रस में पगी इस कथा को काव्य का रूप देकर असर कर दे। प्रकट में अवश्य ही किसी ने इस बात को नहीं कहा।

डाक्टरों से सलाह-मशविरा चलता रहा। कोई मार्ग न देख डाक्टर ने ऑपरेशन कराने की सलाह दी। 'एक प्रतिशत आशा है बचने की'। यह बात भी जोर से सब जगह फैल गई।

लोग सहानुभूति जताने के लिए जमा होने लगे। मन्दिरों में मनौती मनाने के लिए अधिकाधिक जूतियाँ-चप्पलें घिसी जाने लगीं।

सूफियों की मजारें भी खाली न रही, यहाँ तक कि दुश्मनों से भी मन ही मन विनती की गई कि वे अपनी बद-दुआएं न दें।

ऑपरेशन हुआ। दो दिन जीवन और मृत्यु के बीच झूलते हुए मिश्राजी को जब होश सा आया तो मिलने वालों की भीड़ दिखाई दी। डाक्टरों और नर्सों के हजार बार मना करने और झिडकियाँ देने पर भी मिलने वालों की संख्या बढ़ती रही। मिश्रा जी का मन कृतज्ञता से भर गया। कितना प्यार है लोगों के मन में उनके लिए। व्यर्थ ही वे अपने को अकेला महसूस कर रहे थे। मन ही मन यह सोचकर वे अपने पुराने विचारों पर गलानि से भर गए। अपने को धिक्कारने लगे।

डाक्टरों से उत्साह मिलने से या आत्मीय जनों के असीम स्नेह के कारण अथवा हजारों मनौतियों के फलस्वरूप मिश्रा जी महीने भर में ही वापिस घर आ गए। वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। यह भी जिजीविषा-भरी स्फूर्ति से भर गए।

सप्ताह भर लोगों का आना-जाना लगा रहा। वे मिश्रा जी को शुभकामनाओं से लाद रहे थे और प्रभु से लाख-लाख धन्यवाद दे रहे थे। मिश्रा जी का मन कृतज्ञता से भर रहा था, खुशी में डूब रहा था।

फिर जैसे यह तूफान आया था, वैसे ही बिना संकेत-सूचना के कुछ दिन थम गया। मित्रों का आवागमन बन्द हो गया। बच्चों की शिकायतें, पत्नी का कलह अपनी पूर्व-सीमा तक पहुँचने लगे। दूसरे शब्दों में मिश्रा जी के लिए स्थिति पूर्ववत सामान्य होने लगी।

मिश्रा जी की मानों समाधि से तन्द्रा टूटी। उन्हें भीतर ही भीतर शरीर का दर्द बढ़ता सा लगने लगा। जीवन के चक्रव्यूह में वे पुनः अभिमन्यु की तरह अकेले महसूस करने लगे, जिस पर चारों ओर से अपनों के विष-वाणों की वर्षा हो रही थी।

और पत्नी की कुढ़न शायद पहले से भी अधिक बढ़ गई थी। उसे अपने अंधकार की विभीषिका की करूण कथा का रामायण की तरह पाठ करने का अधिकार छिनता सा दिखाई देने लगा था।

हिन्दी में राम

मानस मुकुल त्रिपाठी

हिन्दी हिंद की संहिता, हिन्दी ही कानून।
हिन्दी हिन्दुस्तान की, रग में बहता खून।।
वन्देमातरम गान से, होता हृदय पवित्र।
भूमि भारतवर्ष की, हल्दी कुमकुम इत्र।
राम का नाम लेकर के तर जायेंगे।
पार भव से भी मानस उतर जायेंगे।
नाम पावन है प्रभु का जपा कीजिए।
जन्म सातों तुम्हारे सुधर जायेंगे।
राम सभी के नस-नस में हैं।
राम देश के कण-कण में हैं।
राम वीरता के प्रतिमान बन,
राम हमारे मानस में हैं।

मैं सत्याग्रही क्यों?

आशीष सिंह, रायपुर

आशीष सिंह

मेरी पत्रकारिता ४२ बरस की होने को आई है। इस दौरान अनेक उतार-चढ़ाव मैंने देखा है। मेरे परिचितों को शिकायत रहती है कि मैं कहीं 'टिक कर' कार्य नहीं कर सका। यह सच भी है। युगधर्म, नवभारत, अमृत संदेश, नव भास्कर, भास्कर, हरि भूमि और राष्ट्रीय हिन्दी मेल और अब जनता से रिश्ता है। अखबार में हूँ।

सही है मैं कहीं स्थायी न रह सका पर उसके पीछे मेरी सिद्धांतवादिता और सत्य निष्ठा प्रमुख कारण है। वैचारिक मतभेद रहे, पर अपने सभी संपादकों से मेरे व्यक्तिगत संबंध हमेशा ही बहुत अच्छे रहे। संभवतः यही वजह है कि कुछ प्रतिष्ठानों में दो-तीन बार मैं पदोन्नत होकर गया। यहाँ मतभेदों पर चर्चा करना मेरा अभिष्ट नहीं है। फिर भी मैं सत्य के प्रति आग्रही क्यों हूँ? उस प्रसंग का उल्लेख मैं अवश्य करना चाहूँगा क्योंकि वह मेरे अंतर्मन में बहुत गहरे पैठे हुए हैं।

अभनपुर ब्लाक में परसदा हमारा पैतृक ग्राम है। दादाजी के स्वर्गवास के बाद वहाँ की व्यवस्था संभालने पिताजी को गाँव जाना पड़ा। परसदा में मिडिल स्कूल था, पिता जी वहाँ प्रधान अध्यापक हो गए। एक डेढ़ वर्ष के भीतर ही उन्होंने न सिर्फ खेती किसानी के कार्यों को सुव्यवस्थित कर लिया बल्कि नए बैल खरीदे और बैलगाड़ियां भी तैयार करवा ली। स्कूल में और गाँव में भी उनका दबदबा कायम हो गया। गांव के प्रमुख और प्रतिष्ठित सज्जन थे दाऊ रामकृष्ण मिश्र। वे पिताजी को पुत्रवत मानते थे। उनसे रिश्तेदारी भले ही नहीं थी, पर घरोबा था।

सब कुछ सुचारू चल रहा था। पर नियति को यह स्वीकार नहीं था शायद। गर्मी के दिन थे हमारा विश्वस्त और पुराना नौकर था उस दिन उसकी लापरवाही से पशुओं को पानी नहीं मिला था। इस मामले पर पिताजी ने उसे फटकार लगाई विवाद बढ़ गया... और इतना बढ़ा कि पंचायत बुलाने की नौबत आ गई। पिताजी को पंचायत के सामने उपस्थित होना था।

हमारे घर के ठीक सामने 'हवेली' थी। पंचायत हवेली में बैठती थी। उसी दिन दाऊजी गाँव में नहीं थे। पंचायत में नौकर ने पिताजी पर गाली देने का आरोप लगाया। पिताजी ने घटना बताई, डांट-फटकार को स्वीकार किया, परंतु गाली देने से इंकार किया। पंचायत में कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जो पिताजी की बढ़ती प्रतिष्ठा और दाऊ रामकृष्ण से निकटता से ईर्ष्या रखते थे। संभवतः उन्हीं की शह पर नौकर ने पंचायत बुलाई थी। उन व्यक्तियों ने बैठक में एक स्वर से कहा कि - 'महाराज तोला दंड दे बर परही, तैं गाली दे हस।' पिताजी बार-बार इंकार करते रहे, पर पंचायत ने फैसला दिया 'दंड' तो देना पड़ेगा। इतना सुनते ही पिताजी गुस्से से तमतमा गए। वहीं खड़े होकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि - "माता-पिता और ईश्वर की सौगंध अभी इसी समय गाँव का त्याग करता हूँ।" कुछ लोगों ने रोकने का प्रयास किया, पर उन्हें मनाना संभव न था। पिताजी धोती और बनियान पहने थे वैसे ही निकल पड़े। मैं और अनुज संतोष भी उत्सुकतावश पंचायत की बैठक को देखने हाफ पैंट और बनियान पहने वहीं थे, हम दोनों भी उनके पीछे चल पड़े। घर वैसा ही खुला पड़ा था। माँ पारिवारिक कार्यक्रम के सिलसिले में अपने मायके ओटेबंद गई थीं। मैंने और संतोष ने भोजन बनाया था, वह सब धरा का धरा रह गया। पिताजी के साथ हम लोग भी गाँव छोड़ चुके थे। रात नदी की रेत पर बीती। सुबह हम तीनों रायपुर के लिए रवाना हुए। २२ किलोमीटर का सफर पैदल तय किया था हमने। उस समय देखा था। बाबू जी ने एक झटके में गाँव छोड़ दिया था। वहीं से मेरे मन में सच के लिए, अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए कुछ भी करने का जज्बा पैदा हुआ, मैं मानता हूँ।

नमक

डा० कुंअर वीर सिंह मार्तण्ड, कोलकाता

डालो जमकर तेल मसाला दे लो खूब बधार,
पर चुटकी भर नमक बिना तो हर सब्जी बेकार।
नमक जहर है पर जीवन में है यह बहुत जरूरी,
इसके बिना रसोईघर की सूची रहे अधूरी।
चाहे जितना मीठा खा लो पी लो ठंडे पेय,
पर नमकीन बिना खाने को मिले न पूरा श्रेय।

नमक बहुत है इस दुनिया में सागर भरा पड़ा है,
इसलिए तो सबके ऊपर सीना तान खड़ा है

खाकर नमक करे जो धोखा वे हैं नमक हराम,
ऐसे लोगों से ही होता देश जाति बदनाम।
फर्ज नमक का पूरा करते वे हैं नमक हलाल,
इन लोगों पर कभी न कोई उठता कहीं सवाल।

अंग्रेजी सरकार नमक पर कर थी लगी लगाने,
तब गांधी दांडी यात्रा कर पहुँचे नमक बनाने।
उन्हीं दिनों में प्रेमचंद ने लिखी एक कहानी,
नमक दरोगा नाम रखा ने जानी पहचानी।

नमक इश्क का चख लेते जो बनते मजनू लैला,
सुंदर लड़को को कहते नमकीन बड़ा है छैला।
जिसने पैसा खातिर जमकर भ्रष्टाचार किया था,
बोला मैंने तो सब्जी में नमक समान लिया था।
ज्यादा नमक अगर खाओ तो प्रेशर है बढ़ जाता,
कम खाने से सब्जी में कुछ स्वाद नहीं आता।

तुम किसी के जले कटे पर कभी नमक छिड़कना,
सदा सभी के साथ कष्ट में सह-मर्मी बन रहना।
बोलो तुम्हीं चलेगा कैसे नमक बिना ये जीवन,
सबसे सस्ता नमक मगर ये ही होता जीवन धन।

गूँज

जय वर्मा, ब्रिटेन

अमिता एक लंबे समय से बराबर कुछ खोज रही थी। वह खोज किसी वस्तु या जगह की नहीं थी कि जिसके बारे में वह किसी से कुछ पूछ सकती। वास्तव में उसे खुद भी मालूम था कि वह क्या खोज रही थी? एक आवाज़ उसके कानों में नहीं बल्कि मस्तिष्क में गूँजती रहती थी। उसके अवचेतन मस्तिष्क में कुछ धुंधली स्मृतियाँ उसे रह-रह कर छू जाती थीं।

अमिता को पियानो बजाने का बहुत शौक था। संगीत केवल उसकी रूचि ही नहीं आवश्यकता भी थी। पियानो का ट्यूटर उसे सिखाने के लिए घर पर आता था। कभी-कभी वह पियानो पर अपनी मनपसंद धुन बजाती और विस्मय करती कि उसके मन में किस बात की प्रसन्नता थी।

यू.के. के माहौल में अमिता तीस वर्षों से रह रही थी। संजय के साथ शादी के तुरंत बाद ही वह यहाँ आ गयी थी। अब उनके दोनों बच्चे सिया और अबीर भी बड़े हो गये थे। अमिता का भारत से बड़ा लगाव था। इतने वर्षों के बाद भी वह इंग्लैंड में स्वयं को पूर्णतया बसा हुआ महसूस नहीं करती थी। उसके व्यवहार को लेकर समय-समय पर सभी चिंतित हो उठते थे। अमिता स्वयं इस बारे में असहाय एवं असमर्थ थी। उसके पति संजय भी बच्चों के साथ मिलकर अमिता को समझते। जिंदगी की भाग-दौड़ में अमिता काफी व्यस्त रहती परन्तु कभी-कभी खाली समय में वह उदास हो जाती थी और सोचती कि उसके साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है? इंग्लैंड में बसने के लिए तो लोग अपने जीवन में क्या-क्या समझौते करते हैं। किंतु चित्त पर किसका वश चलता है। प्रसिद्ध हिन्दी सिनेमा मधुमती और महल की तरह वह मस्तिष्क की उस अनुगूँज को पाना चाहती थी।

अपनी बेटी सिया की शादी के समय अमिता छटपटा कर रह गई थी। सिया ने अपनी शादी के स्वागत समारोह में भारत जाने के लिए साफ मना कर दिया था। पति विकास भी सिया को भारत चलने के लिए मना नहीं पाया था। माँ की भावनाओं को समझने की उसने कोई चेष्टा नहीं की थी। छोटा सा १५० घरों वाला गाँव माखर, मेरठ से करीब २० मील दूर पर है। अमिता का जन्म इसी गाँव में हुआ था। उसके माता-पिता अब भी वहाँ रहते हैं। अमिता केवल १० वर्ष की थी तबसे उसका नाता इस गाँव से महज औपचारिक सा रह गया था। लड़कियों के लिए पढ़ाई की ठीक व्यवस्था न होने के कारण वह अपने चाचा-चाची के पास मेरठ पढ़ने के लिए चली गयी थी। आरम्भ में कुछ दिनों तक तो वह हर छुट्टियों में माँ और पिताजी से मिलने घर चली आती थी। पढ़ाई, शादी और फिर यू.के.। उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया था। किन्तु बचपन के दिन कहाँ भले जाते हैं? लगभग ५० साल पहले, मेरठ से माखर का कच्चा रास्ता नहर के किनारे-किनारे जाता था जिस पर केवल बैलगाड़ी और ट्रैक्टर ही जा सकते थे। किंतु अब तो पक्की सड़क बन चुकी है। नहर पर पक्का पुल बन जाने से मोटर बाईक ही नहीं कारें भी दौड़ती हैं। गाँव अब पहले जैसा गाँव नहीं रहा। गुरूकुल तो पास के गाँव में पुराने समय से था। अब मेरठ रोड पर एक प्राइवेट स्कूल भी खुल गया है जिसमें वाजिदपुर, सिरसली, जोहड़ी और आस-पास के गाँव के बच्चे अंग्रेजी पढ़ने आते हैं। माखर भी एक छोटा मेरठ हो गया है जहाँ अब बिजली भी पहुँच गई है। गाँव की औरतों को पानी कुएँ से नहीं खीचना पड़ता। क्योंकि प्रत्येक घर में नल लग गये हैं। घर की जरूरतों का सब सामान अब गाँव में उपलब्ध है।

लंदन में अमिता के बेटे अबीर की शादी की बातें चलने लगीं।

अमिता ने बड़े ही प्यार के साथ बेटे से साफ-साफ कहा, “तुम्हारी उम्र अब शादी की हो गई है। कोई लड़की अगर तुम्हें पसंद है तो हमें बता देना। हम तुम्हारी शादी तुम्हारी पसंद से ही करेंगे। हम दोनों की इच्छा है कि तुम शादी के बाद अपनी पत्नी के साथ नाना-नानी एवं समस्त परिवार का आशीर्वाद लेने के लिए भारत चलना। हमारा गाँव छोटा जरूर है किन्तु अब वहाँ सब कुछ मिलता है। सिया की शादी के समय भारत जाने के लिए मैं बहुत दबाव नहीं डाल पायी थी, लेकिन तुम मुझे निराश मत करना।”

“माँ! मैं स्वयं आपसे इस सिलसिले में बात करने वाला था। आप अपनी होने वाली बहू बैलरी से तो एक बार मिल चुकी हैं। वह एक पढ़ी-लिखी फ्रेंच लड़की है। हम दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है। आपकी भावनाओं को ध्यान रखते हुए मैंने बैलरी से भारत चलने की बात की थी। इस विचार से बह बहुत खुश है। गाँव देखने के लिए भी बड़ी उत्सुक है। माँ, शादी के बाद हम सब जरूर चलेंगे।”

माँ ने उठकर बेटे का मस्तक चूमा और मुस्कराते हुए पति संजय से बोली, “देखा, अपना बेटा कितना समझदार हो गया है!.. छोटा बच्चा अब बड़ों जैसी बातें करने लगा है। चलो जल्दी ही इसकी भी शादी कर दें। आप क्या सोचते हैं?”

संजय का बड़ी हमेशा की तरह छोटा सा जवाब, “जैसा तुम ठीक समझो।”

‘मुराद पूरी हुई। अमिता ने राहत की सांस ली। अबीर की शादी के बाद जब गाँव जाऊँगी, बड़े बरगद वाले सैयद की मजार पर दिया जलाकर चादर चढ़ाऊँगी।’

बहुत ही धूम-धाम से अबीर और बैलरी की शादी, भारतीय रीति-रिवाजों से लंदन में सम्पन्न हुई। भारतीय, फ्रेंच, अंग्रेजी एवं अन्य नागरिकता के लोगों ने वर-वधू को अपने-अपने उपहार देकर आशीर्वाद दिया। भारतीय लिबास में वैलरी बहुत सुन्दर लग रही थी। शीघ्र ही बैलरी ने अपने आपको भारतीय परिवेश में ढाल लिया। शादी के दो माह बाद अमिता ने अपने परिवार के साथ अप्रैल के महीने में भारत जाना निश्चित किया।

माखर में यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि गाँव की बेटी पहली बार अपने पूरे परिवार के साथ भारत आ रही है। गाँव उनके स्वागत के लिए उसी प्रकार सजाया गया था जैसा, संभवतः, श्री राम-सीता और लक्ष्मण जी के लिए, त्रेता युग में अयोध्या सजाया गया होगा। महिलाओं ने कई

स्वागत गीत और नृत्य तैयार किए। बालक वृद्ध सभी किसी न किसी तैयारी के काम में व्यस्त थे। जिस पाठशाला में अमिता ने प्रारम्भिक शिक्षा पाई थी, वहाँ के शिक्षक और विद्यार्थी खासतौर पर उत्साहित थे। कागज की रंग-बिरंगी झंडियों से गलियां झिलमिला रही थी। नहर की पुलिया से लेकर घर तक सड़क के दोनों किनारों पर लाल और सफेद रंग के चूने की लकीरें खींची गयी थीं। गेंदा के फूलों की महक वातावरण में चारों ओर फैली हुई थी।

एयर इंडिया के ऐरोप्लेन से 'इन्दिरा गाँधी हवाई अड्डे' पर जैसे ही वे लोग बाहर निकले कि उनके शरीर बाहरी गर्म तापमान से झुलसने लगे। सबने इंग्लैंड के गर्म कपड़ों को उतारना शुरू कर दिया। थकान एवं जैट लेग की वजह से सबको नींद आ रही थी। बैलरी तो अपने आँखों से सब कुछ देखना और भारतीय संस्कृति को समझना चाहती थी। हरे-भरे आम के बाग तथा लहलहाते गेहूँ और गन्ने के खेत देख कर वह बुहत खुश हुई।

"मुझे मालूम नहीं था कि भारत में इतनी हरियाली है।" बैलरी की आँखें आश्चर्य से चारों ओर घूम रहीं थीं।

माखर पहुँचने पर बैंड-बाजे के साथ उनका भव्य स्वागत हुआ। सबको दो-दो लड्डुओं की थैली बाँटी गयीं। अमिता के माता-पिता ने अपने सभी बच्चों को प्रेमाश्रुओं से भिगो दिया। स्वागत समारोह सम्पन्न होते-होते रात का एक बज गया था। थककर अपने-अपने कमरों में सब सोने के लिए चले गये।

सुबह चार बजे मस्जिद की अजान सुनकर वह उठ गयी। पड़ोस से आती हुई मुर्गे की आवाज से अमिता को अहसास हुआ कि वह भारत ही में है। खिड़की के बाहर झाँककर देखा कि उगते हुए सूरज के बिखरे हुए लाल रंग आसमान में फैले हुए थे। किसान ट्रैक्टर में हैरो जोड़कर अपने खेतों की तरफ जा रहे थे। वह दृश्य उसको बड़ा मनमोहक लगा।

सुबह की पहली किरण के साथ लोगों का आना-जाना शुरू हो गया। मंदिर की मधुर घंटियों ने ब्रह्म मुहूर्त को सुहाना बना दिया।

दूर से आती हुई एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनकर अमिता दौड़ती हुई दरवाजे तक पहुँची। सारंगी की मधुर लय सुन कर वह चौखट पर ठिठक गई। खुशी के मारे जोर से चिल्लाई... "यही है... यही है जिसको मैं बहुत दिनों से खोज रही थी।"

आवाज़ सुनकर सब लोग बाहर दरवाजे पर आ गये। अबीर और सिया ने पूछा, "माँ, क्या हुआ?.. क्या मिल गया आपको?"

"वही जो मैं वर्षों से खोज रही थी। सुनों और ध्यान से सुनो। यह वही सारंगी की आवाज है, जो मेरे मस्तिष्क से गूँजती रहती थी। वह सारंगी वाला बाबा इधर अवश्य आयेगा। उसके इकहरे शरीर पर लम्बा सफेद अंगरखा होना चाहिए और हाथ में एक काली सारंगी।"

संगीत की आवाज़ धीरे-धीरे नजदीक आती गई। अमिता रोमांचित सी हो गई। उसके दोनों बच्चे माँ का चेहरा देखते रह गये। अब तो आवाज़ एवं गायक दोनों अमिता के दरवाजे पर थे।

अमिता दौड़कर दरवाजे पर पहुँची और झाँकते हुए मुग्ध होकर जल्दी से बोली, "बाबा, आपकी सारंगी का संगीत तो यही है जो वर्षों पहले था, बिल्कुल भी नहीं बदला। समय जैसे कि ठहर गया है।"

"मैंने तो यह संगीत अपने अब्बा से सीखा है। उनके इंतकाल को करीबन १५ साल हो गये हैं। मैं उनके साथ कभी-कभी यहाँ फेरे पर माखर आया करता था। मैंने आपको पहचान लिया है। बचपन से मैं आपको जानता हूँ। आप कैसी हैं?"

"तो... क्या आप बाबा नहीं है?"

"नहीं, मैं तो उनका सबसे बड़ा बेटा मुनव्वर हूँ। शायद आप बहुत दिनों बाद गाँव में वापस आई है?"

"ओह नो! अब मैं बाबा से कभी नहीं मिल सकूँगी?"

"बहन, मैं आपको सारंगी पर बाबा का एक राग सुनाता हूँ।" सारंगी पर उंगलियाँ चलने लगीं और वह गाना गाते हुए वह बाबा की तहर घूमने लगा।

सब कुछ वही था। धुन और संगीत भी वही थे। किंतु वह सारंगी वाला बाबा नहीं था। अमिता निराश हो गई। सारंगी की धुन भी उसे खुश नहीं कर पा रही थी।

"शाबाश मुनव्वर... तुम्हारे संगीत में तो वास्तव में जादू है।" संजय ने अपनी जेब से निकाल कर बहुत सारे रूपये मुनव्वर को इनाम में दे दिये।

सारंगी वाले ने अमिता को बाबा के संगीत की बनी एक सी.डी. थैले में से निकाल कर दी जो उनके लिए किसी एक प्रशंसक ने बनवाई थी। अमिता इस उपहार को पाकर फूली नहीं समाई।

अबीर ने सब को बताया कि माँ किस प्रकार अनेक वर्षों से इस धुन को ढूँढ रही थीं।

वैलरी ने, जो मनोविज्ञान में विशेषज्ञ थी, अमिता ने अनुरोध किया, "माँ, मुझे उस सारंगी वाले बाबा के बारे में कुछ बताएँ जो आपको अब भी याद है। आई विल बी ग्रेटफुल टू यू।"

अमिता आँखें बंद करके एक सोफे पर बैठ गयी। घर सब सदस्य उस के आस-पास उत्सुकता से सुनने के लिए इकट्ठे हो गये।

"ऐसा मालूम होता है कि कल ही की बात है। सारंगी वाला बाबा हमारे गाँव आया करता था। साँवला रंग, लम्बा कद, सफेद खद्दर का अंगरखा और राजस्थानी सफेद पग्गड़- जैसे किसी किताब से बाहर आकर हमारे सामने खड़ा हो गया हो। उसके एक कंधे पर सारंगी तथा दूसरे कंधे पर सफेद कपड़े का बना थैला लटका होता था। बाबा का शांत स्वभाव और चेहरे का तेज सबको आकर्षित करता था। सारंगी उनकी अमूल्य निधि थी। समस्त जीवन का अनुभव उनके स्वर एवं तारों की झंकार में सिमट गया था। बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में अपने खेल-कूद छोड़कर बाबा की मन-मोहक सारंगी और रागिनी को सुनने तालाब के किनारे इकट्ठे हो जाया करते थे। घर की सब औरतें काम-काज जल्दी से खत्म करके बाबा की सारंगी सुनने बैठ जाती थीं।"

सिया ने पूछा, "माँ, उनके संगीत की क्या विशेषता थी?"

"भारतीय परंपराओं की प्रचलित रागिनियाँ, महान

राजाओं की गाथाएं तथा गोपीचंद और पूरणमल के किस्से बाबा गाकर सुनाते थे। कोई भी अगर अपनी पसंद की रागिनी गाने के लिए कहता, खासतौर से बड़े-बुजुर्ग लोग तो बाबा के चेहरे पर एक अनोखी चमक आ जाती। 'मुकर्रर' शब्द का इस्तेमाल तो गाँव में कोई नहीं करता था परन्तु खिड़कियों के पीछे चिलमन से झाँकती हुई बहू-बेटियाँ अपने छोटे बच्चों के द्वारा फिर से गाने की फरमाइश भिजवाती थीं।"

अबीर को घूँघट में से औरतों के बोलने के अंदाज़ की बात बड़ी रोचक लगी, "माँ फिर क्या हुआ?"

"गाँव के लोग धीरे से नीम के पेड़ की छाया में बिछी हुई चारपाइयों पर एक-एक करके आकर बैठ जाते। घर और खेतों की व्यस्त दिनचर्या से जिन्हें एक पल की भी फुर्सत नहीं होती, वे सभी उस लम्हें को जी लेना चाहते थे। ज्ञान, भक्ति और वीर गाथाओं को बाबा लयबद्ध करके सुनाते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि सरस्वती, ईश्वर तथा परमात्मा यहीं विराजमान हैं। सुनने वाले मौन होकर स्वर-सागर की गहराई में डूब जाते। दोपहरी का शांत वातावरण संगीत की झंकार से गुंजित हो उठता था। उनके गानों में भारतीय दर्शन तथा इतिहास की कहानियाँ विद्यमान होती थीं। श्रोताओं की एकाग्रता अपनी चरम सीमा पर होती और सब तन्मय होकर झूम उठते थे। पशु-पक्षी, खग और मृग अपनी चिहुँक तथा छलाँगों को भूल जाते थे। बाबा की संगीत के वे फरिश्ते थे। उनके साथ कोई तबला या दूसरा साज नहीं होता था। अकेले ही वे अपनी जादू की सारंगी के खिंचे तारों को छूते और सबका मन मोह लेते थे। गाँव के किसी परिवार से अगर कोई एक वहाँ उपस्थित न होता, तो उसके बारे में अवश्य पूछते कि वे कहाँ हैं?

"माँ उनको इनाम क्या मिलता था?.. उनकी कमाई कैसे होती थी?" वैलरी ने कौतूहल के साथ पूछा।

"बाबा को सब घरों से गेहूँ के आटे का भरा हुआ एक-एक कटोरा मिलता था। आस-पास के तीन-चार गाँवों में सारंगी का फेरा लगाते हुए वह हमारे गाँव आया करते थे।" यह बताकर अमिता खामोश हो गयी।

सभी जिज्ञासापूर्वक अमिता की ओर देखने लगे। उनके मन में और भी जाने की अभिलाषा थी।

बाबा की सारंगी की आवाज़ अब सभी को वातावरण में गूँजती हुई महसूस हो रही थी।

सुरेशचन्द्र शुक्ल की रचना धर्मिता का लोकर्पण

किरोड़ीमल कॉलेज रायगढ़ द्वारा २५-२६ फरवरी २०२३ को आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन सत्र में नॉर्वे के प्रवासी साहित्यकार सुरेशचंद शुक्ल के साहित्य पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार में पदस्थ डॉ. दीपक पांडेय और डॉ. नूतन पाण्डेय के परिश्रम का फल है।

लोकार्पण अवसर पर समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर पद्म श्री लीलाधर जगूड़ी, पद्म श्री हलधर नाग ओड़िया साहित्यकार, प्रो विनय पाठक, भूतपूर्व अध्यक्ष लोक सेवा आयोग छत्तीसगढ़, प्रवासी साहित्यकार डॉ. अनीता कपूर, कैलीफोर्निया और डॉ. दीपक पांडेय और डॉ. नूतन पांडेय।

प्रेम शंकर शुक्ल (भोपाल) की तीन कवितायें

पिछला साल

सब कहते हैं
बहुत भयावह रहा पिछला साल
हर बरस की तरह
पिछले साल की शुरूआत में
भी दी गयी शुभकामनायें

एक-दूसरे को दी गयीं मंगलकामनाएँ
पहुँची क्यों नहीं एक-दूसरे तक
परस्पर के लिए दिशाओं की बधाइयाँ चलीं तो
पर पायीं क्यों नहीं अपने गंतव्य।

बहुत जटिल लग रहा है यह सब समझना
याद आते हैं आघात ही आघात
गहरी प्रश्नचर्या में लगा हुआ है दिमाग़
लेकिन सूझ नहीं रहे हैं मुकम्मिल जवाब

पिछले साल के अपशकुन
इस नए साल की मेरी शुभकामनाएं नहीं रोके
सुबह-सुबह यही बुदबुदाता हूँ
डर से मन काँपता है!

मेरे देश

मेरे देश! तुम्हें खाँसी आ रही है बहुत
जहरीली कर दी गयी है
तुम्हारी हवा
और दवा भी
बहुत महँगी हो गयी है।

चला जाता है एक दिन

चला जाता है एक दिन
बटोर कर कोई
अपनी सारी उजास

हताश मन हम
उसके लौटने की राह
जोहे रहते हैं।

आने भर की नहीं
लौट कर नहीं आने की भी राह होती है।

सिसकियां

प्रियम्बरा

'परी ने जैसे ही छड़ी घुमाई कद्दू रथ बन गया। छोटे- छोटे चूहे रथ के घोड़े बन गए। परी ने छड़ी घुमाई और सिंड्रेला की फटी पुरानी ड्रेस सुंदर, राजकुमारियों के गाऊन जैसी हो गई। देखते ही देखते सुंदर चमचमाती चांदी की जूतियां सिंड्रेला के पैरों में थीं। सिंड्रेला खुशी से नाच उठी।'

'मम्मा परी कैसी होती है?'

'परी..उम्म... बिल्कुल तुम्हारी तरह'

'नो मम्मा परी आपकी तरह होती है। मेरी तरह तो सिंड्रेला..। मम्मा आगे की कहानी बताओ न?' पायल ने बिन्नी के माथे पर हाथ फेरते हुए पूछा 'क्यों मैं कैसे परी हुई ?' 'पलक झपकते आप मेरी हर विश पूरी नहीं करतीं?' पायल हंसते हुए उसे गुदगुदी लगाने लगी। दोनों खिलखिलाने लगीं। बिन्नी एक साल की भी नही थी जब प्रेम की मौत हो गई थी। बिन्नी प्रेम की इकलौती निशानी थी। उसकी तोतली बोली पायल की जिन्दगी से सारी कड़वाहट मिटाकर मिठास घोल जाती। उसकी हँसी अँधेरे जीवन में उजास भर जाती। कभी वह उदास होती बिन्नी अपनी नन्ही हथेलियों से उसका माथा सहलाने लगती और सच में उसकी सारी थकावट, सारी उदासी उड़न-छू हो जाती। वह घंटो टकटकी लगाए बिन्नी को निहारती रहती। उसकी आँखें बिलकुल प्रेम जैसी थीं। वैसी ही चमक, गहरी भूरी, एकदम हंसती हुई सी, जिसे देखकर वह अपने सारे दुख, सारी परेशानी भूल जाया करती थी। उसके जीने की वजह सिर्फ और सिर्फ बिन्नी थी। पलकें झपकाती हुई तोतली जुबान से वह दुनिया जहान की बातें कर लेती और पायल, चाहे समझ आए या न आए, उसकी बातों से अपने दिन काट लेती। पायल और प्रेम का साथ तीन साल का रहा, सिर्फ तीन साल और उन तीन सालों में पायल ने 'जीने' का मतलब समझा। इश्क को जाना। इश्क कैसे विद्रोही बना देता है यह सब उसने देखा-महसूस किया। हफ्ते-दस दिनों में प्रेम-पायल एक दूसरे से ऐसे जुड़े कि फिर अलग

प्रियम्बरा

नहीं हो सके।

पायल का बचपन समुद्र की लहरों के साथ बीता था। जवानी की दहलीज पर जब उसने कदम रखा तब ये लहरें उसकी दोस्त बन गई। सुबह सुबह जब फेनिल लहरें सफेद चादर सी बिछी होतीं, पायल बौराई सी उन पर दौड़ लगाती। उन लहरों से उसकी पक्की वाली दोस्ती थी... और सागर से रोज मिलने का अनुबंध। जिस दिन उनसे मुलाकात नहीं होती इसे अपनी दिनचर्या में कमी लगती, एक खालीपन महसूस होता। शाम ढलने से कुछ घड़ी पहले अपनी साइकिल से वह समुद्र तट तक आती। साइकिल को किनारे खड़ी कर के आलथी-मालथी मार कर आँखे बंद कर बैठ जाती कि जैसे किसी तपस्या में लीन होने से पहले की तैयारी हो। अँधेरा घिर आता तो भी किनारे पर बैठी आंखें बंद किये लहरों के शोर सुनती। कभी-कभी पास आकर लहरें हौले से छू जाती... और वह हँस पड़ती। उन लहरों से वह बातें करती, आखिर उससे पक्की वाली दोस्ती जो थी। वे कभी उसे उछालतीं तो कभी दूर भाग जातीं, कभी झूला झुलाती तो कभी पैरों को निथार जातीं। इस दुनिया में पायल का और तो कोई नहीं था बस ये लहरें ही उसकी अपनी थीं। दिन-भर होम डिलीवरी का काम और रात में पढ़ाई। सुबह और शाम उसकी अपनी थी, जिस पर सिर्फ उसका अधिकार था। यूँ तो सूर्य का आना और जाना दोनों ही उसे बेहद प्रिय था। उस दौरान जो आसमां की रंगत होती, हर बार नई लगती, अनोखी लगती, जादुई लगती, लेकिन समुंदर के किनारे बैठ कर सूर्यास्त देखना उसका पसंदीदा शगल था। इस दौरान आसमां और लहरें अपनी खूबसूरती के चरम पर होते...और फिर अचानक सब कुछ खत्म...यहाँ से वहाँ तक घुप्प अँधेरा... इस थोड़े से समय में पूरी जिन्दगी दिख जाती। बचपन की उपेक्षा से लेकर अब तक का संघर्ष और हर रोज जिन्दगी को जोश के साथ जीने की जीवटता...पायल की जिंदगी यही थी।

उस रोज तेज बारिश हो रही थी। पायल का सागर के पास पहुँचने का समय निश्चित था और अटल भी। वह रेनकोट पहने साइकिल पर सवार समुद्र तट तक पहुँची तभी साइकिल फिसल कर पलट गई और वह चारो खाने चित्त। वह पूरी तरह भीग चुकी थी और कांप भी रही थी। प्रेम दोस्तों के साथ वहीं बीच पर बने शेड में बियर का मजा ले रहा था। शेड के कानफोडू संगीत और जगमग रौशनी में जैसे सबकुछ जोश और रंगीनियत से भरा हुआ था।

शाम धुंधलाने लगी थी। बारिश थम चुकी थी। लाल टॉप और आसमानी जीन्स में पायल दूर से नजर आ रही थी। प्रेम की नजर उस तक गई और वहीं जाकर थम गई। पायल अपने दोनों हाथों से दोनों घुटनों को बांधे हुए चेहरे को अपने घुटनों में छिपाए बैठी हुई ऐसी लग रही थी जैसे कोई शिला तराशे जाने के लिए किसी शिल्पी के इंतजार में हो। अचानक घुप्प अंधेरा हो गया और वह प्रेम की नजरों से ओझल हो गयी। प्रेम को ऐसा लगा जैसे कोई उसकी अपनी पसंदीदा चीज खो गयी हो। वह बौखला गया। कुछ थूबर्ग स्ट्रांग बियर का सुरूर कुछ हार्मोन्स का असर, वह बिल्कुल पागल हो उठा और भागता हुआ उस ओर गया जहां अंधेरा छाने से पहले वह बैठी हुई

थी। वहाँ अब कोई नहीं था। वह आँखे फाड़-फाड़ कर इधर उधर उसे ढूंढने की कोशिश कर रहा था पर वह कहीं नहीं थी।

अँधेरे में चमकते रंग-बिरंगे रेडियम के ब्रेसलेट बेचते बच्चे उसके पीछे पड़ गए। '१० रुपये की दो दे देंगे, भइया ले लो।' उन्हें ५० रुपये थमाकर वह आगे बढ़ा। पास में ही सिंकते हुए भुट्टे की सोंधी खुशबू, बारिश और समुद्र की गीली महक के साथ जुगलबंदी कर रही थी। कुछ जोड़े भुट्टे खरीद रहे थे। एक बांसुरी वाला बांसुरी पर झूम-झूम कर बजा रहा था –

"ये मौसम की बारिश, ये बारिश का पानी.."

बच्चे और किशोर उस बांसुरी वाले को घेरे हुए थे। लहरों की आवाज के बीच गार्ड की हिदायती सीटी एक अलग रीमिक्स पैदा कर रही थी। शाम ढल चुकी थी। रात घिर आयी थी पर समुद्र तट पर रौनक बरकरार थी। प्रेम सबके चेहरे पहचानने की कोशिश कर रहा था। उन चेहरों में वह एक चेहरा नहीं था जिसके मोहपाश में बंधा वह बौराया फिर रहा था। कच्ची उम्र में ही पहली नजर में प्रेम होने की गुंजाईश ज्यादा होती है। ये प्यार है या आकर्षण, प्रेम समझ नहीं पा रहा था। दिमाग, सोच, किसी चीज पर उसका काबू नहीं था।

कॉलेज का फाइनल एग्जाम देने के बाद वह छुट्टियां मनाने दोस्तों के साथ गोआ आया था। बस यहीं से उसकी कहानी में पायल जुड़ गई। उस शाम एक झलक देखने के बाद फिर किसी और लड़की को देखने की उसे फुर्सत ही नहीं रही। अगले दिन पायल के इंतजार में प्रेम सुबह से उसी शैक्स पर जा बैठा। चिलचिलाती धूप, सागर की लहरों पर अठखेलियाँ कर रही थी। हवा में एक अजीब सी महक थी। महक से उबकाई आ रही थी पर पायल की झलक पाने की उम्मीद में ये सारी परेशानियां छोटी थीं।

बेकल मन से प्रेम गिटार के तार छेड़ रहा था। नजरें सागर के तट पर आते जाते हर शख्स के चेहरे को पहचानने की कोशिश कर रही थी। दिन बीतने के साथ प्रेम को निराशा हाथ लगी। दोस्त जबरन उसे होटल ले गए। होटल क्या था, घर था जिसे इन लोगों ने पंद्रह दिनों के लिए किराए पर ले रखा था।

कोई तो तार जुड़ गया था उस लड़की से...कुछ तो बात थी उसमें जो अजनबियों के बीच उस पर निगाह टिक गई और ऐसी टिकी की होश हवास सब गुम हो गए। पूर्व जन्म का कोई नाता था...या पहली नजर का प्यार। कुछ तो बात थी। रात उनींदी रही। सुबह मौसम सुहाना हो रहा था। प्रेम फिर से गिटार लेकर समुद्र के किनारे पहुंच गया। आज सागर की महक उसे भा रही थी। मद्धम हवा, इक्के दुक्के लोग वहां नजर आ रहे थे। वहीं किनारे बैठकर वह गिटार बजा रहा था तभी उसकी नजर लहरों पर दौड़ लगाती, नाचती पायल से टकराई। वह स्तब्ध रह गया। नीले हॉफ पैंट और सफेद टॉप में वह मासूम, प्यारी लग रही थी, एकदम पवित्र। उसके कमर तक लंबे बाल खुले हुए थे और हवा से बेतरतीब हो रहे थे जिन्हें सर झटक कर वह बार-बार ठीक करने की कोशिश कर रही थी। वह उसे पहले तो निहारता रहा और फिर उसके पास जाकर खड़ा हो गया। वह सकुचा कर पीछे हट गई। प्रेम ने गिटार बजाते हुए गाना शुरू किया 'सवअम उम सपाम न कव, जवनबी उम सपाम लवन कव' वह अपने साईकिल की ओर बढ़ी। वह उसकी साईकिल के सामने घुटनो पर बैठ कर प्रेम की गुहार लगाने लगा। पायल एकदम घबरा गयी। उसकी आँखों में आंसू छलकने लगे। वह जाने लगी। घबराहट में उसकी साइकिल की चेन भी उतर गई। वह रोने लगी। प्रेम ने चिल्लाकर कहा 'अगर सोचने के लिए समय चाहिए तो ले लो, पर इन दो दिनों में मेरी स्थिति का अंदाजा नहीं लगा सकती। सुनो मेरा नाम प्रेम है और मैं.. मैं तुम्हें प्रेम से ही रखूंगा। अगर मेरी बातों पर जरा सा भी यकीन हो तो मैसेज जरूर करना।' चिल्लाकर प्रेम ने अपना मोबाइल नम्बर बोला। वह साईकिल पर बैठी और देखते-देखते नजरों से ओझल हो गई। दूसरे दिन वह नहीं आई और ना ही कोई मैसेज आया। एक-एक दिन कर के पूरा हफ्ता बीत गया पर न वह आयी और न ही उसका मैसेज आया। प्रेम हर रोज उसी तट पर जाकर गिटार बजाता और इंतजार करता।

सारे दोस्त मिलकर प्रेम का मजाक उड़ाने लगे थे। छुट्टियां खत्म होने में अब हफ्ता भर और रह गया था। एक रोज रात में उसके मैसेज बॉक्स में एक मैसेज आया 'रात की रानी की खुशबू से रात तर - बतर हुई जाती है। दिन में वह रानी खुशबू समेट कहाँ छिप जाती है? मानो न मानो लेकिन कुछ लोगों को अंधकार ही सोहाते हैं...और कुछ रिश्तों को भी!' मैसेज के नीचे बारीक अक्षर में नाम लिखा था 'पायल'। प्रेम को समझते देर नहीं लगी कि ये मैसेज उसी का है और उसका नाम पायल है यानी लड़की ने पहला कदम बढ़ा दिया। वह खुशी से पागल हुआ जा रहा था। उसने दोस्तों को मैसेज दिखाया। दोस्तों ने उस मैसेज का 'ऑपरेशन' कर दिया। निष्कर्ष निकालने के बाद प्रेम को आज्ञा दी गई कि बिना देर किये मैसेज का जवाब दे दिया जाए। प्रेम ने भी दोस्तों के सहयोग से उसी लहजे में लिखा 'आओ कि दिन के उजाले में रिश्तों को एक नाम दे दूं, आओ कि तुम्हारी पलकों पर कुछ हसीं ख्वाब बो दूं, आओ आज तुझे अपनी दुल्हन बना लूँ।'

'आप मेरे बारे में जानते ही क्या हो? बिना जाने प्रेम हो सकता है, शादी नहीं।'

'सागर सा गहरा प्यार है मेरा आजमा के तो देख,
न छोडूंगा दामन पास आकर तो देख।

अपने बारे में बताओ। किससे तुम्हारा हाथ मांगना है वह भी बताओ। '

'मेरे माता-पिता नहीं हैं। मैं यहाँ बिल्कुल अकेली हूँ। मेरा साथी समुंदर है। मेरी बहनें मछलियाँ हैं। मेरी कमाई मेरी सायकिल है। बचपन से किशोर होने तक एक अनाथालय में रही। अब अपने पैरों पर खड़ी हूँ, साथ ही पढ़ाई भी कर रही हूँ। एक कमरे का छोटा सा घर है।'

'मेरे घर पर मेरे पेरेंट्स हैं। पिता जी सरकारी नौकरी में हैं। अपना घर है। पैसे की कमी नहीं है। मैं इकलौता औलाद हूँ। तुम आ जाओगी तो घर मे खुशहाली आ जाएगी।'

'और...?'

'और क्या जानना? प्राइमरी से बॉयज स्कूल में पढ़ा हूँ। मेरी कोई गर्ल फ्रेंड नहीं है.. और कुछ जानना है?'

स्माइली के साथ पायल ने लिखा 'माता -पिता,

रिश्तेदारों को तो समस्या हो सकती है।'

'मुझ पर भरोसा रखो और प्लीज यार जब तक यहाँ हूँ मुझसे मिल लिया करो।'

दूसरे दिन पायल प्रेम से मिलने आई और इसी मुलाकात ने उसके जीवन को हमेशा-हमेशा के लिए बदल दिया। प्रेम ने अपनी छुट्टी हफ्ते भर के लिए और बढ़ा दी। हफ्ता भर साथ-साथ समय व्यतीत करने के बाद दोनों ने तय कर लिया कि उन्हें विवाह के बंधन में बंध जाना चाहिए। प्रेम के दोस्त उनके विवाह के गवाह बने। प्रेम ने पायल को भरोसा दिलाया कि घर पर सब कुछ ठीक होते ही वह उसे अपने पास बुला लेगा। तब तक उन दोनों को यूं ही दूर रहना होगा। पायल तैयार हो गई। कम दिनों में ही दोनों का एक-दूसरे पर प्रेम और यकीन इतना पुख्ता हो गया था कि एक दूसरे के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार थे।

पायल के जिन्दगी में आते ही प्रेम के साथ सबकुछ अच्छा होने लगा। परीक्षा में अच्छे अंक मिले। प्रतियोगी परीक्षा पास कर अच्छी नौकरी मिल गयी, फिर भी हिम्मत थी कि जुटती ही नहीं जिससे घर में इन बातों को कह सके। पायल गोआ की थी और उस पर से अनाथ। माता-पिता-कुल-खानदान का पता नहीं। रिश्ते की अस्वीकार्यता से उसे डर लगता था। उचित समय के इंतजार में प्रेम ने घर में यह बात नहीं बताई। यूँ ही हँसते-खेलते पलक झपकते साल बीत गया।

एक तरफ विवाह के लिए घर वालों ने प्रेम पर दबाव बनाना शुरू किया तो दूसरी तरफ बिन्नी, पायल की कोख में आ गई। प्रेम को घर पर अपने विवाह की बात अंततः बतानी ही पड़ी। घर में कोहराम मच गया। मां ने रोना-धोना शुरू कर दिया- 'ये गोआ की लड़की, न जात का पता, न घर का पता। जाने कौन संस्कारहीन को ले आया? जरूर टोटका की होगी। प्रेम तो भोला है, तभी तो उसको फंसा ली। समाज को क्या मुंह दिखाएंगे।' पिता ने बातचीत करनी बंद कर दी। प्रेम अपनी बात पर अटल था। प्रेम की जिद के आगे आखिरकार पिताजी को झुकना पड़ा। उन्होंने पायल को घर लाने की इजाजत दे दी। समय लगा पर धीरे-धीरे प्रेम के माता-पिता ने पायल को अपना लिया। पायल अलग संस्कृति, अलग रहन-सहन में पली थी। छुटपन से ही अकेले रहने के कारण आत्मनिर्भर थी। सारे काम खुद कर लेती थी। यहाँ घर में बहु बनकर रहना था। अलग परिवेश...अलग परिस्थितियां...अलग किरदार.. एडजस्ट करने में मुश्किलें आ रही थीं। पायल बदल रही थी, धीरे-धीरे प्रेम के परिवार के आकार में ढलती जा रही थी। सच्चा प्रेम हर किसी को बदल देता है। बीते वक्त के साथ उसने भी खुद को प्रेम के घरवालों के अनुसार ढाल लिया।

जब बिन्नी आयी तो रहे-सहे शिकवे भी खत्म हो गए। बिन्नी की एक मुस्कान के लिए सारा घर एक पांव पर खड़ा रहता। कभी हल्की खट-पट भी होती तो प्रेम अपनी चुहल और पायल अपनी समझदारी से उसे सुलझा लेते। प्रेम की माँ से पायल की ट्यूनिंग अच्छी बनने लगी थी। हर पर्व-त्योहार पूरे जोश और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता। प्रेम के माता-पिता को लगता जैसे बिन्नी को सारी खुशियाँ किसी तरह दे दें। घर में खिलखिलाहट गूंजती रहती, रौनकें बनी रहतीं।

इन खुशियों की उम्र कम निकली। एक रात प्रेम के सीने में तेज दर्द उठा और देखते-देखते दिल ने सांस का साथ छोड़ दिया। पलक झपकते पायल की जिंदगी बदल गई। सब कुछ झेलना बहुत मुश्किल था। प्रेम के जाने के बाद लोगों के स्वभाव और नजरिया में भी परिवर्तन आने लगा। पायल हरसंभव प्रयास करती कि बदलती आबोहवा का असर उसकी बच्ची पर ना पड़े। दिन भर घर के काम से निबटने के बाद उस एक कमरे में दोनों माँ-बेटी अपने-अपने हिस्से की खुशियां आपस में बांट लेतीं। उस कमरे में प्रेम की सुगंध अब भी बरकरार थी। यूं तो घर के कोने-कोने में प्रेम की हंसी, उसके कहकहे, उसकी बातें अक्सर गूंजती-सी लगती, जैसे कल की ही बात हो, जैसे वह कहीं गया ही न हो, अब भी साथ-साथ हो। बस अभी मां के कमरे से निकलेगा और चुपके से पायल के गालों में चिकोटी काट कर पापा के पास चला जाएगा और पायल फिर होठों को दांतों से काटती मन में मुस्कुराकर रह जाएगी। प्रेम की छेड़खानियां, उसकी छुअन...आह! ईश्वर कितना निष्ठुर होता है। दुख देता है तो देता चला जाता है। प्रेम को गले लगाने, उसके स्नेहिल स्पर्श, उसकी एक पुकार सुनने के लिए मन व्यग्र हो उठता।

कभी-कभी बिन बात की सिसकियां ऊंघती रात की चुप्पी को झिंझोड़ कर जगा देती। बिन बात की सिसकियां, बिन आंसू की सिसकियां। मन-मस्तिष्क की तपिश को कम करने के लिए ये सिसकियां भी जरूरी हैं। प्रेम के बाद पायल की हमसफर ये सिसकियाँ ही थीं। वक्त-बेवक्त आकर एहसास दिलाती कि जीवन का यह बोझिल सफर अकेले काटना है।

मुश्किलें आती हैं तो आती चली जाती हैं। पिताजी भी रिटायर्ड हो गए। घर चलाने के लिए पायल को नौकरी चाहिए थी। कुछ समय के संघर्ष और भागदौड़ के बाद पायल को एक प्राइवेट बैंक में सेल्स की नौकरी मिल गई। देखते-देखते पूरे घर की जिम्मेदारी पायल के ऊपर आ गई। बिन्नी ने स्कूल जाना शुरू कर दिया। घर के काम को समय पर पूरा करते हुए ऑफिस के हर चैलेन्ज, हर टारगेट को पूरा करने में पायल ने खुद को झोंक दिया था। घर और ऑफिस की जिम्मेदारियों को निभाते हुए हेक्टिक शेड्यूल में से भी पायल बिन्नी के लिए समय चुरा ही लेती। प्यार वाली लड़ाई चलती, फिर मनुहारों का दौर भी चलता। बिन्नी के लिए उसकी मम्मा आज भी वही सिंड्रेला की कहानी वाली परी थी जो छड़ी घुमाते ही उसकी हर विश पूरी कर देती। लाड़ में आती तो अक्सर 'परी मम्मा' बोलने लगती और तब पायल जाकर उसके दोनों गालों को खींच कर उस पर जोर से चिकोटी काट लेती बिल्कुल वैसे ही जैसे कभी प्रेम उसके साथ किया करता था और फिर छलकती आँखों से उसके माथे को चूम लेती जैसे प्रेम को चूम लिया हो।

बिन्नी पूरे परिवार के आंख का तारा थी। दादा-दादी भी बिन्नी के बगैर नहीं रह पाते थे। घर मे फिर से खुशियां लौट रही थीं। बिन्नी की दोस्तों से घर गुलजार रहने लगा था। प्रेम के माता-पिता प्रेम के बचपन को बिन्नी के साथ एक बार फिर से जीने लगे थे। परिवार और नौकरी के बीच संतुलन

कायम करती पायल की गाड़ी सरपट दौड़ रही थी। अपने अकेलेपन को पायल ने कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया था, बल्कि इसने पायल को और दृढ़ और मजबूत ही बनाया था। उसने अकेले जीना एक बार फिर से सीख लिया था, हालांकि प्रेम के माता-पिता उसके दर्द से नावाकिफ हों, ऐसा नहीं था। उन्होंने उसके सामने दूसरे विवाह का विकल्प भी रखा, किंतु पायल ने मना कर दिया। 'पहले आप प्रेम के माता-पिता थे, अब मेरे माता-पिता हैं और जिम्मेदारी भी। बचपन से माँ-पापा के प्यार से महरूम रही हूँ। अब जो मिल रहा उसे मत छीनिये।' यही पायल का जवाब था, इसके बाद उन्होंने उसे कभी कुछ नहीं कहा।

पायल की मेहनत और लगन का असर यह हुआ कि उसे लगातार पदोन्नति मिलती गयी और वह एक अच्छे पद पर पहुंच गई। उधर बिटिया का दाखिला भी मैनेजमेंट कॉलेज में हो गया। पद की ऊंचाई अक्सर अपनों के लिए दिए जाने वाले वक्त को छीनकर बनी सीढ़ियों से होकर गुजरती है। पायल की भी व्यस्तता बढ़ गयी थी। बिन्नी माँ को, उसकी परेशानियों को समझती थी। वह पायल को समझाती 'अब आपको मेरे लिए ज्यादा फिक्र करने की जरूरत नहीं है मम्मा। मैं अब बड़ी हो गई हूँ। अब मैं आपकी फिक्र करूंगी।' पायल उसकी बातों पर हँस पड़ती। बिल्कुल प्रेम की कॉपी होती जा रही थी बिन्नी। देखने में, समझाने में, हंसाने में और... और जिद में भी।

काम का तनाव और मानसिक दबाव पायल के लिए दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। एक रोज पायल ऑफिस के अपने केबिन में ही बेहोश होकर गिर पड़ी। उसके नाक से खून आ रहा था। आनन फानन में ऑफिस के सहयोगी उसे अस्पताल ले गए। उच्च रक्तचाप की वजह से मस्तिष्क में ब्लड क्लोटिंग हो गई थी। डॉक्टर ने तुरंत आपरेशन की सलाह दी। पायल के घर पर इन घटनाओं की सूचना दी जा चुकी थी, पर उनके आने में समय लगता। इधर डॉक्टर जल्दी आपरेशन का दबाव बना रहे थे। समस्या ये थी कि इस ऑपरेशन की जिम्मेदारी कौन ले? 'कन्साइनमेंट फॉर्म' पर कौन हस्ताक्षर करे? इसी उहापोह के बीच आरव आगे बढ़ा। उसने फॉर्म पर सिग्नेचर किये। डॉक्टर्स, पायल के आपरेशन में जुट गए।

आरव ऑफिस में पायल के अधीन काम करता था। मेहनती और ईमानदार। तीस -पैंतीस की उम्र होगी। आँखों पर मोटा चश्मा चढ़ चुका था। सिगरेट की इतनी बुरी लत कि उसकी महक उसके बदन में बस गई थी। माँ का देहांत बचपन में हो गया था और पिता एक साल पहले लंबी बीमारी से गुजर गए। अब वह अकेला था। कम उम्र में नौकरी लग गई तो शादी के बारे में कभी सोचा नहीं। उसका पैशन, उसका प्यार उसकी नौकरी, सिगरेट, पुस्तकें और गिटार थीं जिसे अक्सर खाली समय में वह बजाया करता।

पायल को ऑपरेशन के लिए ले जाया गया। घण्टा भर रहने के बाद ऑफिस के सहयोगी घर लौटने लगे, पर आरव वहीं टिका रहा। कुछ ही घंटों में बिन्नी और उसके दादा जी भी अस्पताल पहुंच गए। आरव फिर भी घर नहीं गया। बिन्नी और आरव में दोस्ती हो गई। आरव ने उसी कॉलेज से एमबीए किया था जहां फिलहाल बिन्नी पढ़ रही थी।

उसने बिन्नी और उसके दादाजी के सोने का इंतजाम कर दिया और खुद रात भर जागता रहा। आंखों-आंखों में रात कट गई। आपरेशन सफल रहा। पायल को होश आ गया था। बिन्नी पायल से जाकर मिली। हफ्ते भर तक हॉस्पिटल से घर जाने की इजाजत नहीं मिली। हॉस्पिटल में दिन भर बिन्नी रहती और रात में आरव रुक जाता। आरव ने ऑफिस में भी पायल की सारी जिम्मेदारी संभाल ली थी। अस्पताल में लगातार साथ रहने से आरव का पायल से एक बॉन्ड बन गया। बिना कहे वह पायल की बातों को समझ लेता। उसकी जरूरत की सारी चीजें उसके मांगने से पहले उसके सामने होतीं। पायल को अस्पताल से डिस्चार्ज मिल गया। वह घर आ गई तब भी आरव का उसके घर आना - जाना लगातार जारी था। कभी ऑफिस अपडेट देने के लिए तो कभी दवाईयां पहुंचाने। आरव ऑफिस का काम खत्म करके सीधा पायल के घर चला जाता।

धीरे-धीरे आरव की उस परिवार से घनिष्टता इतनी बढ़ गई कि घर में किसी चीज की जरूरत हो आरव ही याद आता। पायल को उसका इस कदर घर में घुसपैठ करना अच्छा नहीं लग रहा था पर वह फिलहाल कुछ भी करने में असमर्थ थी। उसे भी आरव की आदत होती जा रही थी। पायल के प्रत्येक कार्य मे आरव साथ-साथ रहता। वह पायल के साथ ही घर का भी पूरा ध्यान रखने लगा था। माँ-पिताजी की जरूरतें, बिन्नी को कॉलेज ले जाना, वहां से ले आना। आरव, पायल के जितना करीब आ रहा था, बिन्नी उससे दूर होती जा रही थी। उन दोनों की नजदीकी बिन्नी को बिल्कुल रास नहीं आ रही थी। एक दिन बिन्नी ने पायल से इधर उधर की बात करने के बाद पूछ ही डाला 'मम्मा ये आरव सर आपको कैसे लगते हैं?' पायल ने सवालिया नजर से उसे देखा। 'नहीं मम्मा आपके आफिस के लोग कह रहे थे कि आप दोनों शादी करने वाले हैं!' पायल का चेहरा सफेद पड़ गया। फिर भी संयत होते हुए उसने पूछा 'किसने कहा तुमसे?' 'वो छोड़ो, पर मेरी प्यारी परी मम्मा आप उनसे शादी-वादी मत करना। मैं मेट्रीमोनियल साइट पर आपकी प्रोफाइल डाल देती हूँ। अच्छे लड़के मिल जाएंगे।' 'पागल हो गई है। ये सब फितूर तेरे दिमाग में कहां से आया। तू कॉलेज पढ़ने जाती है या यह सब करने?' 'मम्मा आरव सर मेरे कॉलेज से हैं। मेरे सुपर सुपर सीनियर। मेरे फ्रेंड्स मुझ पर हँसेंगे।' 'अरे मेरी नन्ही चिड़िया, इतना न सोच। पढ़ाई पर ध्यान लगा। मेरी बीमारी में आरव ने मेरी इतनी देखभाल की। हम सब के साथ इतना घुलमिल गया है, इसलिए लोग बकवास करते हैं। सुन जो लोग इस तरह किसी भले आदमी पर तमाम तोहमतें लगाते हैं, ये तो तय है वे अच्छे और तुम्हारे शुभचिंतक तो नहीं होंगे। रात गहरा चुकी है, अब सो जाओ।' बिन्नी को सुलाकर पायल सोने की कोशिश करने लगी। उलझे-उलझे मन को सुलझाने की कोशिश में रात आंखों में ही कट गई।

महीने भर के आराम के बाद पायल ऑफिस भी जाने लगी। सब कुछ नार्मल हो गया था, एब्नार्मल सा कुछ था तो वह था आरव के साथ उसका व्यवहार। वह बिना किसी स्वार्थ के उसके परिवार

के लिए इतना कुछ कर देता था कि पायल उसके साथ पहले की तरह एक बॉस जैसा व्यवहार नहीं कर पाती थी। आरव उम्र में उससे बहुत छोटा था और अनुभव में भी, पर अपने कर्म से वह उसकी नजर में बहुत बड़ा बन चुका था। आरव पायल का विशेष ध्यान रखने लगा था। उसे समय पर भोजन, दवाई, आराम मिल सके इसका विशेष ध्यान रखता था। धीरे-धीरे ऑफिस में इन दोनों को लेकर कानाफूसी होने लगी। बात बढ़ी और हँसी-मजाक तक पहुंच गई। उड़ती हुई ये बातें आरव के कानों तक भी पहुंची। उसकी पदोन्नति, उसकी तारीफ, हर सफलता को पायल के साथ उसके रिश्ते से जोड़ा जाने लगा था। शुरू में उसे बहुत गुस्सा आता था, वह विरोध करता था, सफाई देता था, फिर उसने यह सब करना छोड़ दिया और हँस कर इन बातों को टालने लगा। आरव ने पायल की ओर बढ़ते कदम को रोकने की भी बहुत कोशिश की पर दिल मानने को तैयार नहीं था।

मन बलून की तरह ही तो होता है, जैसे बलून में एक सीमा के बाद हवा भरने पर उसके फटने का डर होता है ठीक उसी तरह मन भी एक सीमा तक ही बर्दाश्त कर सकता है। एक रोज जब बर्दाश्त करने की हद पार हो गई, आरव ने पायल को सब कुछ बता दिया। पायल का चेहरा सुर्ख हो गया। उसने अपनी झेंप मिटाते हुए बात बदलने की गरज से ऑफिस की दूसरी बातें करनी शुरू की किन्तु आरव उन बातों को नजरअंदाज कर पायल के चेहरे पर नजरें जमाते हुए आहिस्ता से पूछा 'क्या आप मुझसे शादी करेंगी?' पायल फट पड़ी 'तुम्हारी बॉस हूँ मैं। उम्र में भी तुमसे दो-एक नहीं पूरे सात साल बड़ी हूँ। मेरी बेटी, प्रेम की यादें, माँ- पापा ये सब हैं मेरे साथ...और...।' 'और.' बाएं हाथ के लंबे नाखूनों पर चढ़ी हल्की गुलाबी नेल पॉलिश को खुरचते हुए वह फुसफुसाकर बोली 'अब मुझे अपनी बेटी की शादी भी तो करनी है, बिन्नी की खुशियों के बारे में सोचना है, खुद के बारे में नहीं।' पायल भीगे स्वर में आरव से बोली या खुद से यह उसे समझ नहीं आया और फिर चुप होकर वह कुछ सोचने लगी।

'प्रेम उम्र, जाति और धर्म देखकर होता है क्या? एक बार फिर से सोचना पायल। मैं तुम्हारी इस 'हां' का इंतजार ताजिन्दगी कर सकता हूँ।' इतना कह कर वह उठा, सिगरेट सुलगाई और फूंकता हुआ चल पड़ा। प्रेम ने भी तो इसी तरह उसके जवाब का इंतजार किया था। अचानक उसके जेहन में प्रेम की वो तमाम बातें ताजा हो आयीं। कैसे उनके प्यार की शुरुआत हुई थी, कैसे विवाह हुआ, घर, विवाद, अस्वीकार्यता, फिर स्वीकार किया जाना। सारी घटनाएं किसी फिल्म की तरह आंखों के आगे से निकलने लगीं। पायल का संयम टूट गया वह रोई और खूब रोई, फूट-फूट कर रोई। वह समझ नहीं पा रही थी कि आखिर ये रोना क्यों आ रहा? अपनी बेबसी पर, प्रेम की यादों को लेकर! मन में एक छटपटाहट सी होने लगी। मन बेचैन हो उठा। वह प्रेम की तस्वीर से बातें करने लगी। 'तुम्हारे अलावा मेरे जीवन में कोई और नहीं आ सकता, कभी नहीं आ सकता। प्रेम...मेरे प्रेम किसी को मत आने देना, किसी को मत आने देना।' आंखों की बरसात रुकने का नाम नहीं ले रही थी। वह समझ रही थी कि ऐसे तो उसकी तबियत फिर से खराब हो सकती है पर खुद को रोक नहीं पा रही थी। आंसुओं का यह कर्ज जाने कितने दिनों से बकाया था। आज सारी कसर पूरी हो गई। रह-रह कर आंखें भींग रही थीं।

इंसानी फितरत है जब किसी चीज का विरोध होता है तो उसके प्रति आसक्ति और बढ़ने लगती है। रिश्ते का विरोध होता है तो प्रगाढ़ता बढ़ती है। दिल से ये रिश्ते मजबूत हो चुके थे, पर बिन्नी और फिर आरव की बातों से पायल घबरा गई थी, इसलिए उसने एक निर्णय लिया। एक दिन आफिस में ही बड़ी हिम्मत जुटाकर पायल ने आरव से कहा 'हमें एक-दूसरे के व्यक्तिगत मामले से दूर रहना चाहिए।' आरव बिना कुछ बोले उठा और सिगरेट सुलगाता वहाँ से चला गया । उसके बाद भी दोनों साथ काम करते, एक दूसरे की सहायता करते, एक दूसरे का ख्याल रखते, पर खामोशी से। पायल घर में गुमसुम रहने लगी थी। आरव का पायल के घर पर आना पहले कम हुआ फिर बन्द हो गया। जो दिल पहले प्रेम के सामीप्य के लिए तरसता था वह अब आरव के लिए तरसने लगा था। प्रेम का वियोग तो पायल झेल गई थी, पर आरव का पास रहकर भी पास न रहना उसे जलाए जा रहा था। शाम के समय आरव की कमी उसे और खलती।

उस शाम सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। कुछ बादल आसमान में हिचकोले खा रहे थे। पायल गुमसुम सी बैठी दूर क्षितिज को देख रही थी या सोच रही थी ये स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। तभी मोबाइल पर मैसेज फ्लैश हुआ 'रुसवाईयाँ न हो, सिर्फ इस शर्त पर यूँ जीने की सजा, मुझे मंजूर है।' ये आरव का मैसेज था। उसे प्रेम की याद आ गई। इन दिनों आरव की हरकतें प्रेम जैसी लगने लगी थीं। उसके संदेश, गिटार बजाना, हंसाना, ध्यान रखना...सब कुछ प्रेम की तरह, जैसे प्रेम का ही दूसरा जन्म हो। किसी अनजान शक्ति से वशीभूत पायल ने भी जवाब में लिख दिया।

'ये रात अक्सर मुझ-सी लगती है, और बादल कुछ- कुछ, तुम-सा !

हँसता बादल, उदास रात, आज मिले हैं, बरसों बाद।'

आरव का कोई जवाब नहीं आया। पायल को अपने लिखे पर गुस्सा आने लगा। ये क्या कर बैठी? आरव जाने क्या सोचेगा? कहीं कुछ गलत तो नहीं समझ लेगा। उसने घबराकर फोन स्विच ऑफ कर दिया और रूम में आकर खुद को इधर-उधर के कामों में व्यस्त करने लगी, पर दिल धौंकनी की तरह तेज धड़क रहा था। मन में कचोट हो रही थी। दूसरे दिन ऑफिस में हमेशा की तरह आरव और उसके बीच कोई संवाद नहीं हुआ पर पायल की हर जरूरतों पर आरव का पूरा ध्यान था। शाम में फिर से आरव का मैसेज आया 'पलकों ने चुपके से एक बोसा पेशानी पर रख दिया, आंखों का आब तिल बनकर माथे पर चिपक गया।' पायल ड्रेसिंग टेबल में लगे आईने के सामने खड़ी हो गई और ललाट को ध्यान से देखने लगी। उसकी ललाट पर नाक की सीध में, बिल्कुल बिंदी वाली जगह पर एक छोटा सा तिल था जो अक्सर बिंदी का भ्रम भी पैदा करता था। एक बार प्रेम ने तो बिंदी के भ्रम में उसे उखाड़ने की भी कोशिश की थी। वह कितना हँसी

थी...एक मुस्कान उसके होंठों पर थिरकने लगी। अगले ही पल उसकी आंखें भींग गयी। उसने सोच रखा था आज तो जवाब बिल्कुल नहीं देगी, लेकिन उससे रहा नहीं गया और उसने जवाब दे ही दिया ‘शबनम फिर शाखों को भिगोएँगी, देखना फिर एक बार रात रोएगी।’

पूरे चाँद की रात में वह घर के बाहर लॉन में टहल रही थी। मन विचलित था। हवा मन से प्रतियोगिता करती हुई तीव्र, अति तीव्र गति से दौड़ लगा रही थी। पायल को रह-रह कर ऐसा लग रहा था कि लॉन में लगे अमलतास के पीछे शायद किसी की छाया है। गिटार पर वही धुन ‘सवअम उम सपाम न कव, जवनबी उम सपाम लवन कव’ ये सच है या भ्रम? प्रेम...नहीं-नहीं आरव...ओह! यहाँ से वहाँ तक कोई भी तो नहीं। तभी मोबाइल पर मैसेज फ्लैश हुआ। पायल ने देखा, आरव का मैसेज था। उसने चोर नजरों से आस पास नजरें दौड़ाई कोई देख तो नहीं रहा। छिटकी चांदनी और तेज हवा में लहराते वृक्षों और खड़खड़ाते पत्तों के सिवाय दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। वह आश्वस्त होकर मैसेज बॉक्स खोली और आरव का संदेश पढ़ने लगी ‘शीतल चांदनी पेड़ों की ओट से थिरकती हुई तुम तक पहुंच रही है। उस चांदनी के रंग से मिलकर तुम्हारे चेहरे की रंगत और पवित्र दिख रही है। ऐसा लग रहा जैसे कोई स्निग्ध दूधिया सा आभामंडल तुम्हारे इर्द गिर्द हो। तेज...आह! इस तेज में मैं तुम्हारे चेहरे के भाव नहीं पढ़ पा रहा पायल। महानता के उस शिखर पर क्यों जाना, जहां से तुम...तुम न रहो। तुम्हारे जिस्म और रूह के बीच परस्पर संवाद ही समाप्त हो जाए? बिन्नी भी एक स्त्री है। स्त्री मन को समझेगी, पर वहाँ माँ बनकर नहीं एक स्त्री बनकर उसे समझाना होगा। शायद तुम मेरी मनः स्थिति समझ सको! मुझे अपने परिवार में शामिल कर लो या तुम मेरे...‘हमारे’ घर आ जाओ। जिस परिस्थिति में हम दोनों जी रहे उससे दोनों की उम्र कम हो जाएगी। ज़्यादा दिन हम जी नहीं पाएंगे। ‘थरथराती उंगलियों से पायल ने मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया। सिसकियां फिर से उसकी हमसफर बन गयी थीं। वह अपने कमरे में आ गई । टेबल लैंप की हल्की पीली रोशनी फैली हुई थी। शायद बिन्नी पढ़ते-पढ़ते सो गई थी। किताब अब भी उसकी हाथों में थी और वह खुद बिस्तर पर थोड़ी बैठी, थोड़ी लेटी थी। पायल ने किताब उसके हाथों से लेकर करीने से मेज पर रख दिया। टेबल लैंप बुझा दी और उसे तकिए पर हौले से लिटा दिया। उसके सोए हुए चेहरे को अपलक निहारती रही और सोचती रही एकदम प्रेम की कॉपी है, फिर उसके माथे को चूमा और अपने बिस्तर पर आकर लेट गई। आंखों में नींद नहीं थी। उसने मोबाइल को ऑन किया और आरव को लिखा ‘सूरज के डूबने से पहले, शाम ढलने से पहले, फूलों के सूखने से पहले, पंछियों के घर लौटने से पहले...हम मिलेंगे हमसफर...हम जरूर मिलेंगे और अंतिम सफर साथ तय करेंगे।’ अब उसके पर्स में प्रेम की जगह आरव की तस्वीर ने ले ली थी।

कविता

औलाद

डा. कृष्ण कन्हैया, बर्मिंगम, यू.के.

मेरे भगवन!
मुझे औलाद ना ही देता, तो अच्छा होता
कम से कम बुढ़ापे में अपनी गलती के
एहसास पर तो न रोता।
नौ महीने अपनी कोख में पालकर
अपनी प्रसव-वेदना तेरे आगमन में
भुलाकर
रात-रात भर जागकर
छाती का दूध पिलाकर
मैने निश्चल मातृत्व धर्म निभाया है
तेरे रोने से रोई
तेरे हँसने पर हँसी
तेरी शरारत पर आँखें दिखाई
पर पीठ पीछे मन ही मन मुस्काई
तेरे चोट लगने पर चोटिल हुई
तेरी सफलता में शामिल हुई
बचपन में अविभावक,
किशोरावस्ता में मित्र,
और हर घड़ी शुभचिन्तक बन कर
तेरे आस पास, आस लगाये रखी
तुम्हें आँखों में सदा बसाये रखी
माँ की परिभाषा कुछ ऐसी होती है।
किसी उदाहरण को जरूरत नहीं होती है।
पर कितने श्रवण कुमार हुये हैं
जो माँ-बाप की निष्ठा के आधार हुये हैं
जो अंधे माँ-बाप को बँहगी पर उठाये
उनकी इच्छा को अपना कर्तव्य बनाये
नंगे पाँव तीर्थ-भ्रमण को ले जाते हैं
और अपनी आँखों से प्रभु दर्शन कराते हैं।
वह त्रेतायुग की बात थी
यह कलियुग की बात है..
अब बेटा अपनी पैदाइश को
माँ-बाप के ऐश का नतीज़ा बताता है
अपने निजी मनोरंजन के दरम्यान
उनकी उपस्थिति को बाधक दिखाता है
पैसों की बंदरबाँट में भाई-भाई
आपस में उलझ जाते हैं
पर बीमार माँ की जवाबदेही
दूसरों पर ठेल आते हैं।
यह प्रकृति का नियम भी है अजीब
जिसमें परिवेश को, दोगली मानसिकता
के साथ जीना होगा नसीब
पर मत भूलो,
प्रत्येक क्रिया के समान और विपरीत
प्रतिक्रिया वाली बात
तुम्हारी औलाद भी दोहरायेगी
और तब वो माँ-बाप
उस मालिक से ये गुहार लगायेगा
हे भगवन!
मुझे ऐसी औलाद ना ही देते
तो अच्छा होता।

पांडेय जी और जन्मदिन का आयोजन

लालित्य ललित

बात तो सही है,जन्मदिन को कैसे खाली जाने देंगे। उधर जब चीकू से बात हुई तो कहने लगा पापा जी मस्त मनाने का, बिंदास जीने का। बात तो सही थी। आखिर यह जन्मदिन विलायती राम पांडेय का है, कोई मजाक थोड़े हैं!

बहरहाल अंदर से पांडेय जी के मन में भी था, चलो इसी बहाने कुछ मित्रों को बुला लिया जाए, कुछ उनकी सुनी जाए और कुछ अपनी कही जाएं।

उससे पहले रामप्यारी की अनुमति लेनी आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। बात हुई तो पांडेय जी का प्रस्ताव निर्विरोध पास हो गया और वह भी पहली बैठक में। इससे पांडेय जी को आभास हो गया कि जरूर दाल में कुछ काला है, चुनांचे जो भी होगा, देखा जाएगा।

बहरहाल जब गाजर का हलवा काली गाजर का हो सकता है आज के जमाने में। बिहार में यह खूब बनाया जाता है, लेकिन दिल्ली वालों को आज तक पता ही नहीं। जबकि इंदौर के कुछ लोगों ने कांजी जरूर बनाई हैं वे भी पांडेय जी की फेसबुक पोस्ट के आधार पर काली गाजरों की तफ्तीश में लग गए।

देखा जमाना आपके साथ भी है और चलने की कहो तो एक साथ कितने आपके पीछे चल देते हैं। सोचिएगा इस बात को कि क्या और कितना सोचा जाएं और भाई साहब सोच कभी भी आ सकती हैं।

चुनाँचे पांडेय जी घर में है। बाहर कोहरा है। ठंड लोगों के जीवन से और उनकी जीवन शैली से मजे लेकर बाजा बजाने में लगी हुई है। वह भी क्या करें। उसे कोई और नियंत्रित करता है, इसलिए वह अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रही है, और कुछ नहीं।

पांडेय जी ने देखा कि कोहरे में भी कुछ लोग क्रिकेट खेलने से बाज नहीं आ रहे। न आए, हमारी बला से।

पांडेय जी एक दफा अपने लिए चाय बना चुके है, लगता है जल्द इसकी पुनरावृति होने वाली है। मौसम है नशा है और कोहरा है।

आइए पांडेय जी की रचना से रूबरू हो जाएं फिर आगे चलेंगे

बाई द वे....
कोहरे को याद करते हुए ,
कोहरा
फिर से घनेरा है
न कुछ दिखता है
न वह कुछ देखने देता है
मतलब एक घनघोर आनंद
सोच कर भी सिहरन दौड़ने लगती है
कोई फहग लाइट काम नहीं करती
जब ऐसी हो स्थिति
मौजूदा हालात ये बतलाते हैं कि तनिक ठहर जाओ
आगे मत चले जाना
ये प्रकृति का नियम है
जब इशारा किया गया है तो कहना मानो
ठहरो
आगे मत जाओ
संभल जाओ और निर्देशों का पालन करो
आज भी कोहरे को याद कर उस लम्हे को जी लेता हूं
उस आगोश को महसूस कर लेता हूं
जब हम रुके थे आगे बढ़ने से
कोहरा कुछ दिखने ही नहीं दे रहा था
इसका अर्थ था
कि समझो बुद्धू!
कुछ मैंने समझा और कुछ उसने
एक रचना लिखी दोनों ने
कहते है कि मिलजुल कर किया गया प्रयास कभी बेकार नहीं जाता
बरसों पहले के कोहरे को आज भी याद करते हैं
तो वह लम्हे स्मृतियों में आज भी
उसी अंदाज में कौंध जाते हैं
फिर से....
क्या कुछ याद आया तुम्हें भी
हां...
आया पर सारे जज़्बात व्यक्त करने के लिए नहीं होते
कुछ अपने लिए भी होते हैं
नितांत निजी...
समझें....
कुछ समझा, कुछ भुला
चाय के दौर में कितनी यादें फिर से स्मृतियों में आती चली गई...

ठंड भी है और दस्तूर भी। काली गाजर हो या गोरी। क्या फर्क पड़ता है। स्वाद का मौसम बना रहना चाहिए। दयाल बाबू ने काली गाजर का हलवा खिला कर मौसम पांडेय जी का ओसम कर दिया था।

वैसे मार्किट में काली, लाल और कहीं कहीं सफेद गाजर भी मिलती है। लगता है पांडेय जी बहुत जल्दी मार्किट और वह भी सब्जी मार्किट मंडी का दौरा करने वाले है।

जो करें हमें क्या! हम तो ताबेदार है जो कहेंगे मान लेंगे, और क्या करें।

बहरहाल टेलीविजन पर गणतंत्र दिवस पर कुछ आने वाला है, आज देख ही लेते है कि नया क्या दिखाएंगे। आखिर लोग बाग दूरदर्शन से पक गए।जब गांधी जिनके जन्मदिन पर वह फिल्म गांधी दिखा देता है वह भी क्या करें। जो नियम कायदे से बंधा होगा वह मजबूर होगा, बेबस होगा।

फिलहाल बेबसी के किस्से फिर कभी डिस्कस होंगे। अभी टेलीविजन।

ये रिमोट कहां गया। ये चीकू भी न! पता नहीं कहां रख देता हैं!!

आज सुबह से ही रामप्यारी का बल्ड प्रेशर फलकचुएट कर रहा था, राम जाने क्या क्या बोले चले जा रही थी। आखिर वह पत्नी धर्म भी क्या जो अपनी आदतों से अपनी चालों से बाज न आए, तो पत्नी कैसे कहलाए!

वैसे पत्नी समाज को यह मिर्गी का दौरा साल में एकाध बार पड़ता है जो स्वाभाविक भी है और यह स्त्रियोंचित्त गुण भी है। वैसे पांडेय जी के जीवन में और भी गम है जिसे वे लिखकर साझा करते रहते हैं और कर भी क्या सकते हैं! न और कोई विकल्प है और न कोई और चारा। बहरहाल चीकू भी बदमाशी करने में पीछे नहीं हैं, नहाता है तो गीजर का सारा पानी बर्बाद, जैसे उसका पिता दुनिया का अव्वल नंबर का अरबपति हो! जल बचेगा तो कल बचेगा। चीकू नहाया और अपना तौलिया अलमारी में रख आया,वह तो भला हो रामप्यारी का, जिसने देख लिया, फिर तो चीकू और रामप्यारी का झापड़। आखिर गलती करेगा तो ऐसे ही बजेगा।

पांडेय जी बरामदे में आ बैठें। छज्जे पर आ कर सुख मिलता है जैसे किसी अज्ञात प्रेमिका से संवाद कर रहे हैं। वैसे भी उनका मानना है कि जो रचेगा आखिर वह ही बचेगा, जिसका पालन पांडेय जी विगत वर्षों से कर रहे है। उधर रामप्यारी का मानना है कि इन सब के घर में रहने से घर का लोकतंत्र बिगड़ता है। आखिर ये मनुष्य की मूलभूत सुविधाएं और किंचित जिज्ञासाएं है जिसे जानने की कोशिश लगातार जारी है।

बगल के एक मकान बन रहा है, शोर का अतिक्रमण वहां भी लघु कुटीर उद्योग की तरह पसरा है।

वेलफेयर की मीटिंग या किसी भी सभा में नहीं जाने का प्रण पांडेय जी ने लिया है। एक ही ब्लाक में तीन वेलफेयर बन गई है। किस की सुने या किस की न सुनें।आखिर सबके संविधान अलग परिपाटी लिए नाचने को उत्सुक हैं।

दूसरी बात यह भी कि सब अपनी हांकने में लगे हैं, यह सब बयानबाजी पांडेय जी को रास नहीं आती, इसलिए नहीं जाते। उधर रामप्यारी का समाज और सोच पांडेय जी के बिलकुल विपरीत दिशा में चलती है, चले। पांडेय जी की सेहत पर न कभी कोई फर्क पड़ा है और न पड़ेगा। आखिर मौलिक अधिकार सब के लिए बना है।

उधर रामप्यारी को यह भी शिकायत है कि जबसे पांडेय जी का नया मित्र मंडल गठित हुआ है तब से वे अधिक कुछ सोचते भी नहीं।ऐसा रामप्यारी का विचार है। तो पांडेय जी ने भी मंथन किया कि नए वित्तीय वर्ष से वे मित्र मंडल द्वारा किसी भी कार्यक्रम में न जाएंगे अपितु अपने व्यक्तिगत कार्यों को प्राथमिकता देंगे। वैसे भी समाज सेवा के बहाने कई व्यक्तिगत कार्यों को अब तक अनदेखी करते आएं हैं जो ठीक बात नहीं है।

पांडेय जी ने अपने द्वारा बनाए वाटसप ग्रुप में लिख दिया कि फलाने दिन, फलाने समय आप सब अपनी आधिकारिक पत्नियों के साथ सादर आमंत्रित है और अपने साथ किसी भी तरह का उपहार मत लाइएगा, केवल स्नेह, सद्भाव अवश्य लाइएगा जिसकी आजकल बेहद जरूरत है।

पांडेय जी के नियत समय पर सब एकत्रित हुए और एक यादगार लम्हे के साथ विदा हुए। पांडेय जी सोचने लगे कि मनुष्य का यही जीवन है, जहां आदमी आता है, मिलता है और जीता है और अपना अक्स छोड़ जाता है।

इसी तरह सब अपना अक्स छोड़ जाएंगे एक दिन। जब तक वे धरती पर हैं वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे ऐसा, जिससे किसी का अहित हो।

तभी बेल बजी। कोई कुरियर वाला आया था, किसी ने पांडेय जी की कोई नई किताब भेजी है। यह पल निश्चित ही खुशी का था, लेखक को अपने जीवन में और क्या चाहिए। थोड़ी खुशी, थोड़ा प्यार और एकांत भरपूर, जिसकी तलाश में वह अनुसंधान करता रहता है।

वैसे पांडेय जी सोचते रहे कि देविका गजोधर आखिर लम्बी यात्रा पर गई है। उसको अब तक आ जाना चाहिए था, उन्होंने रामखेलावन को फोन लगाया। कि पता करें आखिर मामला क्या हैं!

उधर टिप्सी मुटरेजा ने जब से अपना रेस्टोरेंट खोला है, उसको मित्रों के संग मिलने की फुरसत नहीं है। आखिर पांडेय जी सोच रहे है कि किसी दिन उनके रेस्टोरेंट में ही कोई पार्टी प्लान कर ली जाएं। जिससे सब का मिलना भी हो जाएगा और मेल मुलाकात भी। आखिर वे कहते भी है कि ये जिंदगी मिलेगी न दुबारा....

मौसम के बारे में मौसम विभाग ने एक एडवाइजरी जारी की है कि अभी पकौड़े खाने का मौसम बना रहेगा, बाजार में दुकानदारों ने बेसन की भारी भरकम स्कीम लांच करने में देर नहीं की।एक किलो बेसन के साथ एक नमक की थैली मुफ्त।

जब से यह समाचार स्थानीय अखबार में आया तब से राधेलाल शर्मा को लाइन में लगा देखा। उस कतार में राम किशन पुनिया, कल्लू कालिया, राम, मधुबाला के साथ फूलमतियां को भी बात करते देखा गया है।

कुछ देर में आसमान में बिजली चमकी और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। राधेलाल दौड़े, रामकिशन पुनिया ने भी बचने की कोशिश की, मगर धराशाई हुए। मधुबाला को रामखेलावन ने संभालने की कोशिश की पर फूलमतियाँ के सामने यह जुर्रत न कर सकें। आखिर यह प्रेम ही है जो सबको जोड़ने का काम करता है। मधु बाला को फूलमतिया ने संभाल लिया। आज टिक्कू तलसानिया के चाय के खोखे पर सबको एक साथ देखा पांडेय जी पहुंच गए। आखिर सबके साथ मोहब्बत की चाय पीने का अपना ही सुख था,जिसे सबने एक साथ लिया।

परिणोत्सव

राधा शर्मा

परिणय की बेला है
प्रेम-श्रद्धा-विश्वास से
बंधा ये बंधन,
पहन जटाओं का सेहरा
बना चाँद की कलंगी
चढ़े वृषभ पर
बनें अनोखे दुल्हा।
बराती भी थे न्यारे-न्यारे
कुछ-कुछ थे वे डरावने
जिन्हें देख घराती
भागे थे दूर-दूर पर
दुल्हनियां बनी थीं आज
रेणुका-जमदग्नि की जाई,
जल-थल-नभ हर्षाएं
करी पुष्पों की वर्षा
बाजे ढोल-नगाड़े और मृदंग
झूमे-नाचे-कूदे-गाएं,
उमापति महेश की
नंदी-गणेश के लाल की।

बंकर में सात दिन

सुरेशचन्द्र शुक्ल (शरद आलोक)

'अम्मा! राहुल का पता नहीं चला कि वह कैसा है? मेरा तो जी घबरा रहा है? उक्रेन पर पड़ोसी देश ने हमला जो कर दिया है।"

राधा ने अपनी सास वासुकी से घबराते हुए कहा।

वासुकी ने जवाब देते हुए कहा, 'चिन्ता की तो बात है। राहुल सात दिनों से बंकरों में अपने साथियों के साथ फंसा था। बंकर से अच्छा बमबारी से बचने के लिए और क्या हो सकता है? मैंने ही उन्हें वहाँ से जान बचाकर भागने के लिए कहा था। मुझे लगता है कि राहुल पुत्तर पोलैंड की सीमा तक पहुँचने वाला होगा", वासुकी ने अपनी बहू राधा को सांत्वना देते हुए कहा।

यह युद्ध वासुकी की समझ से परे है। वह कहती है, "अपने को तीस मारखाँ बनने वाले नेता अपने देश को युद्ध में क्यों झोंक देते हैं? युद्ध से क्या दोनों पक्षों के सैनिक और जनता नहीं मरती? आपस में नहीं बनती है तो भाइयों की तरह अलग रहो पर एक दूसरे को मारने पर उतारू पूरे परिवार, समाज और देशों को अपने साथ क्यों घसीट लेते हैं, वह अपने गुस्से, ईर्ष्या का शिकार दूसरों को क्यों बना देते हैं?"

अभी कुछ दिनों पहले की तो बात है राहुल ने अपनी माँ और दादी से बात की थी। कितना परेशान लग रहा था राहुल। आवाज से लग रहा था वह बहुत घबराया हुआ था। उन्हें सब याद है, राहुल ने फोन पर कहा था।

"दादी मैं बंकर में फँसा हूँ, मुझे बचा लो", फोन पर राहुल ने रूँआसे स्वर में कहा था। "क्यूँ, की होया" (क्या हुआ?) दादी वासुकी ने जानने की उत्सुकता से कहा। "पापा ने नहीं बताया, मैंने उन्हें फोन पर सब बताया था। कि यहाँ उक्रेन में पड़ोसी देश ने आक्रमण कर दिया है। लगता है वे पूरे शहर और देश को बरबाद करके रहेंगे।"

दादी ने कहा, "पुत्तर! तू अपने पापा रोशन को छोड़, वह यहाँ चुनाव में ऐसे लगा है जैसे राष्ट्रवाद उसकी जेब से निकला है।" "दादी मैं क्या करूँ?"

"पुत्तर हिम्मत रख। तू दूतावास नाल गल कर। वहाँ से भागने की सोच, जैसे महाभारत में लाख के महल से पांडव बचे थे।"

"पापा से कहो कुछ करें, उनकी तो बहुत पहचान है।"

"छड़ पापा नू (छोड़ो पापा को) तू आसपास जानकारी ले और रेलवे स्टेशन की ओर भाग, रेल में ऐसे चढ़ जैसे कुली रेल रूकने के पहले ही रिस्क लेकर रेल के डिब्बे में चढ़ जाते हैं।" दादी कितनी हिम्मत वाली है। दादी ने आगे कहा, "तू पापा की छोड़, वह तो राजनीति में ऐसे खो गया है जैसे भूसे में सुई। अभी चुनाव का परिणाम नहीं आया है, पर जीत के जश्न के लिए सुबह मंदिर में और शाम को छोकरे-छोकरियों का बैण्ड बुक कर लिया है। पूत तुम्हारे पापा आज भी अपनी निकर भी बचपन की तरह नहीं संभाल पाता है; पर सोचता है वह लोग देश सम्भालेंगे", कहकर दादी ने लम्बी साँस लेते हुए मन ही मन बुदबुदाया।

"हाय राम यह क्या हो गया है। खुद की रक्षा कर नहीं पाते, दूसरे की रक्षा का स्वांग भरते हैं।" राहुल ने दादी से बात जारी रखी, "दादी यहाँ यूनिवर्सिटी के होस्टल में तो तुम जानती हो कि जहाँ खाना भी कैंटीन में खाते हैं। वह भी बन्द है। खाने की तो अभी चिन्ता नहीं है। युद्ध के खतरे के सायरन चारों तरफ ऐसे गूँज रहे हैं कि पूछो मत। बम फटने, मिसाइल गिरने और युद्धक विमान की आवाज जैसे कान फट जायेंगे।

दीवाली और नये साल के पटाखों से ज्यादा आवाज। रोशनी के साथ, युद्ध के विमान, गोलाबारूद की आवाज आ रही है।"

राहुल को लगा कि दादी ठीक कहती है। खुद ही यहाँ युद्ध से निकलना होगा। दादी कहती थी जहाँ भी रहो वहाँ की भाषा सीखो और वहाँ के सारे रास्ते पार करो। पता नहीं कब जरूरत पड़ जाये। दादी कहती थी कि वह भी जैसे ही घर के कामकाज से फुरसत पाती आसपास के घरों में चक्कर लगा आती थी। कौन सी चीज पड़ोसियों के पास है और जो दादी के पास न हो।

अच्छा हुआ कि दादी ने मुझे, पिन्नियाँ, तिल के लड्डू बनाना सिखाया, जिसे यहाँ उक्रेन के होस्टल में सांझी रसोई में मैं अकसर बना लेता था। आज जब उक्रेन में स्टोर और दुकानों में सामान खत्म हो गया और युद्ध के डर से दुकानें बन्द होने लगी हैं।

दादी द्वारा जो पिन्नियाँ बनाना सीखा वह अब बहुत काम आ रही हैं। मैंने भारतीय दूतावास को फोन किया, कोई फोन ही नहीं उठाता। बेचारे बड़े व्यस्त होंगे। मुझे ही कुछ करना होगा। जैसे-जैसे यूक्रेनियन भाषा बोलकर लारी में बैठ गया जो देश की सीमा की तरफ जा रही थी। लारी वाले ने बताया कि उसे बहुत पैसे देने होंगे। मैंने सोचा कि जान बची तो लाखों पाये। सीमा पर बड़ा जमावड़ा था। लम्बी कतारें थीं। माता-पिता और दादी का आशीर्वाद और उनकी दी हुई हिम्मत साथ थी।

यूक्रेनियन भाषा में बड़बड़ाता हुआ कतार तोड़ता हुआ तब तक आगे बढ़ता गया जब तक राहुल का जैकेट फट नहीं गया। किसी तरह चार घंटे के संघर्ष के बाद एक छोटे से द्वार से जिसमें एक आदमी के लिए ही निकलने की जगह थी। लोगों की धक्का-मुक्की में इतना दब और पिट गया जैसे भारत के थाने में जबरदस्ती गवाह और अपराध स्वीकार करने के लिए उत्पीड़न किया जाता है। जब राहुल ने बॉर्डर (सीमा) पार कर शरणार्थियों के शिविर में आ गया था। उसने जब दूतावास को फोन किया तो एक बार फोन उठ गया।

दूतावास ने बताया कि भारत के मिनिस्टर आये हैं। वे उनमें व्यस्त है। उसे अपनी सहायता और इंतजाम खुद करना पड़ेगा। तभी यूक्रेन से हॉस्टल से फोन आया कि उसका दोस्त गिरीश भूख-प्यास और सदमें से मर गया। राहुल को भारत में हुए लॉकडाउन की याद आ गयी। जब बहुत सी माँओं ने अपने बच्चों को गोद, कंधे पर बैठाकर सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा की थी। राहुल को एक-एक करके सभी बातें याद आ रही थी। राहुल अपने अतीत की तरफ देखता, जब वह विदेश आने की

तैयारी कर रहा था। बहुत उत्साह था यूक्रेन में पढ़ने जो जा रहा था। मोहल्ले में चर्चा होने लगी थी। उसे स्पष्ट याद है, उसे लगा कि वह सभी कुछ फिल्म की रील की तरह पीछे देख रहा था। जब राहुल विदेश पढ़ने जा रहा है। उसका दाखिला यूक्रेन में हो में हो गया है। मेडिसिन पढ़ेगा और छह साल में पूरा डाक्टर बन जायेगा। मोहल्ले में चर्चा थी। राहुल के दोस्त इसी खुशी में पार्टी चाहते हैं, परन्तु उसकी दादी इस खुशी में पूजा पाठ करा रही थी और रामायण में सुंदरकांड का पाठ करा रही है। राहुल का मित्र शिवम् कहता है, "राहुल यदि दकियानूसी ख्याल रखना है, रामायण का पाठ करना है तब तुम विदेश क्यों जा रहे हो?" दादी वासुकी जवाब देती, "हमारी संस्कृति क्या किसी से कम है। रामचरित मानस की एक-एक चौपाई और दोहा ज्ञान से भरा हुआ है।"

राहुल की दादी और माँ ने महात्मा गाँधी की दादी की तरह राहुल से वचन ले लिया था कि वह विदेश में माँस, मछली नहीं खायेगा और पराई स्त्री की तरफ आँख उठाकर नहीं देखेगा। उसका मित्र शिवम मजाक बनाता हुआ कहता है, यदि विदेश गए और मौज मस्ती नहीं की, तब विदेश जाने का फायदा ही क्या है। अब जमाना बदल गया है। विदेशी संस्कृति का प्रभाव जैसे-जैसे बढ़ रहा है युवा पीढ़ी के बीच पश्चिमी संस्कृति का असर पड़ने लगा है।" आज जिसे देखो विदेश जाना चाहता है। यह जीवन ही जन्म से मृत्यु तक की यात्रा है। अगर जीवन कविता तो मृत्यु काव्य है। जब देश में नौकरी नहीं मिलती, तब वह विदेश में राह ढूँढता है। दादी ने राहुल के सामान में हनुमान चालीसा और गीता रखवा दी थी। राहुल जब दादी से फोन पर बात कर रहा है उसे बीच-बीच में पुरानी बातें याद करता जाता था। वह फोन पर बातचीत जारी रखता है, "दादी यहाँ यूनिवर्सिटी के हॉस्टल में तो तुम जानती हो कि जहाँ खाना भी कैंटीन में खाते हैं। वह भी बन्द है। खाने की तो अभी चिन्ता नहीं है। अभी भी सीमा पर भी युद्ध के खतरे सायरन चारों तरफ ऐसे गूँज रहे हैं कि पूछो मत। बम फटने मिसाइल गिरने और युद्ध के खतरे के सायरन चारों तरफ ऐसे गूँज रहे हैं कि पूछो मत। बम फटने मिसाइल गिरने और युद्धक विमान की आवाज जैसे कान फट जायेंगे। दीवाली और नये साल में पटाखों से ज्यादा आवाज।" जहाँ तक राहुल की नजर जाती लोग याचना के मुद्रा में परेशान लग रहे थे। दादी ने कहा था कि हनुमान

चालीसा पढ़ो, गीता पढ़ो, इससे हिम्मत आएगी और रक्षा होगी। राहुल ने हजारों बार हनुमान चलीसा पढ़ा है। दुःख में किसे ईश्वर याद नहीं आते। ईश्वर को याद करने से मेरे मन में कुछ तसल्ली आ जाती है। यूक्रेन की सीमा में लगा देश पोलैंड है। संघर्ष करते हुए राहुल और उसके साथी यहाँ पोलैंड की सीमा पर पहुँचते ही राहत भरी सांस ले रहे थे। पानी की बोतल, नाश्ते के पैकेट और ओढ़ने के लिए कम्बल दिए जा रहे थे। इंटरनेट की सुविधा थी। शरणार्थियों के लिए बहुत बड़े हाल में इंतजाम है। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। अलग-अलग देशों के लोग रेडक्रास की तरफ से सेवा कर रहे थे। जिस बड़े शरणार्थी हाल में लोग एकत्र है वहाँ टीवी लगा हुआ है। लोग बड़ी मेज के चारो ओर बैठे काफी पीते हुए नाश्ता कर रहे हैं। मेज पर एक बर्तन में फल रखे हैं। मसालेदानियां और शकर और गैर चीनी की मीठी गोलियों की डिब्बी भी मेज पर रखी हैं। प्लेट पर अपनी पसंद की चीजों का नाश्ता लिए लोग बैठे हैं। कोई ब्रेड पर जैम लगाये है कोई चीज, कोई खीरा, टमाटर तो कोई अनेक तरह के ब्रेड पर लगाकर खाने वाले अनेक किस्म की स्वादिष्ट चीजें खा रहे हैं। नाश्ते, खाने-पीने का सामान चाय, काफी, सॉफ्ट जूस सब कुछ एक बड़ी मेज पर सजा हुआ है। खाने-पीने की कोई कमी नहीं है।

सभी के चेहरे वहाँ लगे टीवी के समाचार से चिंतित और गुस्से में नजर आ रहे थे। हाल में चाय नाश्ता करते लोगों में अनेक देशों के प्रवासी भी बैठे हैं नाश्ते के अवकाश के समय सभी एकत्र हैं टीवी देखते-देखते नाश्ता कर रहे थे और बीच-बीच में प्रतिक्रिया स्वरूप टिप्पणी भी कर रहे हैं, उनमें शरणार्थियों के साथ वहाँ काम करने वाले रेड क्रास के लोग भी बीच में बातचीत में सम्मिलित हो जाते हैं।

स्वतंत्र विचार बिना सेंसर बिना किसी का ध्यान दिए लोग कह रहे हैं आपस में बिना तकरार के। एक रेडक्रास के कर्मचारी ने दूसरे से कहा, "इन शरणार्थियों को वापस जहाज में बैठाकर इनके देश भेज देना चाहिये।" दूसरे कप से चाय पीते हुए जवाब दिया, "इनके आने से समाज में अव्यवस्था बढ़ जायेगी।" "अरब देशों में विदेशी कामगारों को रिटायर के बाद वापस उनके वतन भेज देते हैं। मानवाधिकार तो है ही, नहीं; क्यों नहीं ये अरब देश अपने देशों में शरणार्थियों को जगह दे रहे हैं"; दूसरे प्रवासी ने कहा।

"हम भी कभी अमेरिका में शरणार्थी थे, इतिहास उठाकर देखो, एक सौ बरस पहले की ही बात है।" एक नार्वेजीय रेडक्रास की महिला अधिकारी ने कहा। उसने आगे कहा, "अमेरिका में बहुत से नार्वेजीय लोग लगभग १२० साल पहले नार्वे से अपने खराब हालात (गरीबी आदि) के कारण गये थे। जितनी नार्वे की आबादी है उतने ही नार्वेजीय लोग अमेरिका में जरूर रहते होंगे। वे अपने-अपने पानी के जहाजों में गए थे।" "अमेरिका तो प्रवासियों का ही देश है पर रूस और यूक्रेन नहीं।" एक अधिकारी ने कहा, "इन शरणार्थियों की निगाह हमारी सुविधाओं पर है, पहले ये हमारी लड़कियों को फुसलायेंगे और बाद में अपने देश से लड़कियां शादी रचाकर लाएंगे।" अधिकारी ने एक अन्य अधिकारी को सम्बोधित करते हुए शायद शरणार्थियों को सुना रहे थे। "सभी एक से नहीं होते, अच्छे प्रवासी भी होते हैं, अच्छे शरणार्थी भी होते हैं।" राहुल बीच में ही बोल पड़ा। मैं नहीं मानती। एक जर्मन अधिकारी ने कहा, "देखो मेरे शहर हामबर्ग में जहाँ देखो मस्जिदें ही मस्जिदें हैं इन शरणार्थियों के कारण। पहले यहाँ शादी करेंगे। तलाक देंगे फिर शादी करेंगे। अपने बहुत से बच्चे पैदा करेंगे। इनमें बहुत से लोग समाज में इंटीग्रेट नहीं होंगे। फिर मन्दिर-मस्जिद बनाएंगे। जब समाज में श्रमदान होगा, तब ये लोग समाज के कार्यों में कम हिस्सा लेंगे। अपने लोगों के झुण्ड बनाकर गिरोह बनाएंगे। उस महिला अधिकारी ने अपना आक्रोश जारी रखा। लगता था कि वह जैसे पहले से ही जली-भुनी हुई है।

"सभी एक से नहीं होते, तुम तो भेदभाव भरी बातें कर रही हो। तुम दूसरे इंसानों को पसंद नहीं करती।" राहुल ने उस महिला अधिकारी को जवाब दिया। हाल की एक खाने की मेज के चारो तरफ

असमंजस की स्थिति थी बहस गर्म थी चेहरों पर उत्तेजना बरकरार थी। हाल में एक तरफ लोगों की दो पंक्तियाँ लगी हैं, यूक्रेनवासी जो अपना देश छोड़कर शरणार्थी बन रहे थे। दूसरे जो यूक्रेन में छात्र हैं वहाँ शिक्षा ग्रहण करने आये थे। बहुत से वे लोग हैं जो यूक्रेन में नौकरी करते थे पर यूक्रेन के नागरिक नहीं थे, हमले और युद्ध के चलते वह जान बचाकर इस शिविर में बहुत मुश्किल से पहुँचे थे। कहते हैं कि यूक्रेन की सीमा के अंदर से वहाँ के युवाओं और पुरूषों को यूक्रेन के बाहर नहीं जाने दिया जा रहा था। युवाओं को सेना में भरती किया जा रहा था, जिससे वे अपने देश की रक्षा सैनिक के रूप में कर सकें। खुशी-खुशी कोई अपना घर-बार और अपना देश नहीं छोड़ता है।

राहुल का मन अभी भी यूक्रेन और यूक्रेनवासियों की समस्या की तरफ लगा हुआ है। इतनी जल्दी कोई कैसे उन्हें भूल जाए जिनके साथ रहे। यूक्रेनवासियों में ज्यादातर लोग पैसे से मजबूत थे और उनके जानने वाले यूरोप के किसी देश में हैं, और वे उसी देश में शरण लेना चाहते हैं। पर किसी को पता नहीं कि उन्हें मनचाहे देश में शरण मिलेगी। या किस देश में शरण के लिए आगे भेजा जाएगा यह स्पष्ट नहीं है।

यहाँ भारतीय छात्रों का समूह दो विचारों में फंसा हुआ है कि पहले वे जो बिना पढ़ाई पूरी किये हुए वापस अपने देश भारत लौटेंगे। दूसरे भारतीय समूह में युवा छात्रगण थे जो स्वदेश भारत नहीं लौटना चाहते थे; वे भी यूरोप में शरण लेना चाहते थे। वे असमंजस में थे कि उन्हें शरणार्थी की तरह स्वीकार किया जायेगा कि नहीं, अनिश्चितता सभी के मन में थी। बेशक युद्ध की तरह भयावह बंदूक और शस्त्रों की आवाजें नहीं आ रही थीं। परन्तु यहाँ लोग अच्छे भविष्य की तलाश में शरणार्थी बनने को तैयार थे। सभी से फार्म भराये जा रहे थे। जिनके पास पासपोर्ट थे उन्हें भी शरण दी जा रही थी जिनके पास पासपोर्ट नहीं थे उन्हें एक अस्थाई आई.डी. (परिचय पत्र) देकर शरण दी जा रही थी। राहुल असमंजस में था कि वह क्या करें। उसके लिए दादी उसकी सच्ची साथी और सलाहकार थी। पता नहीं क्यों राहुल अपना निर्णय नहीं ले पा रहा था। वह बहुत परेशान था। कभी हनुमान चलीसा पढ़ता तो कभी गायत्री मंत्र। उसके दोस्त डेविड सिंह की हालत भी राहुल की तरह पतली थी। वह

जपजी का पाठ करता। दोनों ईश्वर को याद कर रहे थे दोनों की प्रार्थना के रास्ते भिन्न जरूर थे।

तभी फोन की घंटी बजी, घबराकर राहुल ने फोन उठाया, दादी की आवाज फोन पर सुनकर सुकून आया। दादी से उसने पूछा।

"दादी ने राहुल की बात सुनी तो पहले पूछा, "राहुल पुतर, तूने खाना तो खाया?" "हाँ दादी बहुत खाया है। खाना खाने के साथ खाने का एक पैकेट अपने साथ भी लेकर जा सकते हैं।" राहुल को जवाब देते ही दादी वासुकी बोली, "तेरे दादा जी की तेरहवीं और बरसी में पंडितों को इतना दान दे दिया था कि उसके बच्चे भी काफी दिनों तक खा सकें।" दादी ने नाराज होते हुए राहुल से कहा, "तू भारतीय है इतनी जल्दी हिम्मत हार गया। मैं क्या मर गई हूँ। यह साडा भारत सोने की चिड़िया था, ये यूरोप की अमीरी हमारे देश की बदौलत है। कभी कोई विदेशी आया कभी कोई, हमने सभी को शरण दी, आसरा दिया और आज अपने बच्चे विदेश जाकर अपना भला सोचते हैं। ये कैसी भलाई है पुत्तर। अपने देश आ, यहाँ की सड़कें बना, स्कूल बना, तालाब बना। साडे (अपने) पास सब कुछ है, सूरज की भरपूर रोशनी है, ऊर्जा है। ईश्वर ने भी भारत को मौसम, प्राकृतिक सम्पदा सब दिया है, हम संख्या में भी किसी से कम नहीं।

सारे देशवासी दस-दस ईंट से बेघरों के घर बनायें तो पुत्तर। भारत में कोई बेघर नहीं रहेगा। और निरक्षर को साक्षर करें तो अपना देश यूरोप से ज्यादा तरक्की कर जाएगा।"

"हाँ, दादी मैं भी यही सोच रहा था।" राहुल सोचने लगा कि दादी ठीक कहती है पलायन करना हिम्मत हारना है। हम अपने देश में क्या नहीं कर सकते। हिम्मत और जनता में जागरण की जरूरत है।

मैंने और डेविड सिंह ने स्वदेश वापस लौटने की सोची और उस कतार में लग गये जहाँ भारतीय लोगों को जहाज में स्वदेश भेजा जाना था। कुछ समय बाद हमको बोर्डिंग कार्ड देकर हवाई जहाज में बैठा दिया गया।

वह कितना खूबसूरत नजारा था जब हम दिल्ली के लिए प्रस्थान करने वाले हवाई जहाज पर बैठ गए थे। रंग बिरंगे कपड़े पहने सभी भरतीय लोग खूबसूरत लग रहे थे। भारतीय भाषाओं में लोग ऐसे बात कर रहे थे जैसे किसी बाजार या तीर्थस्थल पर आ गए हों। जैसे मिनी भारत इस हवाई जहाज में आ गया था। मन में तरह-तरह के विचार आने लगे थे। वह नया सपना देखते लगा अपने देश समाज को संवारने का सपना। एक नयी तपस्या और एक नए मिशन की शुरूआत करनी है। क्या सफल हो पायेंगे। दादी का ख्याल आते ही अनिश्चितता दूर हो गयी। दूर के ढोल सुहाने लगें पर सबसे अच्छा अपना घर होता है। पता नहीं कब नींद आ गयी। हवाई जहाज में हुई घोषणा से नींद खुल गयी, हवाई जहाज ने घोषणा की। "कृपया यात्रीगण ध्यान दें। अपनी बगल की खिड़कियों से पर्दा खोल दें। सभी अपनी सीट की पेटी बाँध लें। हम जल्द ही इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरने वाले हैं। अपने सभी इलेक्ट्रानिक उपकरण बंद कर दें, या मोबाइल एयर मोड पर कर लें।"

राहुल का मन रह-रहकर अभी भी यूक्रेन और यूक्रेनवासियों की समस्या की तरफ लगा हुआ था। इतनी जल्दी कोई कैसे उन्हें भूल जाए जिनके साथ रहे। यूक्रेनवासियों में ज्यादातर लोग पैसे से मजबूत थे और उनके जानने वाले यूरोप के किसी देश में है और वे उसी देश में शरण लेना चाहते हैं। पर किसी को पता नहीं कि उन्हें मनचाहे देश में शरण मिलेगी। स्थिति स्पष्ट नहीं थी।

जो अपने-अपने देश जाना चाहते थे उनकी कतार लगी थी और दूसरी कतार थी जो यूरोप के देशों में शरणार्थी बनना चाहते थे।

जहाज एयरपोर्ट पर लैंड कर गया है। राहुल के मन में भी घर वापस लौटने की खुशी है। वह माता-पिता, दादी और भाई-बंधुओं से मिल सकेगा। फिर से अपने कैरियर की शुरूआत अपने देश में करेगा।

नयी फिल्म 'वध'

समीक्षा : प्रो. पुनीत बिसारिया

एक बुजुर्ग दंपति बैंक और गुंडे साहूकार से कर्ज लेकर बेटे को अमेरिका भेजते हैं और वह वहाँ शादी करके बस जाता है, फिर माँ बाप को भूल जाता है और यह भी भूल जाता है कि उसने ही इस कर्ज को चुकाने का वादा किया था। ऐसे में पिता शंभूनाथ मिश्रा और माँ मंजू को किस प्रकार के संकटों में जूझना पड़ता है, यही इस फिल्म की कहानी है। पहले यह फिल्म ग्वालियर के नाम से प्रदर्शित होनी थी लेकिन कोविड तथा अन्य दिक्कतों के बाद विगत ०९ दिसंबर, २०२२ को वध नाम से सिनेमाघरों में और ०३ फरवरी, २०२३ को नेटफ्लिक्स पर प्रदर्शित हुई है, जो अधिक सटीक है क्योंकि ये दंपति दो वध करते हैं, एक शारीरिक है और दूसरा मानसिक है, दो अन्य वध भी हैं, जिनमें से एक आत्मरक्षा के लिए किया गया मनोवैज्ञानिक वध है और अगला प्रतिकार के लिए किया गया सामाजिक वध है।

पूरी फिल्म देखने के बाद कहीं से यह नहीं लगता कि कोई फिल्म देख रहे हैं क्योंकि कहानी बेहद कसी हुई है और पात्रों का अभिनय स्वाभाविकता के शिखर को स्पर्श करता है। संजय मिश्रा (मास्टर

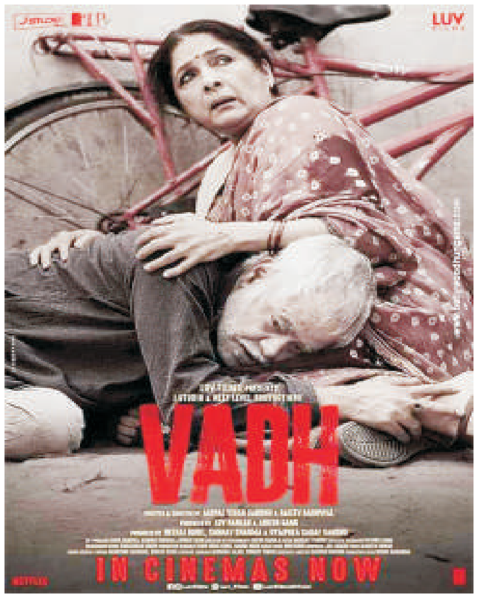

जी) और नीना गुप्ता की जोड़ी ने कमाल का अभिनय किया है, वहीं प्रजापति पाण्डेय की खलनायकीय भूमिका में आप सौरभ सचदेवा से नफरत करने लगेंगे, यह मेरा वादा है और यही इस अभिनेता की सफलता है। मानव विज ने इंस्पेक्टर शक्ति सिंह की सीमित भूमिका में भी छाप छोड़ी है। हालांकि फिल्म के लेखक निर्देशक जसपाल सिंह संधू और राजीव बरनवाल पर पटकथा लेखन के समय दृश्यम फिल्म का प्रभाव अवश्य रहा होगा लेकिन इसका ट्रीटमेंट उससे बिल्कुल अलग है। चूहे की मौत के बहाने लेखक प्रतीकों में भी अपनी बात कह देते हैं, लेकिन नैना के दृश्य, गुंडे द्वारा मास्टर जी के घर का सामान फेंकने बदले में मास्टर जी द्वारा गुंडे की कार तोड़ देने और मास्टर जी द्वारा अपनी पौत्री एरिका से बात करने की जगह हमेशा के लिए वीडियो कॉल खत्म कर देने के दृश्य मार्मिक हैं। चूंकि फिल्म २०१९ में तैयार हो गई थी, इसलिए स्काइप कॉल के लिए मास्टर जी और उनकी पत्नी का साइबर कैफे जाना २०२२-२३ में गैर जरूरी लगता है लेकिन फिर भी सगे रिश्तों की मौत के बावजूद गैर बच्ची की अस्मत बचाने के लिए मास्टर जी द्वारा किया गया वध उनके प्रति संवेदना जगाता है और यही इस फिल्म की सफलता है। एक अविस्मरणीय फिल्म, जिसे भौतिकता की चकाचौंध में बुजुर्गों के लिए लगातार कम होती संवेदना को महसूस करने के लिए अवश्य देखना चाहिए।

कश्मीर फाइल मेरी नजरों में

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

कश्मीर फाइल फिल्म देखी। इस फिल्म का प्रचार सोशल मीडिया पर भरा पड़ा है। इसलिए भारत में हर एक के बीच चर्चा का विषय है।

चूँकि मैंने कश्मीर को पास से देखा है और विस्थापन पर कहानी भी दो दशक पहले लिखी थी इसलिए फिल्म देखने के लिए बहुत इच्छुक था अतः फिल्म देखने की इच्छा पूरी हुई।

कश्मीर फाइल का निर्देशन कमजोर और अभिनय प्रभावशाली-

निर्देशन कमजोर लगा। हिंसा से भरपूर, अन्त में हिंसात्मक घटना की जरूरत नहीं थी।

इस फिल्म को बनाने में वॉट्सऐप में जे.एन.यू. के

विरुद्ध किये गलत प्रचार का इशारा किया गया है जो बहुत नाटकीय और सशक्त है और फिल्म में केन्द्र बिन्दु है।

जिन बातों की कश्मीरी जनता रोज चर्चा करती है, फिल्म से गायब हैं, उसका कारण गाँधी जी की अहिंसा को गलत बताना हो सकता है। कुछ सामग्री चुनाव प्रचार के लिए चुनी हो सकती है।

कश्मीर फाइल के कुछ दृश्य अफगानिस्तान की घटनाओं जैसे लगते हैं। जिस राजनैतिक और आर्थिक कारणों से आज भी पूरे देश में चंदे की उगाही होती है वह भी कश्मीर में एक वक्त बहुत ज्यादा थीं।

पुलिस, बी एस एफ और सेना सुरक्षा सामग्री और रोजमर्रा आवश्यक वस्तुओं, कपड़ों तक के अभाव में सराहनीय कार्य करती है, और खतरनाक अपराधियों और आतंकियों से बचाकर देश की रक्षा करती है उसका जिक्र होता तो अच्छा था।

बहुत सी सूचनायें सही हैं। राजनैतिक टिप्पणियां यह दर्शाता है कि निर्देशक को ऐतिहासिक पक्ष उजागर करते समय वह तटस्थ नहीं रह सका। यह फिल्म साधारण और हिंसा से परिपूर्ण है।

डॉ. राम गोपाल भारतीय की ग़ज़ल

पास आते हुए हिचकिचाते हैं वो
दूर से ही मगर मुस्कुराते हैं वो

मेरी चाहत का कैसे पता हो उन्हें
जब भी मिलते हैं नजरें चुराते हैं वो

छुप गए चाँद सूरज सितारे सभी
जब कभी अपनी पलके झुकाते है वो

जीने को तो सभी जी रहे हैं मगर
जिंदगी क्या है सब को बताते हैं वो

उनसे मिलना है तो बस यही कीजिए
सुनते हैं ख्वाब में आते जाते हैं वो

हमको तुम्हारे हाथ के कांटे कुबूल थे
लेकिन तुम्हारे सब के सब वादे फिजूल थे

तुमने गुलाब कहके जो गुंचा हमें दिया
देखा जो हमने गौर से कागज के फूल थे

पाओगे आम पेड़ से अब दोस्त किस तरह
बोये थे पेड़ तुमने जो, वो तो बबूल थे

दरिया में सियासत की जो इक बार बह गया
सब बह गए पानी में, जो ओढ़े उसूल थे

जन्नत से भी बड़ी है कलमकार की अना
सब तख्तो ताज इसकी ही ठोकर की धूल थे

तिरंगा है

राम राज भारती (विद्या वाचस्पति)

अस्मितामयी आजादी का मान तिरंगा है।
भारत के निज गौरव का गुणगान तिरंगा है।
सदैव रहेंगे तत्पर हम ध्वज के सम्मान में।
हम भारतवासी की ये पहचान तिरंगा है।।१

क्रान्तिवीर बलिदानी गाथा कहे तिरंगा है।
आजाद भगत बिस्मिल ने भी गहे तिरंगा है।
संस्मरण आजादी के जब-जब दोहरायेंगे।
बावन इमली के वीरों संग रहे तिरंगा है।।२

आजाद हिन्द सेना का प्रणठान तिरंगा है।
श्यामलाल, गुप्त पार्षद का ध्वजमान तिरंगा है।
हम सब चिन्तित कैसे होगा ये मनन करें।
छिपे हुये गद्दारों का संधान तिरंगा है।।३

गाँधी जी के आन्दोलन की जान तिरंगा है।
बल्लभभाई नेहरू की मुस्कान तिरंगा है।
लाल बाल औ पाल तथा बाबा का योगदान।
जनगण के इस संविधान की शान तिरंगा है।।४

उपहार का सुमन

मीना गौतम

स्नेह जो सिमटा है फूलों में,
करता है दिल से इज़हार,
प्यार मानव से करता हूँ मैं,
इसलिए आता हर बार।

मौसम के अनुकूल बदलते,
रहते हैं फूलों के रंग,
कभी है बेला और चमेली
कभी फूल है रंग बिरंगा।

है गुलाब का रूप छबीला
लाल गुलाबी है और पीला,
मिलकर शोभा बढ़ी अपार,
प्रीत का स्वर्णिम है ये द्वार।।

प्रेम पूर्ण ये बना सिलसिला,
आया है फूल दिलदार,
गुड़हल और डेलिया लाते,
प्रेम "ज्योति" के पुष्प हजार।।

श्रम

डॉ० उमेश 'आदित्य'

श्रम के पगों ने सभी नाप ली दिशाएं और,
संभव हुआ कभी नदोश को उलोचना।
यदि चाहते कि धरती से शस्य श्यामला हो,
जल से भी ज्यादा स्वेद बिंदुओं से सींचना।

सामने पहाड़ सिंधु गर्जना सुनाई पड़े,
घबराए हुए तू आँख मत मींचना।
वक्त की जरूरत पड़े तो भगीरथ बन
ब्रह्म के कमंडल से गंगा सीधे खींचना।।

कल्पना की दुनियां यथार्थ से बहुत भिन्न,

होती यह बात रोम-रोम में बिठाइए।
धरती के लाल हो करो धरा को धन्य-धन्य,
मनकी कुडोर से पतंग न उड़ाइए।

उपलब्धियों की बागडोर यदि चाहते तो,
भाव भी आराम का हराम ये लगाइए।
श्रम ही सफलता का एक मात्र मूल मंत्र,
सांस प्रति सांस इसको ही दुहराइए।।

स्वावलम्ब के अलावा जिनकी न दृष्टि कहीं,
वही सुखी जीवन का कमल खिलाते हैं।
वीर, शिवा, राणा, असफ़ाक व सुभाष बन,
भारत को सर्वश्रेष्ठ मार्ग दिखलाते हैं।

देश व समाज का कल्याण तभी होता बंधु,
निज स्वेद बिंदु जब भूमि से मिलाते हैं।
जीवन सफलताएं मिलती उसी को मित्र,
जन जो उदधि कूद मोती ढूंढ लाते हैं।।

चंद सपने कुछ ख्वाहिशे है मेरी

डॉ. सीमा गुप्ता

चंद सपने कुछ ख्वाहिशें है मेरी,
दुनिया को बदलने की चाहते है मेरी।
चिंता घुटन बेबसी सबकी दूर कर दूँ,
ऐसी चाहत से भरी कोशिशे हैं मेरी।

सागर की लहरों पर ये

रेनू वर्मा 'रेणु', लखनऊ

सागर की लहरों पर ये
किसने मारी पिचकारी
कौन बैठकर इन्द्रधनुष पर
रंग आया दुनिया सारी।

कहीं पक्षियों का कलरव है
कहीं वीराना छाया है
कोई विदा ले रहा दुनिया है
कोई दुनिया में आया है
कहीं बहा दी गम की नदिया
कहीं ठहाके किलकारी
कौन बैठ कर इन्द्रधनुष पर
रंग आया दुनिया सारी।

कहीं रेत में फूल खिले हैं
कहीं चमन ही बंजर है
कहीं आग का दरिया है
कहीं पर स्याह समन्दर है
कहीं भोर की स्वर्णिम लाली
कहीं रात की अंधियारी
कौन बैठकर इन्द्रधनुष पर
रंग आया दुनिया सारी।

किसी छोर पर तपता सूरज
कही चाँद ऊँधता देखा
कोई होगा जो रखता होगा
इन सब का लेखा-जोखा
सागर दरिया गिरि वन उपवन
कृतियाँ इसकी सबसे न्यारी
कौन बैठकर इन्द्र धनुष पर
रंग आया दुनिया सारी।

समस्त सम्मानित पाठकों को
स्पाइल-दर्पण की ओर से
होली एवं बैशाखी की
हार्दिक शुभकामनायें

Speil gratulerer den
fargerike festivaler Holi og
Vaisakhi.

कदम मिला कर चलना होगा

अशोक सिंह, न्यू यॉर्क

टेढ़े मेंढ़े जीवन पथ पर
बाधाएं सब गहना होगा ।
लक्ष्य अगर हासिल करने है।
कदम मिला कर चलना होगा।
जीवन राह सदा से दुष्कर
बाधाओं का छोर नहीं है
द्वंद स्वयं के, घर के, जग के
इन पर होता जोर नहीं है
असमंजस के चौराहों पर
संगी साथी बहुत मिलेंगे
संयोजन कर सम्बल देने
जैसा करतब और नहीं है।
अंतरंग ही निधि होते हैं
इन का मोल समझना होगा
इक दूजे का सम्बल बन कर
कदम मिला कर चलना होगा।
दुख से विचलित मत होना पर
सुख में रखना सुखमय जीवन
जैसे जेठ दुपहरी, शीतल
हिम भी सहता असमय उपवन
मुश्किल समय भुला कर फिर ले
नव उमंग मधु मास उतरता
उमड़ घुमड़ कर जब आते हैं
पावस और अमृत मय सावन
अच्छा बुरा समय कैसा भी
एक रूप मन धरना होगा
समय ताल की संगति में मिल
कदम मिला कर चलना होगा।
खुद पर यदि विश्वास अडिग तो
बाधा हर पीछे हटती है
याद रहे विपरीत समय में
हिम्मत से ताकत बढ़ती है
जो निष्काम ह्रदय से पूरित
दैविक शक्ति साथ उनके है
प्रेम अगर बढ़ के बाँटा तो
पीड़ा मन की कम होती है
नग नग जीवन छिन्न किया तो
बन नगण्य फिर जीना होगा।
बाधाओं पर विजय के लिए
कदम मिला कर चलना होगा।
जीवन का जो मर्म समझते
धर्म प्रेम को ही मानें हैं
अनुकम्पा और मेल जोल ही
इंसाँ की ताकत माने हैं
कितना भी हो प्रबल आदमी
एकाकी निर्बल ही होता
और साथ जो मिलकर चलता
सुगम भले ही गति जाने है
रज कण से पर्वत बनना यदि
कण कण घुलना मिलना होगा
प्रेम भाव की नित्य डगर पर
कदम मिला कर चलना होगा।

बिटिया

प्रो. निर्मला एस मौर्य

बिटिया तुम्हारा ठुमक-ठुमक कर चलना
कभी हिलकोरे भर रोना, तो, कभी हंसना
तुम्हारी उटंगी फ्रॉक डगमगाते कदम
मुझे अंदर तक आनंदित कर जाते हैं
ए! मेरी नन्हीं परी एंजेल
मुस्कुराकर दरवाजे के पीछे छुप जाना
कभी ठुमकना कभी रूठ जाना
मेरी आत्मा को छू जाते हैं
हर बिटिया की किलकारी हो हर घर में
बिटिया की किलकारी हो
नन्हे पांव में पायल की छम छम
और, नन्हीं चूड़ियों की खनखन हो
ए! बिटिया चली आओ चली आओ
एक दिन कबूतरी बन पंख पसार उड़ जाओगी
अपना नया आशियां बनाओगी
तुम्हारा ठुमक-ठुमक कर चलना
कभी हिलकोरे भर रोना तो कभी हंसना।

साहित्यिक बाजारवाद

विजय त्रिपाठी

इस मंडी में पता नहीं है
तुलसी सूर कबीर का।
नाम न कोई लेने वाला,
नूर तकी या मीर का।
साहित्यिक बाजारवाद में,
सब कुछ यहाँ बिकाऊ है।
बिकना चाहो खुद बिक जाओ,
सौदा करो जमीर का।
अपसंस्कृतिकी शब्द जगत
में लगी अनोखी हाट है।
मूल्यों का इतना अवमूल्यन!
सिर्फ मूल्य का ठाट है।।१।।

सड़ी मछलियाँ कीचड़ खाकर,
कोई खुद को हंस कहे।
अधोपतन की स्पर्धा में,
हंस बेचारा दंश सहे।
मानसरोवर अब साहित्यिक,
मित्र सूखने वाला है।
द्रवीभूत उत्सर्जन कुछ का
उसके चारों ओर बहे।
टेढ़े हाथों पड़ी तूलिका
और पसँगा बाट है।
मूल्यों का अवमूल्यन इतना!
और मूल्य का ठाट है।।२।।

कहते हैं साहित्य न केवल
कुण्ठा की अभिव्यक्ति को।
और नहीं श्रंगार कहेंगे
बस भौतिक अनुरक्ति को।
कुण्ठाओं को शब्द बनाकर
सदा लेखनी घिसने वालो।
नाहक कमतर आँक रहे हो
तुम शब्दों की शक्ति को।
शब्द ब्रह्म है, शब्द शक्ति है,
जग में शब्द विराट है।
मूल्यों का इतना अवमूल्यन!
सिर्फ मूल्य का ठाट है।।३।।

मूल्यहीनता के इस युग में
मूल्य न बचने वाले हैं
प्रगतिशीलता के तर्कों में
छिपे इरादे काले हैं।
जब कोई इतवृत्त लिखेगा
भारत के साहित्य का।
चिर अतीत जो गौरव शाली
कभी न छिपने वाला है।
लंका से कारगिल तक
अपनी गाथा लिखी सपाट है
मूल्यों का इतना अवमूल्यन!
सिर्फ मूल्य का ठाट है।।४।।

नौटंकी के जोकर का भी
कुछ जमीर तो होता है।
किन्तु भाँड़ के सुख-दुख में
क्या कोई हँसता रोता है।
निज अश्लील कहानी लिखकर
सब से ज्यादा बिकने वालों।
जिसकी मरा आँख का पानी
क्या वह जीवित होता है।
उसका जीवन व्यर्थ भले
वह समझे स्वयं विराट है।
मूल्यों का इतना अवमूल्यन!
सिर्फ मूल्य का ठाट है।।५।।

गाँव में कोई हाईवे नहीं होता

विशाल चन्द्र पाण्डेय

शहर में सम्पर्क मार्ग
गाँव में जाने के लिये बनाते हैं।
लेकिन गाँव में अन्दर जाने के
लिए कोई हाईवे नहीं होता है।

सुबह का सुकून

एस. एस. पराशर, दिल्ली

शाम फिर उदासी ला रही थी।
दिन भर का थका
छज्जे मे खड़ा
आज के नफे नुकसान से घिरा,
मै जाकर सो गया।

सुबह उठा, फिर वही छज्जा
पर हवा गुनगुना रही थी।
जेसै कान्हा की उंगलिया
बांसुरी बजा रही थी।
दूर मस्जिद से अजान आ रही थी

गली की दीवारें महक उठी, और गली
इतरा रही थी।
हैरान था कि ये क्या है।
देखूँ तो माजरा क्या है?

झाँक कर देखा तो पाया
सब सजदे मे खुदाई
सर झुका रही है।
रेशमी बालों मे मखमली रिबन बांधे।
मेरी गली से एक बच्ची
स्कूल जा रही है।

यादों जड़ी किताब

पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव

धूल झाड़कर जब पढ़ी यादों जड़ी किताब,
हर पन्ने पर मिल गये सूखे हुए गुलाब।
स्मृतियाँ ताजा हुई सोच अधर मुस्काय,
नव पल्लवित प्रीत की गाथा रहे सुनाय।।

नव कुसुमित को प्रीत थी या थी वो तरूणाई,
मन-मंदिर की सुरभि या रिश्तों की गहराई।
मन सुरभित था सुमन सा, हृदय प्रफुल्लित फाग
ख़्वाबों में था झूमता, सतरंगी आसमान।।

जब मन का ये भ्रम हटा, हुई प्रकाशित राह,
चंचल मन स्थिर हुआ फिर पाया विश्राम।
जो भी था ये सरस था, एक मधुर सा ख़्वाब,
जाते जाते दे गया, सुहृद सजीली थाह।।

यादें अब भी जड़ी हैं, पीली पड़ी किताब,
मन अब भी महका रहे, सूखे हुये गुलाब।
धूल झाड़कर जब पढ़ी, यादों जड़ी किताब,
हर पन्ने पर मिल गये सूखे हुये गुलाब।।

ग़ज़ल

अनिल वर्मा, सिडनी, आस्ट्रेलिया

बरसी यहाँ कल रात में कुछ इस तरह से चाँदनी
कि आज गलियों में अंधेरा है, सड़क पर रौशनी।

कुछ दिनों से हो रही बरसात ऐसी है यहाँ
टेसू हुई धरती सूचा तन हुआ है जामुनी।

आज जब कीलें उखड़ती जा रहीं, किसको पता
कब गलों की फाँस बन जाए घरों की अरगनी।

हर गली में लग गए पोस्टर नये सपने लिए
संखिया पर चढ़ गई वादों की मीठी चाशनी।

कुछ समझ आता नहीं कैसी हवा है चल पड़ी
हर शहर को रात भाती भोर से है दुश्मनी।

हश्र क्या होगा उन्होंने सुन ली गर मेरी ग़ज़ल
सोचकर ही हो रही सारी नसों में सनसनी।

पर बिन जुबाँ के जिन्दगी में छा गई है मुर्दनी।

मैं बिकाऊ माल हूँ

डॉ० दिनेश चन्द्र अवस्थी

पीठ पर मेरी लिखाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।
हाट में मुझको बिठाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

ईमान को कर में लिए, फिर रहा हूँ दरबदर
कुछ बड़ी कीमत लगाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

बुद्धि गिरवी रख खुशी से, भर रहा मैं झोलियाँ,
बुद्धि का सौदा कराओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

तन को है खाक में मिल जाना, निश्चित एक दिन,
तन से तुम कुछ भी कराओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

दिल के दल-दल में फँसा जो, वह निकल पाया नहीं,
दिल के ग्राहक को बुलाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

रूह अपनी बेचकर, मैं मोल लूँगा आसमाँ,
रूह की बोली लगाओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

बेचकर अपना सभी कुछ हाथ खाली ही रहे,
कुछ नया धंधा बताओ, मैं बिकाऊ माल हूँ।

कागज़

नील अमित

जल रहा है दिल कागज़ की तमरह
पर राख अभी भी बाकी है
भूला नहीं हूँ मैं
अभी भी सपनें देखना
वक्त बीत रहा है
पर उड़ान अभी भी बाकी है
डरा नहीं हूँ मैं कभी भी कठिनाईयों से
अपने दो मुसीबतों को
संघर्ष अभी भी बाकी हैक
निकला हूँ अलग जिन्दगी की तलाश में
सफ़र तो बहुत मुश्किल है
पर जान अभी भी बाकी है।

बन गया मैं भी इमारत

महेन्द्र के वर्मा, यॉर्क, यू०के०

थी कभी
यह ऊँची इमारत
ईसा की इबादत
के लिए।
पर खड़ी है आज यह
बिल्कुल अकेली।

चल रहा हूँ
मैं भी अकेला
आज अब
इस राजपथ पर।

कर लिए
सब काम मैंने,
घूम आया सब धाम
मै अब।
गा लिए सब गीत मैंने
कर लिए सब जाप मैंने।

जाने का समय भी
अब आ गया है।
यह इमारत अकेली
है खड़ी।
मैं भी अकेला
हूँ खड़ा।

जाते समय
अब इन क्षणों में
कर रहा हूँ
सब का नमन मैं।

चाहता हूँ
कह दूँ सब अकेली इमारतों से
सुन लिए
सब गान तेरे, तान तेरे,
आह्वान तेरे, अजान तेरे।
रह गयी तुम भी अकेली
रह गया मैं भी अकेला।
बन गया मैं भी इमारत।

तेज हवाएँ

अनीता कपूर, यू.एस.ए.

तेज हवाएँ
रिमझिम बारिश भी
पेड़ों ने पुराने पत्तों को उतार
बारिश में नहा कर
नए पत्ते पहन लिए हैं
पेड़ ने भी इन्सानों की
नकल करना सीख लिया है

जीवन

नीरजा शुक्ला 'नीरू', कनाडा

आंखे हुईं जब इतनी नम
आंसू सैलाब उमड़ आया
दर्द बहुत कातिल निकला
चुपचाप वार करता आया
जीवन के पन्ने पलटते रहे
उसको कोई रोक नहीं पाया
वक्त के हाथ मजबूर हुए
कोई उससे ना लड़ पाया
बसंत बन गया पतझड़
हरा पेड़ भी मुरझाया
मौसम के रंग बदलते गये
ऋतुओं में परिवर्तन आया
बस ऐसा ही ये जीवन है
कोई इसका पार नहीं पाया
कभी क्रंदन कर चीत्कार उठा
कभी इंद्रधनुष सा इठलाया
पर सुख दुःख में मुस्काते रहे
हौसला ना तोड़ कोई पाया
आस का दीपक जलता रहा
उसको ना कोई बुझा पाया।

हाइकु

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

रस झरता
जीवन में जब हो
समरसता!

देखा सुमन
छा गया मधुमास
मन के वन।

एक ही पल
दृश्यों से भर जाता
पूरा पटल।

खिल गया है
फूल कोई बाग में
रंग मैं उठी।

पृथ्वी की शान
किरणें करा रहीं
धूप से स्नान।

जीवन मिला
सूखे सरोवर में
अम्बुज खिला।

बड़े विचित्र
यादों के कैमरे से
खींचे हैं चित्र!

दूर देश में
बूढ़ी आँखों का तारा
फोन सहारा।

कैसा अन्याय
काँटों ने बांच डाले
सारे अध्याय।

अपराध हैं
अपराधी कौन हैं
सभी मौन हैं।

नियति बोली
बीतने दो रात को
होगा सबेरा।

माँ के सपने
रंग भरे जिनमें
अब हमने।

यह अँधेरा
रोशनी को मात दे
सम्भव नहीं।

ली है शपथ
रुक नहीं सकता
हमारा पथ।

मुखर्जी नगर से पलायन कर रही हैं तितलियां

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
ओस्लो, नार्वे

एक मौसम के जीवन में
अधिकतम जीना चाहती हैं,
सोयी आस्था के सपनों पर
रंगीन सपनें सजाती तितलियाँ।

करोड़ों युवाओं की तरह
ओम सपरा के मुखर्जी नगर से पलायन कर रही हैं तितलियाँ।

कपोल नौकरियों के चक्रव्यूह में,
आई ए एस पर करोड़ों
खर्च करके,
रेगिस्तान में पानी
खोज रही हैं तितलियाँ।

युवाओं द्वारा भविष्य खोजने के प्रयास में,
वर्तमान को मुट्ठी में
बालू को
समेटने के प्रयास में,
वर्तमान को खो रही
युवा तितलियाँ।

आकाश में जुगनुओं
आँगन में गौरयों सी
लुप्त हो रही तितलियाँ।

ग़ज़ल

रामअवतार बैरवा

ओ! लेके रूप कंचका, द्वारे आई अम्बिका
बांध बालों में रिब्बन, लगा माथे पे टीका

पहनके नाक में नथनी, डाल कानों पे झुमका
तेरी चूनरी का गोटा, है सोने-चांदी का

तेरी कंठी में चमकें, चांद सूरज की कणिका
तेरे कांधों पे मैय्या, है सारा भार जगत का

बाजूबंद में तेरे, हैं सारी तंत्र मंत्रिका
तेरे हाथों ने मैय्या, लिक्खा भाग्य सभी का

तेरी नाभि से माता, नाता मेरा सात जन्म का
तेरे चरणों में लेटा, तारक इस भवसागर का

आगे हनुमन का झंडा, पीछे डंका भैरव का
तेरे आने से मैय्या, मेरा घर आंगन महका

ओ ! लेके रूप कंचका, द्वारे आई अम्बिका।

शीत राग की मधु बेला में जब सब पत्ते झड़ जाएंगे
तलहट से कुछ नन्हें पौधे नम घूप पकड़ने आएंगे।

बीच सड़क पे बे-बस अम्मा तारों से लिपटके रोयेगी
आधी रात जब भूखे बच्चे चाँद को खाने जाएंगे ।
सावन को कसम दिला देना,
इस बार न बरसे सूरत पे
हम किसी सूखे दरिया

से प्यास मांगने जाएंगे ।

रात की परवाह मत करना
हम तन्हा एक मुसाफिर हैं
जब तारा आखिरी छिप जाए, वहीं तुम्हें हम पाएंगे।

एक चादर अपने आँगन में
बेवजह ही तान के देखो,
शाम मुहाने कई मुसाफिर
एक रात काटने आएंगे
जाने कैसे हवाओं में असर कर देते हैं
अक्षर को शब्द और शब्द को अक्षर कर देते हैं।

चाँद डूब जाता है मुहब्बत के समन्दर में
महज जल तरंग से ऐसी लहर कर देते हैं।

जुगनू जी भर झूमते हैं निशा गान सुनकर
नभ के आंगन में ऐसी सहर कर देते हैं।

शब्द, ब्रह्म है और ब्रह्म, शब्द है ये तो जाना है
मगर ये तलफ्फुज को भी ईश्वर कर देते हैं।

चिड़िया गा उठती हैं दूर अपने ठिकानों पर
इतने पास संकेत धुन का सजर कर देते हैं।

जल तरंग - लौटे में पानी भरकर
बजाने वाला एक संगीत
सहर - सुबह
तलफ्फुज - उच्चारण
संकेत धुन - जिससे आकाशवाणी के
कार्यक्रमों की शुरुआत होती है।

छंदमुक्त प्रेमयुक्त

अन्नदा पाटनी, अमेरिका

कहते नहीं हो कुछ भी,
पर मैं सब जानती हूँ।
हिचकियाँ आकर मुझे
सब बता जाती हैं।
सुबह चाय की तलब उठती है
तो मुझे याद करते हो।
खाने के समय भूले से
जुबां पर आते आते तुम्हारी पुकार,
मेरे कानों में गूंज जाती है।
मेरी तस्वीर चुपचाप
उठा कर जो ले गए हो
जानती हूँ
तुमने अपने तकिए के नीचे रख दी है,
हर रात चूम कर उसे सोते हो
ताकि सपने में मुझे देख सको।
मानोगे थोड़े ही तुम
पर मैं जानती हूँ कि
सामने नहीं हूँ फिर भी
याद बहुत आती हूँ मैं,
हर पल,हर पल, हर पल।

दर्द

प्रो. महेन्द्र के. वर्मा, न्यूयार्क, यू.के.

जी करता है
कुछ बोलूं
क्या बोलूं?
किस से बोलूं?
कैसे बोलूं?
बतियाऊं, भी तो
किस भाषा में?
किस से बांटूं
वह दर्द, वर्षों से जो
खामोश पड़ा है
मेरे अंतर्मन में।
पाल रहा हूँ,
पोस रहा हूँ,
जिसे अकेले तब से।
उसे जगाऊं कैसे?
उसे मनाऊं कैसे अब?
बोलो, कुछ तो बोलो,
अब तो बोलो।
बेआबरू हो, बैठ गया है वह
दुबका बैठा है चुपचाप।
और मैं, सोच में डूबा
सिसक रहा हूँ
खामोशी और तन्हाई में।
दर्द, कुछ तो बोलो,
तुम्हारी है
क्या यह दीवानगी?
या है मेरी नादानी?
समझ पा रहा नहीं मैं
तेरी ख़ामोशी को
कुछ तो बोलो
कैसी है मर्यादा
है कैसा यह मर्म तुम्हारा
कैसा है यह राग
सुन सकता जिसे नहीं मैं।
बोलो, कुछ तो बोलो।

माँ

प्रवीण गुप्ता, ओस्लो, नार्वे

माँ ने बोलना सिखाया तो पिता ने चलना,
गिरते हुए मुझको संग दोनों ने सिखाया
संभलना।
माँ जो करती बड़ी से बड़ी गलती माफ,
और पापा हहा... हाँ सिर्फ पापा जिनका
पूरे घर पर चलता इंसाफ।
असफल होने पर दिल ना छोटा करना ऐसी
हिदायतें देती मेरी माँ, और पापा मुझ पर तो
हर वक्त छिड़कते अपनी जान।
जो भी आज हूँ उन्हीं का है एहसान,
दुआ है जमाने भर की खुशियाँ मिलें उन्हें
और जिंदगी तलक बन कर रहें वो मेरी शान।

ग़ज़ल

राय भट्टी, ओस्लो, नार्वे

बन गये हालात ऐसे, तन कहीं है मन कहीं।
वो यहाँ पर रह रहे हैं, दिल कहे चलिये वहीं।
हुस्न को तो बंदिशों में,
कैद कर सकते हो पर,
बंदिशों में कैद करना, इश्क को मुमकिन नहीं।
उसको ही बस देखने से,
दिल को मिलता है सुकून,
इस शहर में यूँ तो चेहरे हैं,
बड़े दिलकश हसीं।
कह रहा था और कुछ,
वो कर गया है और कुछ,
प्यार था सच्चा मेरा, तो कर लिया मैनें यकीं।
उम्र का सूरज जवाँ है, हसरतों पर है शवाब।
प्यार की बारिश की रुत में,
खुश्क है दिल की जमीं।

कसम खायी है मुस्कराने की

नीरजा शुक्ला नीरू, कनाडा

जिंदगी की जिद है हमें हराने की
हमने भी ठानी है जीत जाने की
बड़ी उम्मीदसे तुझसे दोस्ती की थी
पर तू न बन सकी मेरे ठिकाने की
जरा इस वक्त ने क्या तेवर बदले
हकीकत सामने आ गयी जमाने की
थे जिनके साथ हरवक्त हरकदम पे हम
उन्हीं ने साजिश की हमें फंसाने की
दिल जला के रोशन किया जिनको
उन्हीं ने कोशिश की हमें बुझाने की
दस्तूर-ए-दुनियाँ है यही शायद
नीरु ने कसम खाई है मुस्कुराने की।

दूसरों को सम्मानित करना अपने को सम्मानित करना है -राजेन्द्र कुमार तिवारी, पूर्व मुख्य सचिव, लखनऊ

लखनऊ। सुरेशचन्द्र शुक्ल के जन्मदिन की पूर्व संध्या पर राजेन्द्र कुमार तिवारी (पूर्व मुख्य सचिव) एवं अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने यू.पी. प्रेस क्लब में डा० मंजू शुक्ला के साथ मंजूषा परिषद की ओर से सम्मानित किया। राजेन्द्र कुमार तिवारी जी ने 'शरद आलोक' के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मैंने स्वीडन और नार्वे की यात्रा के दौरान इनके कार्यों को समीप से देखा है, जिससे वहाँ हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है।

राजेन्द्र कुमार तिवारी जी ने उनके जीवन पर एक लम्बी कविता सुनाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि शरद आलोक भारत और नार्वे के बीच सेतु का, हिन्दी का प्रचार-प्रसार का कार्य किया है। लखनऊ विश्वविद्यालय में वर्तमान में इन पर एक विद्यार्थी पी०एच०डी० कर रहा है। इससे पहले भी इन पर अनेक शोध किये जा चुके हैं। प्रो० कृष्णा जी श्रीवास्तव (लखनऊ विश्वविद्यालय) ने कहा कि शरद आलोक ने हनुमान चालीसा और जपजी का नार्वेजीय भाषा में अनुवाद किया है जो बहुत सराहनीय है। प्रो० कृष्णाजी श्रीवास्तव ने आगे कहा, कि सुरेशचन्द्र शुक्ल के नाटक और अनुदित नाटक का मैंने मंच पर पाठ किया है, जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा है। इनकी कहानियों पर लखनऊ विश्वविद्यालय में शोध हुआ है जिसका कि मैं निदेशक रहा हूँ, कि इनकी कहानियाँ सामायिक और याद रहने वाली है।

प्रेस क्लब में एक सारस्वत सम्मान का सम्बोधित करते हुये पूर्व मुख्य सचिव

शोभा बाजपेई (पूर्व विभागाध्यक्ष, के०के०वी० स्नात्कोत्तर महाविद्यालय) ने कहा कि सुरेशचन्द्र शुक्ल हमारे विद्यालय के प्रोडक्ट हैं जिन्होंने हमारे विद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है। फिल्माचार्य आनन्द शर्मा ने कहा, मैंने सुरेशचन्द्र शुक्ल के ६ नाटकों के मंचन का निर्देशन किया है। इनके नाटक प्रायोगिक है और मंच पर आसानी से मंचित किये जा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, आज जब फिल्म में भाषा की गुणवत्ता घट रही है वहीं इनकी लघु फिल्मों में भाषा परिष्कृत है। अनुभूति और अभिव्यक्ति नेट पत्रिका की सम्पादक पूर्णिमा वर्मन ने शरद आलोक के इण्टरनेट पत्रिका में योगदान पर प्रकाश डाला।

कलाकार अनूप अवस्थी ने अपनी एक कलाकृति भेंट की।

कार्यक्रम में बहुत लोगों ने शुभकामनायें दी, जिनमें शिव राम पाण्डेय, वीरेन्द्र मिश्र, नरेन्द्र दूबे, सीमा अवस्थी, रवि मोहन त्रिवेदी, विशाल चन्द्र पाण्डेय 'नीरज', मुन्ना लाल शुक्ला, सुषमा सौम्या एवं अन्य थे।

भावों में तपन क्यों है

विनीता रानी विन्नी

कुछ कहा भी नहीं जाता,
अब रहा भी नहीं जाता,
अजब सी बेचौनी है दिल में,
दर्द सहा भी नहीं जाता।

थम क्यों नहीं जाती सांसे,
जाने क्या चाहती हैं रातें,
कसक रहती है हर पल,
दिल कुछ बता नहीं पाता।

भावों में तपन क्यों है,
तन्हाई में चमन क्यों है,
शूल में ही रहते हैं फूल,
मन क्यों समझ नहीं पाता।

मुझे कभी नहीं चेतेगा तू,
अश्कों को नहीं देखेगा तू,
ललक सी क्यों है जिगर में,
मुझे तू सुला क्यों नहीं जाता।

हवा-पानी और धूप

प्रो. निर्मला एस. मौर्य

हवा पानी और धूप मिले एक दिन
हवा सरसराई धीरे से फुसफुसाई
पानी को हिलाया लहरें उठाईं
आगे बढ़ी और जोर से खिलखिलाई
वो थी खिली-खिली, जोश से भरी-भरी,
लगाए ठहाके, फिर गुनगुनायी
खोजा झरोखा, छोटा सा आंगन
दोनों थे गायब, हुई अनमनी-सी
किरणें समेटी, बढ़ी और आगे
दीवारें खड़ी थीं, इमारतें थीं ऊंची
नहीं खोलते थे अब लोग खिड़की
नहीं खोलते थे अब लोग खिड़की
हवा, पानी और धूप मिले एक दिन
हवा सरसराई धीरे से फुसफुसाई
पानी को हिलाया लहरें उठाईं।।

जग से ऐसा प्यार किया है

डॉ० गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'

जग से ऐसा प्यार किया है
तलवारों की धार जिया है।

जितने प्याले मिले गरल के
हँस-हँस बारंबार पिया है।

घाव छिपाकर सुमनों वाले
काँटों से अभिसार किया है।

झूठों के मुँह सच दे मारूँ
यह कोशिश सौ बार किया है ।

आँसू पोंछ नम आँखों के
यों गलती हर बार किया है ।

नागफनी बाँहों में देकर
उसने कहा बहार दिया है।

गले लगाते गर्दन गायब
क्या वाजिब व्यवहार किया है।

मातृभाषाओं में शिक्षा दें - प्रो. सूर्यकान्त, किंग जार्ज मेडिकल कालेज।

२२ फरवरी २०२३ को किंग जार्ज मेडिकल कालेज लखनऊ में परिचर्चा हुई कि कैसे अपनी मात्र भाषाओं में चिकित्सा और तकनीकी पुस्तकें प्रकाशित हों। उत्तर प्रदेश में कैसे चिकित्सा शिक्षा शुरू हो।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रवासी साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने कहा कि वह अविभावकों और स्कूलों को मातृ भाषा में शिक्षा दिलाने में प्रोत्साहन के लिये हर सहयोग करेंगे। हमको हीन भावना त्यागकर अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम से शिक्षा देनी चाहिये। उउन्होंने आगे कहा कि उत्तर प्रदेश भविष्य में राजनीति की तरह हिन्दी में चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा का केन्द्र बने।

चित्र में बायें से कवि पंकज प्रसून, सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' प्रो. डा. सूर्यकान्त, प्रसिद्ध समालोचक सूर्य प्रसाद दीक्षित एवं डा. बलजीत श्रीवास्तव

१०८ आलोचना की पुस्तकें रचने वाले आलोचक प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिन्दी में क्षमता है और मातृभाषा में उच्च शिक्षा सम्भव है जिसके लिए विद्वानों को आगे आना होगा।

इस संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी में चिकित्सा की सात पुस्तकें लिखने वाले और अनेक पुरस्कार प्राप्त प्रसिद्ध चिकित्सक प्रो. सूर्य कान्त ने किया।

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्व विद्यालय के सहायक आचार्य डा. बलजीत श्रीवास्तव, लंदन में ४० वर्षों तक चिकित्सक रहे डॉ. आई. एस. भटनागर, नगर के प्रसिद्ध हास्य कवि पंकज प्रसून सहित अनेक गणमान्यों

उपस्थित में प्रो. सूर्य कान्त जी ने शाल और पुष्प गुच्छ से सुरेशचन्द्र शुक्ल और प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित को सम्मानित किया।

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी को फिजी में सम्पन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी सम्मान के लिये बधाई दी गयी।

बैसाखी का शुभ दिन

ओम सपरा

हवा में कुछ ताजगी है,
आज फिर बैसाखी का शुभ दिन आया है,
कुछ नयापन-सा,
फिर आज मेरे जज्बातों में आया है।
अब मेरे संग-संग
तुम भी गुनगुनाओ मेरे भोले मन।
बुझे हुए दिलों के
मुस्कराने का दिन आज आया है।

आज कुछ नये रंग बिखरे हैं
इन शीतल हवाओं में,
दोस्तों के संग-संग, हंस कर
मुस्कराने का दिन आया है।
बुला लो इनको प्यार से,
और बना लो अपना उनको,
घाटियों में सबका दिल
जीतने का दिन आ गया है।

बंदूक ले लो हाथों से उनके,
हमारे ही भटके हुए युवक हैं,
हाथों में उनके अब पुस्तक
थमाने का दिन आ गया है।
ऋशियों की भूमि है यह,
और अनमोल कष्मीर है स्वर्ग सा,
केसर की वादियों में अब
जन्नत बनाने का वक्त आ गया है।

रक्तरंजित है, रोज का अखबार
दहशत की खबरों से अब,
मजबूत करके दिल, गलतियां
सुधारने का दिन आ गया है।
अभी दुश्काल चल रहा है,
कोरोना का दुखद दो साल से,
नये वक्त के संग कोरोना से
जंग का वक्त आ गया है।

जीवन एक तंदूर

डा कुंवर वीर सिंह मार्तंड, कोलकाता

श्रम की भट्टी में तपने को
हर मानव मजबूर।
जीवन एक तंदूर है यारो, जीवन एक तंदूर।
भूख प्यास के दो पाटों बिच
गेहूँ सा पिसता है।
किसी शांति की चाहत में
फिर आटे सा गुंधता है।
लोई सा बिलता है
बिलकर रोटी सा सिकता है
थाली तक जाने की खातिर
पैसे से बिकता है।
पापी पेटों को भरने हित
बनता है मजदूर। जीवन एक तंदूर।
नन्हा पौधा एक
गगन को छूने को बढ़ता है।
लता गुल्म बन किसी पेड़ की
डाली पर चढ़ता है।
आरी से कट जाता है
फटकर ईंधन बनता है।
ईंधन बनकर अंत समय में
भट्टी में जलता है।
जलकर बनता धुआं
धुआं बन जाता नभ में दूर।
जीवन एक तंदूर।
जलने वाला काठ कोयला
राख बना करता है
जीवन भी तो जलते जलते
खाक बना करता है।
रोटी भी तो पचकर गलकर
मिट्टी बन जाती है।
दुनिया की हर एक वस्तु
मिट्टी में मिल जाती है।
राजा रंक सभी जन
एक दिन बनकर उड़ें कपूर।
दुनिया एक तंदूर।
यारों दुनिया एक तंदूर।

हमसफर

प्रमिला कौशिक

मेरा जो हमसफर है
मुझे जान से भी प्यारा है।
है उसे भी लगाव मुझसे
जहान में सबसे न्यारा है।
कहीं भी जाए वह
अपने साथ मुझे ले जाता है।
देता है भरपेट भोजन
पीने को भी कुछ दे जाता है।
पूरी-सब्जी, कभी आलू-पराँठे
चिप्स-बिस्कुट मिलते हैं खाने को।
पानी, फ्रूटी, कोकाकोला
तो कभी जूस भी मिलते पीने को।
वस्त्र, मंजन, साबुन, इत्र और
मेरे जूतों का भी वह ध्यान रखे।

कंघा, क्रीम, दवा यहाँ तक
लैपटॉप मोबाइल का भी मान रखे।
बाहर जाने पर वो मेरे
दरवाजे-खिड़की बंद कर देता।
धूल न जाए श्वास तंत्र में
मेरे हित सारे उपाय कर लेता।

लेकिन घर आने पर मेरे
द्वार-झरोखे खोल सब देता।
बिस्तर पर फिर लेट आराम से
साँस भी खुलकर तब लेता।
पैरों में मेरे स्केट्स लगाकर
मुझे सड़क पर नहीं चलाता है।
मेरा सिर अपने कंधे पर रख
कभी हाथ पकड़ ले जाता है।
समझ गए होगे अब तक तो
हमसफर का कौन हूँ मैं ?
दिल के करीब कंधे पे लटका
प्रियतम का प्रिय बैग हूँ मैं।।

Statsministerens nyttårstale 2023

Kjære alle sammen. Det har blitt kveld på årets første dag. Uansett om du har feiret en tradisjonell familiejul, jobbet eller vært mest for deg selv, så håper jeg at du har møtt noen du er glad i.

Fellesskap og samhold er alltid viktig, og i året vi har foran oss blir det ekstra betydningsfullt.

Noen år gir oss følelsen av å starte med blanke ark.

Det synes jeg er vanskelig i år.

Krig i Europa. Høye priser. Klimaendringer.

Uroen vi kjente i 2022 er her fortsatt.

Det vi lenge har tatt for gitt, som fremgang og stabilitet, er ikke lenger like selvfølgelig.

Vi blir bekymret når det er krig i våre nærområder.

Når rentene øker.

Når alt vi har bruk for blir dyrere.

Og når det blir vanskeligere å legge planer for fremtiden.

Da er det enda viktigere at vi står sammen i landet vårt.

Det virker lenge siden, men det er bare et år siden jeg satt her og snakket om munnbind og «meter´n».

I fellesskap kom vi gjennom koronapandemien.

Det var tungt, men vi klarte det.

Jeg er trygg på at vi kommer oss gjennom de tunge tidene nå også.

Så la oss, på årets første dag, tenke over hva det vil kreve av hver og én – og av oss som fellesskap.

Når vi opplever motgang, er det viktig å sette ord på hvordan det føles.

Noen var ekstra modige i fjor, og fortalte at de følte seg ensomme.

Flere av våre unge delte hvor vanskelig det var å komme videre med skole og fritidsaktiviteter etter pandemien.
Noen åpnet opp om psykiske problemer.
Andre om hets og rasisme.
Flere tok mot til seg og sa at de var fattige, og ba åpent og ærlig om hjelp. Det kan være vanskelig nok i et av verdens rikeste land.
Å be om hjelp er ikke noe vi skal skamme oss over.
Selv om vi helst vil greie oss selv og ikke være til bry.
Men dere, det er ingen som klarer alt.
Vi trenger alle hjelp til noe. Og selv om ingen kan hjelpe alle, kan alle hjelpe noen.
Når det er krig i Europa, prisene stiger og det er uro i økonomien, kommer flere til å trenge støtte, oppmuntring og hjelp.
Heldigvis har vi hverandre, mange har hjelp fra familie, nabolag og kolleger.
Og sammen har vi velferdsstaten i Norge.
Den er ikke til pynt, den er et spleiselag vi har bygget opp gjennom generasjoner.
Velferdsstaten er der for å bli brukt.
Skal vi komme oss gjennom vanskelige tider, må vi ta vare på hverandre og bruke ressursene som ligger i et sterkt fellesskap.
Som i møte med høye strømpriser. De rammer alle i Europa fordi Russland har stanset nesten all gasseksport.
Norge var tidlig ute med en strømstøtteordning, der staten tar en stor del av folks strømregning, og det vil fortsette i 2023.
Den varige løsningen på energikrisen er at vi produserer mye mer fornybar kraft fra vann, vind og sol, så prisene i fremtiden kan være lave og stabile for folk og bedrifter. Det er vi godt i gang med.

Vi har et sterkt fellesskap i Norge. Det har mange ukrainske flyktninger fått kjenne på de siste månedene.
Vi har så langt tatt imot 35 000 flyktninger fra Ukraina. Det kan bli like mange i år.
Folk har åpnet hjemmene sine, og kommunene har gjort en formidabel innsats med å bosette flyktninger rundt om i hele landet. Ja, hver eneste kommune i Norge – fra lille Utsira til storbyen Oslo bosetter flyktninger.
Millioner av ukrainere er på flukt fra krigens redsler. Andre møter nå den kalde vinteren i Ukraina uten vann og strøm.
Jeg har på vegne av Norge sagt til president Zelenskyj at ukrainernes kamp også er vår kamp. De forsvarer retten til frihet, demokrati og selvstendighet.
Derfor skal vi hjelpe ukrainerne også i året som kommer, med nødhjelp og hjelp til å forsvare seg selv. Og ved å få flyktninger ut i arbeid og inn i fellesskapet her i Norge.
I fjor møtte jeg mange ukrainske flyktninger rundt om i Norge.
Narek er en av dem. Etter bare noen uker i Bergen fikk han jobb på en restaurant ikke langt fra Bryggen.
Narek serverte meg «perse-torsk» - en tradisjonell bergensrett.
Han fortalte stolt at han nettopp hadde lært seg oppskriften.

«Vi har ikke angret et sekund på at vi ga Narek jobb», sa restauranteieren. Jeg håper flere finner muligheten til å tilby ukrainere en jobb i landet vårt.

Møtet med Narek minnet meg på betydningen av arbeid. Av å kunne forsørge seg selv og tjene egne penger.

Ikke alle kan det, og de som ikke kan jobbe, skal vi ta godt vare på. Men mange som står utenfor arbeid både vil og kan arbeide. Det skal vi hjelpe til med.

I Trondheim, på Scandic Nidelven hotell, fikk jeg følge Adrian og Robert på en vakt på kjøkkenet tidlig i desember.

De har en utviklingshemming, og har fått jobb gjennom ordningen «Helt Med». De møtte meg med en kunnskap og yrkesstolthet som gjorde dypt inntrykk.

Selvsagt skal vi som fellesskap legge til rette for at de skal kunne jobbe.

Arbeid er viktig for å ta vare på seg og sine, for den psykiske helsen og for å føle at vi er til nytte.

Arbeid viser at vi stiller krav og forventninger til hverandre.

Arbeid er viktig for å holde næringslivet og økonomien i gang, men det er også viktig for at vi skal kunne betale for utdanning, forskning og kunnskap: Alt det som gjør at vi som samfunn kan omstille oss. At vi kan løse problemer og skape nye muligheter.

Ja, at vi får frihet til å forme vår egen fremtid.

Hvis vi skal kunne bestemme over fremtiden, må vi finne løsninger på klima- og naturkrisen.

Klimaendringene er skapt av mennesker.

Derfor må klima- og naturkrisen også løses av mennesker, av kunnskapen vår, teknologien og politisk handlekraft.

Skal vi lykkes, må alle bidra, alle ta ansvar, for små valg vi tar i hverdagen – og for de store valg vi tar gjennom omstillingen av energi og andre naturressurser.

I året som har gått har Norge hevet klimamålene. Men viktigere enn å sette høye mål, er å ha realistiske planer og tiltak for å nå målene. Det har Norge.

Som i Gulen i Ytre Sogn, der de setter sammen noen av de første, enorme flytende havvind-møllene som skal ut i Nordsjøen.

Som i Brevik i Telemark og på Klemetsrud i Oslo, der de lager anlegg som fanger den skadelige klimagassen CO2. Som i Øygarden utenfor Bergen der de gjør klar for at denne klimagassen kan fraktes ut i Nordsjøen og lagres trygt på mer enn 2000 meter under havbunnen.

Eller i Arendal og i Mo i Rana der de bygger nye verdensledende batterifabrikker.

Norske bedrifter med dyktige medarbeidere, mange av dem med erfaring fra olje- og gass-sektoren, leder an i dette grønne skiftet.

Sammen kutter vi utslipp, skaper nye jobber og nye energiformer. Sammen skriver vi nye kapitler i norgeshistorien.

Kjære alle sammen,

Å gjøre Norge til Norge, er ikke noe vi en gang blir ferdige med.

Norge er ikke noe vi oppnår en gang for alle.

Norge skaper du og jeg, gjennom små og store valg, hver eneste dag. Ikke hver for oss. Men sammen.

Når vi jobber.

Når vi hjelper noen rundt oss.

Når vi tar på alvor en grunnfestet norsk verdi om å gjøre din plikt og kreve din rett, i den rekkefølgen.

Og når vi løfter blikket bort fra de ofte brutale kommentarfeltene i sosiale medier, og møter hverandre ansikt til ansikt som de vi er i alt vårt mangfold.

Etter masseskytingen i Oslo 25. juni i fjor, der to mennesker ble drept og over 20 skadet, gjorde vi nettopp det: vi samlet oss og sto sammen mot hat og hets. De ansatte på utestedene der skytingen fant sted, stilte opp for de som ble rammet – de vek ikke unna – men åpnet opp igjen dagen etter.

I Pride-paraden i september møtte jeg Karoline og Tina fra Valdres.

De opplevde grov hets fordi de hadde sagt ja til sine egne følelser. Til hverandre. Valgt å gifte seg og få barn.

De gikk ut med sin historie, og mens vi gikk der i Pride-paraden, sa de til meg: «Dersom vi trekker oss unna, så vinner de andre».

Det neste året vil jeg at vi alle skal gjøre som Karoline og Tina.

Ikke være redde, ikke trekke oss unna, ikke dukke.

Selv om det av og til kan være ubehagelig, så investerer vi i noe av det beste og sterkeste vi har, fellesskapet og samholdet.

11 år gamle Embla fra Bergen holdt barnas nyttårstale i går. Hun besøkte meg på kontoret for noen uker siden og ga råd til min nyttårstale. Jeg vil sitere henne, for hun sa det så godt:

«Hvorfor dytte når du kan klemme? Hvorfor banne når du kan gi ros? Hvorfor hate når du kan elske?».

Det er summen av våre handlinger og holdninger som former hvem vi er som fellesskap.

Selv om vi er forskjellige. Er unge og gamle. Kommer fra by og land. Har ulik tro. Stemmer på forskjellige politiske partier. Og opplever krevende tider på ulikt vis.

Sammen kan vi velge samhold om alt vi har felles fremfor frykt for det som er forskjellig. Sannhet fremfor falske nyheter.

Og forståelse fremfor fordømmelse.

La oss samle oss om det. Legge noen av motsetningene til side. Være rause med hverandre og oss selv.

I julen har mange stilt opp for de som synes høytiden er vanskelig. Bostedsløse, personer med rusproblemer, eller de som ikke finner sin plass i en tradisjonell norsk familiejul. Jeg vil hilse spesielt til dere, og til de mange tusen som jobber når andre har ferie eller sover – politifolk, brøytebilsjåfører, dere som jobber på plattform, ansatte i sykehus og eldreomsorg, og andre som jobber skift og turnus.

Jeg vil takke kvinner og menn i uniform som bidrar til forsvaret av Norge og stiller opp for sikkerheten for våre allierte.

2022 var frivillighetens år. Ved starten av et nytt år vil jeg hilse til alle dere som bidrar til det frivillige Norge, og særlig til mammaer og pappaer som gir våre unger et tilbud innen idrett og kultur. Dere er gull verdt for fellesskapet vårt.

Så er vi alle takknemlige for den utrettelige gjerningen Kongen og Dronningen gjør for landet og for folket. Vi sender dem og resten av kongefamilien våre beste ønsker for det nye året.
Og til hver og en av dere der hjemme: Godt nytt år!

Endringer i lover og forskrifter fra 1. januar 2023

Ved årsskiftet trer en rekke nye lover og forskrifter i kraft. På denne siden finner du en oversikt over noen av de viktigste regelendringene. Oversikten blir fortløpende oppdatert fram mot årsskiftet.

Sykepenger, omsorgspenger og pleiepenger

Fra årsskiftet trer en rekke mindre forenklinger, forbedringer og presiseringer i reglene om sykepenger, omsorgspenger og pleiepenger i kraft. Blant annet utvides retten til omsorgspenger for foreldre til barn med langvarig sykdom.

Forlengelse av midlertidig forskrift om unntak fra folketrygdloven og arbeidsmiljøloven i forbindelse med covid-19-pandemien

Regjeringen har vedtatt å forlenge koronatiltaket som gir adgang til å utstede legeerklæring uten personlig oppmøte dersom legen vurderer det som faglig forsvarlig. Selv om covid 19-pandemien er inne i en annen fase, er det fortsatt smitte i samfunnet. Forlengelsen gjelder til og med 30. juni 2023.

Regelverket for tilleggsstønader

Justering av satsene for tilleggsstønader etter folketrygdloven til dekning av utgifter til å komme i eller beholde arbeid, stønader til dekning av reiseutgifter og mobilitetsfremmende stønader etter arbeidsmarkedsloven

Unntak for erstatningsoppgjør ved behovsprøving av barnetillegg til uføretrygd

Når et barn blir forsørget av flere som mottar uføretrygd eller alderspensjon, ytes barnetillegget til den som har rett til høyest tillegg. Enkelte typer erstatning som utbetales til den uføretrygdede, fører ikke til reduksjon av barnetillegget. Dette unntaket utvides til å gjelde for erstatning utbetalt til den andre forelderen i tilfeller der to foreldre mottar uføretrygd eller den ene mottar uføretrygd og den andre alderspensjon. Personen må selv opplyse om og dokumentere slike inntekter.

Videre utvides unntaket fra etteroppgjør ved dødsfall.

Formålet med endringene er å sikre lik behandling uavhengig av hvem av foreldrene som mottar barnetillegget.

Mer til vanskeligstilte

Budsjettforliket sikrer en engangsutbetaling på tre tusen kroner til uføre som mottar uføretrygd etter minstesatsene. Satsene for barnetillegg til arbeidsavklaringspenger og kvalifiseringsstønad økes til 35 kroner per barn per dag. Endringene skal gjelde fra 1. februar og vil bli fastsatt i forskrifter.

Pensjonstrygden for fiskere

Med virkning fra 1. januar 2023 vil årspremien for medlemskap i Pensjonstrygden for fiskere økes med 25. pst. ut over den økningen som følger av den årlige endringen av folketrygdens grunnbeløp. Videre økes avgiften på omsetting av fisk til Pensjonstrygden for fiskere fra 0,35 pst. til 0,40 pst. Endringene gjøres for å bedre balansen mellom ordningens inntekter og utgifter, i påvente av vurderingene til en partssammensatt arbeidsgruppe som er satt ned for å utrede endringer i ordningen.

Endringer i arbeidsmiljøloven - styrking av retten til heltid

Lov om endringer i arbeidsmiljøloven (styrking av retten til heltid) trer i kraft 1. januar 2023. Det innføres en normgivende bestemmelse om at hovedregelen i arbeidslivet skal være ansettelse på heltid, og at behov for deltidsansettelse skal dokumenteres av arbeidsgiver og drøftes med tillitsvalgte. Videre styrkes deltidsansattes fortrinnsrett ved at det lovfestes at fortrinnsretten til utvidet stilling også skal gjelde fremfor ny innleie i virksomheten, samt at deltidsansatte også skal ha fortrinnsrett til "ekstravakter og lignende".

Endringer i dagpengeregelverket 2023:

Barnetillegg

Med virkning fra 1. januar 2023 gis barnetillegg til begge foreldre som forsørger barn og mottar dagpenger. Satsen økes til 35 kroner per barn per dag fra og med 1. februar 2023.

Ferietillegg

Fra og med ferieåret 2023 gjeninnføres rett til ferietillegg på 9,5 prosent for medlemmer som har mottatt dagpenger i mer enn åtte uker i opptjeningsåret. Som følge av det innføres et ferietillegg for dagpengemottakere, blir det også gjeninnført en tilsvarende rett til et ferietillegg i sykepengeordningen for dem som har mottatt sykepenger på grunnlag av dagpenger.

Som følge av at det innføres ferietillegg, avvikles ordningen med rett til ferie med dagpenger. De som har opptjent en slik rett, gis mulighet til å avvikle feriefravær med dagpenger i inntil fire uker til og med 31. januar 2023. Forskrift om overgangsregler fastsettes av departementet

Endringer i gjenopptaksregelen

Særregler om gjenopptak av dagpenger etter avbrudd i stønadsperioden på mer enn 52 uker på grunn av sykdom som skyldes svangerskap, avtjent verneplikt eller deltakelse i arbeidsmarkedstiltak, oppheves. Retten til gjenopptak ved avbrudd i dagpengeperioden på inntil 52 uker vil fortsatt gjelde og dekker de fleste tilfeller.

Ny barnevernslov trer i kraft

Dagens barnevernslov er 30 år gammel, og Stortinget vedtok forslag til ny barnevernslov våren 2021, jf. Prop. 133 L (2020–2021) og Innst. 625 L (2020–2021). Loven skal styrke det forebyggende arbeidet, medvirke til bedre barnevernsfaglig arbeid og styrke rettssikkerheten for barn og foreldre. Ny barnevernslov er også en enklere og mer brukervennlig lov. Loven presiserer krav til forsvarlig saksbehandling, og vil legge bedre til rette for lik praksis i kommunene.

orskrift om tilsyn med tjenester og tiltak til barn i barnevernsinstitusjoner m.m. (tilsynsforskriften)

Forskriften er fastsatt med hjemmel i ny barnevernslov § 17-3. Forskriften vil erstatte tilsynsforskriften etter dagens barnevernlov. Ny tilsynsforskrift viderefører i stor grad innholdet i dagens tilsynsforskrift, men er tilpasset ny barnevernslov. Forskriften inneholder også en del språklige, strukturelle og begrepsmessige endringer. Enkelte av disse endringene har direkte sammenheng med ny barnevernslov.

Som en konsekvens av at adgangen til å oppnevne tilsynsutvalg ikke er videreført i ny barnevernslov, er dagens bestemmelser om tilsynsutvalg ikke videreført i ny forskrift.
Ny forskrift inneholder også enkelte innholdsmessige endringer og presiseringer. Blant annet er det foreslått visse endringer og presiseringer av statsforvalterens tilsynsansvar, og det er presisert at statsforvalteren i årsrapporten skal gi en generell vurdering av tilstanden i barnevernsinstitusjonene.

Toll

Kvote ved innførsel av tobakksvarer som reisegods

Fra 1. januar 2023 kan personer bosatt i Norge ta med 100 sigaretter, 125 gram andre tobakksvarer (for eksempel snus eller rulletobakk) eller 100 gram andre nikotinvarer og 100 sigarettpapir, avgiftsfritt som reisegods ved ankomst fra utlandet til Norge.

Dette blir også mengden som kan selges til reisende fra tax free-utsalg på lufthavn ved ankomst til Norge.

Ny vareførselslov og tollavgiftslov

Ny vareførselslov og tollavgiftslov trer i kraft 1. januar 2023, og er basert på forslag i Prop. 237 L (2020-2021). De nye lovene erstatter dagens tollov. Vareførselsloven viderefører i stor grad de bestemmelsene i dagens tollov som gjelder innhenting av opplysninger om og kontroll med den grensekryssende vareførselen.

Betegnelsen toll, i form av avgift på varer ved innførsel, erstattes med betegnelsen tollavgift, og regelverket om tollavgift inntas i egen lov. Dagens tollforskrift oppheves, og erstattes av vareførselsforskriften og tollavgiftsforskriften, som trer i kraft 1. januar 2023.

De nye lovene fører også til at de av tollovens regler om fritak som i hovedsak har betydning for merverdiavgift ved innførsel av varer, tas inn i merverdiavgiftsloven og merverdiavgiftsforskriften. Endringene trer i kraft 1. januar 2023.

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी, भारतीय राजदूत डॉ० बी० बाला भास्कर नार्वे में। भारत और नार्वे के सम्बन्ध मजबूत हैं।
Den indiske minister Meenakshi Lekhi og indisk ambassadør Dr. B. Bala Bhaskar i Norge.
Norge og India har veldig godt samarbeid.

नॉर्वे के प्रवासी साहित्यकार सुरेशचंद्र शुक्ल के साहित्य पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार में पदस्थ डॉ. दीपक पांडेय और डॉ. नूतन पाण्डेय ने पुस्तक का सफल सम्पादन और लेखन किया।
Boka om Suresh Chandra Shukla redigert av Dr. Deepak Pandey og Dr. Nutan Pandey ble lansert i Raigar i India.

यू.पी. प्रेस क्लब में शरद आलोक के सारस्वत सम्मान में सम्मिलित बायें से डॉ. मंजू शुक्ला, शरद आलोक, राजेन्द्र कुमार तिवारी, प्रो. कृष्णाजी श्रीवास्तव, पूर्णिमा वर्मन, मुन्ना लाल शुक्ल एवं संजू मिश्र।
Redaktør av Speil Suresh Chandra Shukla ble æret på U. P. Press Club i India av Rajendra Kumar Tiwari.

SPEIL स्पाइल (दर्पण)

Speil støttet med midler fra Norsk Kulturråd
No. 1 2023 Stiftet 1988
अंक 1 2023 स्थापित 1988
ISSN 0802 4448

Address: **Postbox 31, Veitvet**
0518 Oslo
NORWAY

नार्वे में सरकार जिम्मेदारी से विपक्ष के साथ मिलकर कार्य करती है।

Norge inkluderer regjeringen, oppsisjonen og sine støttespillere.

उक्रेन के राष्ट्रपति से नार्वे के राजनीतिज्ञों से डिजिटल विचार विमर्श हुआ जिसमें विपक्ष के नेता और सरकार को बाहर से सहयोग देने वाली पार्टी के नेता शामिल हुए।

Ukrainas president Volodomyr Zelenskyj deltok digitalt da enigheten om Ukraina-programmet ble lansert i lagtingssalen på Stortinget. Fra venstre: Marit Arnstad (Sp), Olaug Bollestad (KrF), Guri Melby (V), Sylvi Listhaug (Frp), finansminister Trygve Slagsvold Vedum (Sp), statsminister Jonas Gahr Støre (Ap), Erna Solberg (H), Audun Lysbakken (SV), Lan Marie Nguyen Berg (MDG), Irene Ojala (Pasientfokus) og Rigmor Aasrud (Ap).

Foto: Terje Pedersen, NTB

भारतीय महिला क्रिकेट टीम-२०२३
Den indiske cricketlag. Indian Women Cricket Team Players - 2023.